A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 25 सितम्बर , 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-28 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

नज़दीकियों में दूर का
मंज़र तलाश कर
जो हाथ में नहीं है वो
पत्थर तलाश कर
सूरज के इर्द-गिर्द
भटकने से फ़ाएदा
दरिया हुआ है गुम तो
समुंदर तलाश कर
तारीख़ में महल भी है
हाकिम भी तख़्त भी
गुमनाम जो हुए हैं वो
लश्कर तलाश कर
रहता नहीं है कुछ भी
यहाँ एक सा सदा
दरवाज़ा घर का खोल के
फिर घर तलाश कर
कोशिश भी कर उमीद भी
रख रास्ता भी चुन
फिर इस के बाद थोड़ा
मुक़द्दर तलाश कर।

- निदा फ़ाज़ली

प्रसंगवश

श्रीलंका : अनुरा दिसानायके का राष्ट्रपति बनना भारत के लिए कैसा रहेगा

अभय कुमार सिंह

इस साल फरवरी महीने में अनुरा कुमारा दिसानायके जब भारत आए थे, तो किसी ने शायद ही सोचा था कि क़रीब सात महीने बाद वो श्रीलंका के राष्ट्रपति बनेंगे। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इस मुलाक़ात पर ख़ुशी जताते हुए अपने एक्स पोस्ट में लिखा था कि दोनों के बीच द्विपक्षीय संबंधों और इसे गहरा करने पर अच्छी बातचीत हुई है। अब 22 सितंबर को आए नतीजों में वामपंथी नेता अनुरा कुमारा दिसानायके ने श्रीलंका के राष्ट्रपति चुनाव में जीत दर्ज की है। वो जनता विमुक्ति पेरामुना (जेवीपी) के नेता हैं और नेशनल पीपल्स पावर (एनपीपी) गठबंधन से चुनाव लड़ रहे थे।

साल 2019 में हुए राष्ट्रपति चुनाव में दिसानायके को महज़ 3 प्रतिशत वोट मिले थे। इस बार के चुनाव में पहले राउंड में दिसानायके को 42.31 प्रतिशत और उनके प्रतिद्वंद्वी रहे सजीथ प्रेमदासा को 32.76 प्रतिशत वोट मिले। जीत के ऐलान के कुछ ही घंटों बाद रविवार रात को श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त संतोष झा ने अनुरा कुमारा दिसानायके से मुलाक़ात की और उन्हें जीत की बधाई दी। प्रधानमंत्री मोदी ने भी एक्स पोस्ट में दिसानायके को जीत की बधाई दी और कहा, 'भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी और विजन में श्रीलंका का ख़ास स्थान है।'

पीएम मोदी की बधाई के जवाब में अनुरा ने लिखा, 'प्रधानमंत्री मोदी आपके समर्थन और सहयोग के लिए बहुत धन्यवाद। दोनों देशों में सहयोग को और मज़बूत करने के लिए हम आपकी प्रतिबद्धता के साथ हैं। हमारा साथ दोनों देशों के नागरिकों और इस पूरे इलाक़े के हित में है।' साल 2022 में जब श्रीलंका भयंकर आर्थिक संकट से जूझ रहा था, उस वक्त दिसानायके तत्कालीन राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे के मुखर विरोधी माने जाते थे।

उन्होंने ख़ुद को भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ लड़ने वाले नेता के तौर पर पेश किया था। इससे छात्र, कर्मचारी वर्ग समेत एक बड़ा तबका उनके साथ आता गया। अब राष्ट्रपति चुने जाने के बाद अनुरा कुमारा दिसानायके के सामने आर्थिक संकट, भ्रष्टाचार और जातीय तनाव जैसी घरेलू चुनौतियां तो हैं ही, साथ ही ये भी देखना होगा कि वो श्रीलंका की विदेश नीति को किस दिशा में आगे ले जाते हैं और भारत के साथ संबंध कैसे होते हैं।

भारत में सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी को दक्षिणपंथी विचारधारा का माना जाता है जबकि अनुरा कुमारा दिसानायके वामपंथी विचारधारा से हैं। अक्सर वामपंथी सरकारों को वैचारिक रूप से चीन के क़रीब माना जाता है। ऐसे में क्या भारत के लिए दिसानायके चुनौती बनेंगे? प्रोफ़ेसर हर्ष वी पंत नई दिल्ली स्थित ऑब्ज़र्वर रिसर्च फ़ाउंडेशन के अध्ययन और विदेश नीति विभाग के उपाध्यक्ष हैं। उनका मानना है कि भले ही दिसानायके और जेवीपी का रुख़ पहले थोड़ा 'भारत विरोधी' रहा हो लेकिन हाल के सालों में बदलाव दिखा है।

उनकी पार्टी जेवीपी (जनता विमुक्ति पेरामुना) परंपरागत रूप से भारत विरोधी रही है। श्रीलंका में भारत के प्रभाव को कम करने का उनका एक बड़ा एजेंडा रहा है। लेकिन मुझे लगता है कि पिछले कुछ सालों में दिसानायके के बयान थोड़ा संतुलित और सोच के साथ रहे हैं। उन्होंने सुशासन, संतुलन और गुट-निरपेक्ष विदेश नीति पर ज़ोर दिया है। मुझे लगता है कि उनकी सरकार का ध्यान भी इसी पर रहेगा। प्रोफ़ेसर पंत का कहना है कि साल 2022 में जिस तरह से राजपक्षे की सरकार गई और विक्रमसिंघे आए, उस दौरान भारत ने जिस तरह श्रीलंका की मदद की थी, उसे ध्यान में रखकर श्रीलंका की नई सरकार को काम करना होगा।

चेन्नई के लोयोला कॉलेज के प्रोफ़ेसर ग्लैडसन ज़ेवियर भी इस बात को मानते हैं कि भारत की तरफ़ से की गई आर्थिक मदद को नए राष्ट्रपति ध्यान में रखेंगे। बीबीसी तमिल सेवा के संवाददाता मुरलीधरन काशी विश्वनाथन से बातचीत में वो कहते हैं, 'जहाँ तक अनुरा का सवाल है, वो कुछ भारतीय परियोजनाओं की आलोचना करते हैं। लेकिन उन्होंने चीन की कभी आलोचना नहीं की। श्रीलंका अब भी आर्थिक संकट में है। देश को भारत से वित्तीय सहायत की ज़रूरत पड़ती रहेगी। मुझे नहीं लगता कि वो भारत को बाहर करके देश को कठिन हालात में ले जाएंगे।'

जाफना यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर डॉ. अहिलन कदिरगामर मानते हैं कि जेवीपी फिलहाल किसी भी देश के बहुत क़रीब या दूर नहीं होगी। भारत और चीन दोनों ही एक लंबे समय से श्रीलंका के साथ अपने कूटनीतिक और व्यापारिक संबंधों को तरजीह देते आए हैं।

पिछले कई सालों से आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका को दोनों ही देशों ने सहायता भी पहुँचाई है।

इसकी बड़ी एक वजह है, श्रीलंका की भौगोलिक स्थिति। श्रीलंका के साथ बेहतर संबंध व्यापार के अलावा समुद्री सीमा में सामरिक दृष्टिकोण से भी बेहद अहम है। अब इस लिहाज़ से श्रीलंका में आई नई सरकार का भारत और चीन के बीच संतुलन कैसा होगा? इस सवाल के जवाब में प्रोफ़ेसर पंत कहते हैं, 'जो राजपक्षे की सरकार थी, वो चीन की तरफ़ बहुत झुकी थी और उसका नतीजा श्रीलंका को भुगतना पड़ा। जब आर्थिक संकट आया, तब चीन कहीं नज़र नहीं आया समर्थन के लिए जबकि भारत ने समर्थन दिया। तो मुझे लगता है कि ये एक तरह से बेंचमार्क भी बन गया है। संतुलन तो सभी करेंगे, ये भी करेंगे लेकिन क्या ये एक तरफ़ ज़्यादा झुकाव बनाएंगे? ये तो उनकी आने वाली नीतियों से ही पता चलेगा। अगर आपको भारत को अपनी विकास यात्रा में शामिल करना है, तो ये ध्यान में रखकर आगे बढ़ना पड़ेगा।' प्रोफ़ेसर पंत कहते हैं कि जब दिसानायके इसी साल फ़रवरी महीने में भारत आए थे तो उन्होंने क्षेत्रीय सुरक्षा को लेकर बातें की थीं और कहा था कि भारत की संवेदनशीलता का ध्यान रखना चाहिए। भारत और चीन के बीच संतुलन का एक ऐसा ही उदाहरण प्रोफ़ेसर पंत मालदीव को भी बताते हैं। पहले मालदीव के साथ भारत के संबंध कुछ ख़ास अच्छे नहीं लग रहे थे लेकिन बाद में भाषा बिल्कुल बदल गई। हालांकि, जिस तरह से दिसानायके ने चुनाव से पहले अदाणी ग्रुप की तरफ़ से संचालित एक एनर्जी प्रोजेक्ट का विरोध किया था, विश्लेषक इसे भी पार्टी के भारत विरोधी रुख़ के तौर पर आंकते हैं।

'श्रीलंका की बहुत महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति है। वहाँ चीन काफ़ी समय से नज़र गड़ाए खड़ा है। वहाँ के जो इंफ्रास्ट्रक्चर और पोर्ट्स हैं, उनमें श्रीलंका का कितना हिस्सा है और चीन का कितना हिस्सा है, ये सारे मुद्दे हैं जिन पर भारत नज़र रखेगा और देखेगा कि यह नई सरकार किस तरह से इन बातों में संतुलन बैठाती है।'

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

भारत के हस्तक्षेप से रुकेगा रूस और यूक्रेन का युद्ध!

मोदी-जेलेंस्की के बीच 45 मिनट तक हुई बात, विशेषज्ञ निकाल रहे मायने

यूक्रेन के अनुरोध पर जेलेंस्की से मिले पीएम मोदी, तीन महीने में तीसरी मुलाकात

नई दिल्ली (एजेंसी)। तीन महीने से भी कम समय में तीसरी बार यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की और पीएम मोदी की मुलाकात हुई। अमेरिका की यात्रा से लौटते वक्त आखिरी वक्त में सोमवार न्यूयॉर्क में पीएम मोदी और जेलेंस्की के बीच मीटिंग हुई। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने बताया कि मोदी और जेलेंस्की के बीच करीब 45 मिनट तक बातचीत हुई। मोदी ने जेलेंस्की से कहा कि उन्होंने इस मुद्दे पर दुनिया के कई नेताओं से बात की है और सभी इस बात पर सहमत हैं कि युद्ध को समाप्त करने का कोई रास्ता निकालना होगा। उन्होंने कहा इसके लिए हमारे प्रयास भी जारी हैं। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने बताया कि यूक्रेन की ओर से बैठक का अनुरोध किया गया था और उसी के अनुसार ही मीटिंग हुई। मोदी ने पिछले महीने कीव में यूक्रेन के नेता से मुलाकात की थी।

सरकार बदलते ही आंख दिखाने की कोशिश कर रहा बांग्लादेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बयान पर सख्त आपत्ति जताई है। बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने सोमवार रात बयान जारी कर कहा कि अमित शाह ने बांग्लादेश के

नागरिकों को लेकर जो दुर्भाग्यपूर्ण बयान दिया है उसका हम विरोध करते हैं। बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने ढाका में भारतीय उच्चायुक्त को बुलाकर इसी मामले में विरोध पत्र भी दिया। बांग्लादेश ने इसे अत्यंत निंदनीय बताते हुए भारत से बयान देने से रोकने का आग्रह किया है।

तिरुपति के बाद अब सिद्धिविनायक मंदिर के प्रसाद पर विवाद

मुंबई (एजेंसी)। तिरुमला के बाद अब मुंबई के सिद्धिविनायक मंदिर के प्रसाद पर सवाल उठ रहे हैं। एक वीडियो वायरल होने के बाद दावा किया गया है कि मंदिर के प्रसाद में चूहे के बच्चे मिले हैं। वीडियो में प्रसाद रखने वाला कैरेट दिखाई दे रहा है, जिसे कुतरा गया है। कैरेट के एक कोने में चूहे के बच्चे दिखाई दे रहे हैं। वीडियो सामने आने के बाद मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष सदा सर्वणकर ने प्रसाद की शुद्धता को लेकर जवाब दिया है। ट्रस्ट ने कहा कि वीडियो में दिखाई जगह मंदिर का हिस्सा ही नहीं। हमारी इमेज खराब करने की कोशिश है। मंदिर ट्रस्ट प्रेस कॉन्फ्रेंस में वायरल वीडियो पर जवाब दिया और कहा कि वीडियो सिद्धिविनायक मंदिर का नहीं है। मंदिर ट्रस्ट बोला- गंदगी की संभावना ही नहीं सरवणकर ने कहा, ऐसी अस्वच्छ स्थितियों की कोई संभावना नहीं है।

रेस्टोरेंट और ढाबों पर अब लिखना होगा मालिक का नाम

- यूपी में गंदगी और मिलावट करने वालों पर कठोर कार्रवाई के निर्देश

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने राज्य में रेस्टोरेंट और ढाबों पर मालिकों के नाम लिखने के निर्देश दिए हैं। खबर ये भी है कि सभी रेस्टोरेंट, ढाबों और होटलों पर सीसीटीवी लगाने के आदेश भी दिए गए हैं। इसके अलावा खाने-पीने की चीजों में गंदगी और मिलावट करने वालों पर कठोर कार्रवाई के निर्देश भी दिए गए हैं।

विभिन्न मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, यूपी की योगी सरकार ने खाने-पीने की चीजों में गंदगी और मिलावट की खबरों के बाद मंगलवार सुबह एक हाई लेवट मीटिंग में यह फैसले लिए। योगी सरकार ने सभी होटलों, ढाबों और रेस्टोरेंट के वेरिफिकेशन के आदेश दिए हैं। आपको बता दें कि बीते दिनों दिल्ली से सटे गाजियाबाद के लोनी इलाके से एक जूस दुकानदार द्वारा ग्राहकों को जूस में मानव मूत्र पिलाने की खबरें आई थीं।

वोटिंग से पहले हरियाणा की राजनीति में नई सुगबुगाहट!

रणजीत चौटाला बोले-भूपिंदर हुड्डा मेरे परम मित्र, हम क्लास फेलो रहे हैं

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में मतदान की तारीख में अब दो हफ्ते से भी कम का समय रह गया है। राज्य में तमाम दल और प्रत्याशी साम, दाम, दंड, भेद के जरिए चुनाव जीतना चाहते हैं। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले बीजेपी से नाता तोड़ने वाले रणजीत सिंह चौटाला द्वारा अब एक बड़ा बयान दिया गया है। उन्होंने मंगलवार को मीडिया से बातचीत में कहा कि वो चुनाव परिणाम बाद भूपिंदर सिंह हुड्डा से हाथ मिला सकते हैं। न्यूज एजेंसी से बातचीत में भूपिंदर सिंह हुड्डा ने कहा, मैं लोगों से पूछूंगा, ये जहां कहेंगे, वहां जाएंगे। हुड्डा मेरे परम मित्र हैं, हम क्लास फेलो रहे हैं। ये पार्टियां तो कल आई हैं। मैं और हुड्डा साहब 60 साल से दोस्त हैं। हम चंडीगढ़ पढ़ते थे। हमारे परिवारों को बहुत पुराना प्यार है। हुड्डा साहब के फादर और मेरे पिताजी और ताऊजी ने लाहौर और मुलतान की जेलें इकट्ठा काटी हैं। ब्रिटेश टाइम से भी हमारे संबंध हैं। वो एक अलग विषय है, राजनैतिक निर्णय मैं इन लोगों (समर्थकों) से पूछकर लूंगा। इसकी बात भी मैं इनसे पूछकर करूंगा। हो सकता है उनके साथ भी चला जाऊं, मुझे जो लोग कहेंगे वो करूंगा। हरियाणा कांग्रेस में सीएम पद को लेकर रार मची हुई है।

हरियाणा चुनाव के बीच मोदी सरकार का बड़ा दांव

किसानों को दिल्ली बुलाकर की एमएसपी समेत 4 मुद्दों पर बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार जोरों पर है। इस बीच केंद्र सरकार ने एक बार फिर से किसानों से एमएसपी समेत कई लंबित मुद्दों पर बातचीत शुरू कर दी है। मंगलवार को कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसानों के कई संगठनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की।

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि हम तब तक किसानों के साथ संवाद करेंगे, जब तक मसलों का समाधान नहीं हो जाता। चौहान ने कहा कि यह तो शुरुआत है। हम सभी मुद्दों पर बैठकर बात करेंगे और हर मसले का समाधान निकालने का प्रयास होगा। किसानों से मुलाकात के बाद शिवराज सिंह चौहान ने कहा, हमें एमएसपी को मजबूत करने के सुझाव मिले हैं। हम उन पर विचार करेंगे। कृषि मंत्री ने इस मौके पर वादा किया कि हम किसानों के साथ हर मंगलवार को मीटिंग करेंगे और पूरे देश के किसानों से बातचीत की जाएगी।

चौहान ने कहा कि यह पहले राउंड की वार्ता थी और

किसानों ने इस दौरान इंश्योरेंस स्कीम से लेकर एमएसपी तक के मुद्दे को उठाया। हमने उनसे विचार करने की बात कही है और आगे भी चर्चा जारी रखने पर सहमति बनी है। मंत्री ने कहा कि हमने किसानों से बातचीत में कहा कि आप लोगों की सेवा करने हमारे लिए भगवान की पूजा करने जैसा ही है। शिवराज सिंह चौहान ने ऐसे समय में किसानों से वार्ता की है, जब बड़ी संख्या में वे शंभू बॉर्डर पर जमे हैं। करीब 200 दिनों से किसान पंजाब और हरियाणा के बॉर्डर पर डटे हैं और दिल्ली जाने देने की मांग कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में सरकार का वार्ता का प्रयास उन्हें साधने की कोशिश है।

5 अक्टूबर को दमोह जिले के संग्रामपुर में होगी मंत्रि-परिषद की बैठक

शस्त्र पूजन के साथ मनाया जाएगा दशहरा पर्व : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- मुख्यमंत्री करेंगे महेश्वर में शस्त्र पूजन
- विधायकों को मिलेगा नया आशियाना, विधानसभा अध्यक्ष-नेता प्रतिपक्ष अब इनकम टैक्स खुद भरेंगे
- रीवा, नर्मदापुरम और शहडोल में भी होगी क्षेत्रीय इंडस्ट्री कॉन्क्लेव
- मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में वंदे-मातरम् गान के साथ आरंभ हुई मंत्रि-परिषद की बैठक

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि इस वर्ष दशहरा पर्व, शस्त्र पूजन के साथ मनाया जाएगा। सभी मंत्री अपने प्रभार के जिलों के पुलिस शस्त्रागार में शस्त्र पूजन करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्वयं स्त्री शक्ति और सामर्थ्य को नमन के प्रतीक स्वरूप लोकमाता अहिल्या देवी की राजधानी महेश्वर में दशहरे पर शस्त्र पूजन करेंगें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आगामी 5 अक्टूबर की मंत्रि-परिषद की बैठक दमोह जिले के संग्रामपुर में होगी। यह रानी दुर्गावती के प्रति राज्य सरकार के सम्मान का प्रकृटीकरण है बैठक का आयोजन। उल्लेखनीय है कि संग्रामपुर रानी दुर्गावती की राजधानी रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रि-परिषद की बैठक से पहले अपने संबोधन में यह बात कही। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में वंदे-मातरम् के गान के साथ मंत्रालय में बैठक आरंभ हुई।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को लंदन की टी-4 एजुकेशन संस्था द्वारा रतलाम के विनोबा सीएम राइज़ स्कूल को विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्कूल पुरस्कार-2024 के नवाचार श्रेणी में शीर्ष तीन फाइनलिस्ट में शामिल होने संबंधी प्रमाण पत्र सौंपा गया। मंत्रालय में मंत्रि-परिषद की बैठक से पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव को सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री चैतन्य काश्यप ने यह प्रमाण पत्र सौंपा।

परम्परागत उद्योगों को किया जाएगा प्रोत्साहित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि अगली रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव 27 सितंबर को सागर में होगी। इसी क्रम में रीवा, नर्मदापुरम और शहडोल में भी दिसंबर 2024 तक क्षेत्रीय इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि कोलकाता में हुए रोड शो और उद्योगपतियों व निवेशकों से चर्चा के सत्र का उत्साहवर्धक प्रतिसाद मिला है। कोलकाता के रोड शो और परिचर्चा सत्र में 700 से अधिक उद्योगपतियों और निवेशकों ने सहभागिता की तथा मध्यप्रदेश में निवेश करने में रुचि दिखाई। कोलकाता के सत्र में हुई चर्चा के परिणामस्वरूप प्रदेश में लगभग 20 हजार करोड़ रूपए का निवेश संभावित है, जिससे लगभग 10 हजार से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा। देश के 16 प्रमुख उद्योग समूह प्रदेश में इकाईयां लगाने के इच्छुक हैं। इस क्रम में बिरला समूह द्वारा बड़नगर (उज्जैन) में सीमेंट इकाई लगायी जाएगी। प्रदेश के परम्परागत उद्योगों को भी प्रोत्साहित करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 25 सितम्बर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पेरिस पैरालिंपिक के 3 विजेताओं को मिलेंगे एक-एक करोड़ रुपए: सीएम यादव

सीएम यादव से ओलंपियन कपिल बोले- विवेक सागर की तरह हमें भी डीएसपी बनाएं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में प्रदेश भाजपा कार्यालय में पेरिस पैरालिंपिक विजेता एमपी के तीनों खिलाड़ियों प्राची यादव, कपिल परमार और पूजा ओझा का सीएम डॉ. मोहन यादव, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने सम्मान किया। इस मौके पर बीजेपी के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह, विधायक भगवानदास सबनानी मौजूद थे। सीएम ने पैरालिंपिक विजेता खिलाड़ियों को एक-एक करोड़ रुपए देने की घोषणा की।

सम्मान समारोह में सीएम ने तीनों पेरिस ओलिंपिक विजेताओं को सरकार की ओर से एक-एक करोड़ रुपए देने की घोषणा की। सीएम से ओलंपियन कपिल परमार ने सीएम से कहा कि सरकार ने विवेक सागर को डीएसपी बनाया था। ये सुनकर सीएम ने कहा अभी हाल कर देते हैं। आप तीनों को भी पुरस्कार देंगे। आपने सर्विस की बात कही है। इनाम की धनराशि के लिए मुझे जरूर पूछना पड़ेगा। ये सुनकर कपिल ने कहा- सबके लिए बराबर होना चाहिए क्योंकि जब मोदी जी भेदभाव नहीं कर रहे तो यहां भी नहीं होना चाहिए। इसके बाद फिर सीएम ने कहा- मैं आप तीनों को भी एक-एक करोड़ देने की घोषणा करता हूं।

सीएम बोले- हमारे बच्चों ने झंडे गाड़ दिए-सीएम ने कहा- दुनिया के सबसे गणतंत्र के नायक की कार्य शैली हम दो दिनों से देख रहे थे। उनकी भावना है वन अर्थ वन फैमिली इसलिए पृथ्वी के इस कुल में हमारे बच्चों ने देश के झंडे गाड दिए। आपने न केवल प्रदेश, देश का नाम बढ़ाया। खिलाड़ियों को आगे बढ़ाना हम सबके लिए गर्व की बात है। सदस्यता अभियान में मप्र ने 83 लाख सदस्य बनाकर रिकॉर्ड बनाया है। कल दीनदयाल जी की जयंती पर सदस्यता का महाअभियान चलाया जाएगा। मैं भी बूथ पर जाउंगा।

इस बार दशहरे पर अखाड़े होंगे सम्मानित-खिलाड़ियों से सीएम ने कहा- आपके लिए एक अलग से कार्यक्रम करेंगे। खेल विभाग के माध्यम से आपकी प्रतिभा को सबके सामने लाने का काम करेंगे। आज ही हमने निर्णय किया है। ये अहिल्या माता का 300वां जन्म वर्ष चल रहा है, 500वीं जयंती रानी दुर्गावती की है। हमारा अपना इतिहास इतना गौरवशाली है।

इजरायली हमलों से जलते लेबनान को मिला चीन का साथ

- ड्रैगन ने दिया मदद का भरोसा, कहा-हम अरब भाइयों के साथ

बीजिंग (एजेंसी)। पेजर और वॉकी टॉकी में विस्फोट से हिजबुल्लाह के ठिकानों को थर्रा देने वाले इजरायल ने अब लेबनान में सीधी जंग छेड़ दी है। इजरायल ने एक ही दिन में लेबनान पर 1500 से ज्यादा हमले किए है।

इन हमलों में अब तक लगभग 500 लोगों की मौत हो चुकी है। इसके बाद अब क्षेत्र में तनाव चरम पर है। जहां अमेरिका ने ऐलान कर दिया है कि वह मिडिल ईस्ट में अपने और सैनिकों की तैनाती करेगा वहीं अब चीन ने भी इस पर टिप्पणी की है। चीन ने लेबनान को हरसंभव मदद का भरोसा दिया है। चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने सोमवार को लेबनान के विदेश मंत्री अब्दुल्ला बौ हबीब से कहा है कि चीन लेबनान की संप्रभुता की रक्षा और देश की सुरक्षा में उसका दृढ़ता से समर्थन करता है।

आज बीजेपी हर बूथ पर बनाएगी 100 सदस्य

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने कहा है कि कल बुधवार 25 सितंबर को पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर पार्टी के संगठन पर्व का पहला चरण पूर्ण हो रहा है। भारतीय जनता पार्टी 25 सितंबर को मध्यप्रदेश में अधिकतम सदस्यता दिवस में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह, सह प्रभारी श्री सतीश उपाध्याय, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा सहित पार्टी पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि अलग-अलग बूथों पर पहुंचकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय को श्रद्धासुमन अर्पित करने के साथ सदस्यता अभियान की शुरूआत करेंगे। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ता हर बूथ पर कम से कम 100 नए सदस्य बनाकर पं. दीनदयाल उपाध्याय को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सदस्यता अभियान में रिकॉर्ड बनाएंगे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने पत्रकारों से चर्चा में कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों पर चलते हुए भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनी है और जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी कर रहे हैं। शर्मा ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर हर बूथ पर कम से कम 100 सदस्य बनाकर इतिहास रचने का कार्य करेंगे। भाजपा कार्यकर्ता प्रदेश के सभी 64871 बूथों पर पहुंचकर हर बूथ पर 100 नए लोगों को पार्टी का सदस्य बनाकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भोपाल जिले की नरेला विधानसभा के महामाई मंडल के बूथ क्रमांक- 138 व 134 पर, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा हुजूर विधानसभा के गांधी नगर मंडल के बूथ क्रमांक-53 में लोगों को पार्टी की सदस्यता दिलाएंगे। पार्टी के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह भोपाल उत्तर विधानसभा के गुरूनानक मंडल के बूथ क्रमांक-46 पर, प्रदेश सह प्रभारी सतीश उपाध्याय भोपाल दक्षिण-पश्चिम विधानसभा के पंचशील मंडल के बूथ क्रमांक-196 पर सदस्यता दिलाएंगे।

यूपी के कुशीनगर में जाली नोटों की तस्करी का पर्दाफाश

- सपा नेता समेत 10 लोग गिरफ्तार, 4 लोग अभी भी फरार

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में जाली नोटों का कारोबार करने वाले एक अंतरराष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश किया गया है। इस गिरोह के 10 लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इसमें समाजवादी पार्टी की लोहिया वाहिनी का राष्ट्रीय सचिव रफी खान उर्फ बबलू गैंग भी गिरफ्तार किया है। इसे पूरे गैंग का मास्टरमाइंड बताया जा रहा है। इनके पास से 5.62 लाख रुपये के जाली नोट, अवैध तमंचे और कारतूस भी बरामद हुए हैं। रफी खान का नेपाल-यूपी-बिहार व सीमावर्ती इलाकों में जाली नोट कारोबार का नेटवर्क था। पुलिस ने इस गिरोह के 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान शेख जमालुद्दीन, नियाजउद्दीन उर्फ मुन्ना, रेहान खान उर्फ सद्दाम, औरंगजेब, मोहम्मद रफी, नौशाद खान, परवेज इलाही उर्फ कौसर अफरीदी, मोहम्मद रफीक उर्फ बबलू खान, हाशिम खान और सिराज हशमती के रूप में की गई है। इस मामले में 4 आरोपी अभी फरार चल रहे हैं। इनकी पहचान बिहार के सिवान की है।

एडीजी इंटेलिजेंस जयदीप प्रसाद डीजी लोकायुक्त बने

स्पेशल डीजी आलोक रंजन की जगह योगेश चौधरी पदस्थ, डीजीपी की बेटी सोनाक्षी सक्सेना भोपाल पदस्थ

भोपाल (नप्र)। राज्य शासन ने एडीजी इंटेलिजेंस जयदीप प्रसाद को लोकायुक्त संगठन में प्रभारी पुलिस महानिदेशक बनाया है। वहीं एडीजी इंटेलिजेंस जयदीप प्रसाद के स्थान पर अभी किसी को इस पद पर पदस्थ नहीं

किया गया है। आदेश में लोकायुक्त डीजी योगेश चौधरी की सेवाएं सामान्य प्रशासन विभाग से वापस लेकर उन्हें एडीजी प्रबंध पीएचक्यू पदस्थ किया गया है जो आलोक रंजन के डीजी एनसीआरबी पद पर पदस्थ किए जाने के बाद से खाली था। रंजन स्पेशल डीजी प्रबंध थे। इसी आदेश में डीजीपी सुधीर सक्सेना की बेटी और 2020 बैच की आईपीएस सोनाक्षी सक्सेना को भोपाल पदस्थ किया गया है।

अफसर	वर्तमान पदस्थापना	नवीन पदस्थापना
जयदीप प्रसाद	एडीजी, गुप्त वार्ता	प्रभारी डीजी लोकायुक्त
योगेश चौधरी	एडीजी लोकायुक्त	एडीजी प्रबंध पीएचक्यू
श्रद्धा तिवारी	डीसीपी जोन 2 नगरीय पुलिस भोपाल	डीसीपी, नगरीय निकाय, भोपाल
संजय कुमार अग्रवाल	डीसीपी सुरक्षा नगरीय पुलिस भोपाल	डीसीपी, जोन 2 भोपाल
सोनाक्षी सक्सेना	एएसपी, जबलपुर	डीसीपी सुरक्षा नगरीय पुलिस भोपाल
शियाज केएम	एएसपी, ग्वालियर	सेनानी, हॉकफोर्स, बालाघाट
मयूर खंडेलवाल	एसीपी हबीबगंज नगरीय पुलिस भोपाल	एडिशनल डीसीपी, भोपाल
आनंद कलादगी	एसडीओपी, बैरसिया	एएसपी, जबलपुर
कृष्ण लालचंदानी	एसीपी, विजयनगर, इंदौर	एएसपी, ग्वालियर
ओमप्रकाश	सहायक पुलिस अधीक्षक रीवा	एसडीओपी, रीवा
सर्वप्रिय सिन्हा	सहायक पुलिस अधीक्षक भोपाल	एसडीओपी, बैरसिया, भोपाल
राहुल देशमुख	सहायक पुलिस अधीक्षक उज्जैन	एसडीओपी, उज्जैन
आदित्य पटले	सहायक पुलिस अधीक्षक जबलपुर	सहायक पुलिस आयुक्त विजयनगर इंदौर
करनदीप	सहायक पुलिस अधीक्षक इंदौर	सहायक पुलिस आयुक्त इंदौर
अनु बेनीवाल	सहायक पुलिस अधीक्षक ग्वालियर	एसडीओपी, मनावर, धार

हिंदुओं पर बांग्लादेश में 'अत्याचार'! देश में बवाल

- कानपुर टेस्ट मैच का कड़ा विरोध, 20 लोगों पर एफआईआर ● कानपुर में टेस्ट और ग्वालियर में होना है टी-20 का मुकाबला

कानपुर (एजेंसी)। बांग्लादेश क्रिकेट टीम के भारत दौरे का देश के अलग-अलग हिस्सों में जमकर विरोध हो रहा है। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे 'अत्याचार' के खिलाफ कानपुर और ग्वालियर में प्रदर्शन किए गए। 27 सितंबर से कानपुर का ग्रीन पार्क पहले टेस्ट की मेजबानी करेगा जबकि ग्वालियर में छह अक्टूबर को टी-20 मैच होना है। कानपुर में पुलिस आज अखिल भारतीय हिंदू महासभा के 20 सदस्यों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है, जो ग्रीन पार्क स्टेडियम के गेट नंबर 10 बी के सामने ट्रैफिक रोककर सड़क पर हवन कर रहे थे। पुलिस के अनुसार, वीआईपी गेस्ट के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। कानपुर के अपर पुलिस आयुक्त (कानून व्यवस्था) हरीश चंदर ने बताया कि वरिष्ठ अधिकारियों सहित पर्याप्त पुलिस बल की मांग की गई है। उन्होंने कहा, हम सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा कर रहे हैं और हमें पूरा भरोसा है कि हमें पर्याप्त पुलिस बल मिल जाएगा। ग्रीन पार्क स्टेडियम और होटल लैंड मार्क को सेक्टर, जोन और सब-जोन में विभाजित किया गया है और इसका नियंत्रण क्रमशः डीसीपी, एडीसीपी और एसीपी स्तर के अधिकारियों को दिया गया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कड़ी नजर रखने का फैसला किया गया है। साथ ही चेतावनी दी गई है कि शांति भंग करने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति से सख्ती से निपटा जाएगा। हिंदू महासभा ने भारत-बांग्लादेश क्रिकेट मैच का विरोध करने के लिए छह अक्टूबर को मध्यप्रदेश के ग्वालियर में बंद का आह्वान किया है। संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयवीर भारद्वाज ने कहा बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार अभी भी जारी है और ऐसे में बांग्लादेश के साथ क्रिकेट खेलना सही नहीं है।

तिरुपति के लड्डुओं पर कायम है भक्तों का भरोसा

चर्बी विवाद के बाद भी पहले जैसे ही चल रही सेल

हैदराबाद (एजेंसी)। इन दिनों तिरुपति लड्डुओं की मिलावट पर विवाद जारी है। खास तरीके से तैयार किए जाने वाले इन लड्डुओं में चर्बी की शिकायत पाई गई है। इसके बावजूद लड्डुओं की बिक्री में कमी नहीं आई है। आंध्र प्रदेश के श्री वेंकटेश्वर मंदिर में 60 हजार श्रद्धालु हर रोज पहुंचते हैं। मंदिर प्रशासन के मुताबिक पिछले चार दिनों में 14 लाख तिरुपति लड्डू बेचे गए हैं। इसमें 19 सितंबर को 3.59 लाख, 20 सितंबर को 3.17 लाख, 21 सितंबर को 3.67 लाख और 22 सितंबर को 3.60 लाख लड्डू बेचे गए हैं। बिक्री के आंकड़ों का औसत प्रतिदिन 3.50 लड्डओं का है। तिरुपति लड्डुओं पर विवाद और इसके बावजूद बिक्री पर असर न पड़ने को लेकर श्रद्धालुओं ने भी अपनी राय रखी है। वेंकटेश्वर राव नाम के एक भक्त ने कहा कि हमारी श्रद्धा को इतनी आसानी से नहीं हिलाया जा सकता। यहां पर मौजूद कुछ अन्य भक्तों ने कहा कि तिरुपति लड्डू को लेकर विवाद अब इतिहास की बात हो चुकी है। गौरतलब

है कि इस मंदिर में हर रोज 3 लाख लड्डू बनाए जाते हैं। यहां पहुंचने वाले श्रद्धालु इन्हें जमकर खरीद भी रहे हैं। कई बार यह लोग इसे लेकर अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को देने के लिए भी ले जाते हैं। अगर तिरुपति लड्डुओं की इन्ग्रेडिएंट्स की बात करें तो इसमें चना, गाय का घी, चीनी, काजू, किशमिश और बादाम डाला जाता है।

हर रोज करीब 15000 किलो घी लड्डुओं को तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। गौरतलब आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने आरोप लगाया था कि पूर्ववर्ती वाईएसआरसीपी शासन के दौरान तिरुपति के लड्डू तैयार करने के लिए इस्तेमाल किए गए घी में जानवरों की चर्बी थी। राज्य सरकार ने मामले की जांच के लिए विशेष जांच दल का गठन किया है।

जम्मू-कश्मीर में सेकेंड फेज की 26 सीटों पर आज वोटिंग

- उमर अब्दुल्ला 2 सीटों से चुनाव लड़ रहे, पहले फेज में 61 फीसदी मतदान हुआ था

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में कल बुधवार को 6 जिलों की 26 विधानसभा सीटों पर वोटिंग होगी। इसमें 25.78 लाख मतदाता वोट डाल सकेंगे। सेकेंड फेज की 26 सीटों में से 15 सीटें सेंट्रल कश्मीर और 11 सीटें जम्मू की हैं। चुनाव आयोग के मुताबिक, दूसरे फेज में 239 कैंडीडेट्स मैदान में हैं। इनमें 233 पुरुष और 6 महिलाएं हैं। दूसरे फेज में 131 कैंडीडेट्स करोड़पति और 49 पर क्रिमिनल केस दर्ज हैं। जम्मू-कश्मीर भाजपा अध्यक्ष रविंदर रैना ने अपनी संपत्ति केवल 1,000 रुपए घोषित की है। पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला गांदरबल और बीरवाह से चुनाव लड़ रहे हैं। उमर लोकसभा चुनाव में बारामूला सीट तिहाड़ जेल से चुनाव लड़े इंजीनियर राशिद से हार गए थे। इस बार भी गांदरबल सीट पर उनके खिलाफ जेल में बंद सरजन अहमद वागे उर्फ आजादी चाचा मैदान में हैं। 18 सितंबर को पहले फेज में 7 जिलों की 24 विधानसभा सीटों के लिए वोटिंग हुई। इस दौरान 61.38 फीसदी मतदान हुआ। किश्तवाड़ में सबसे ज्यादा 80.20 फीसदी और पुलवामा में सबसे कम 46.99 फीसदी वोटिंग हुई। श्रीनगर की सबसे ज्यादा 8 सीटों पर वोटिंग, पीडीपी ने सभी सीटों पर कैंडीडेट्स उतारे दूसरे फेज में सबसे ज्यादा 8 श्रीनगर में और सबसे कम 2 सीटें गांदरबल जिले की हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद के निर्णय

सोयाबीन के उपार्जन के लिए 4892 रूपये प्रति क्विंटल न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी की स्वीकृति

***सिंहस्थ-2028 के आयोजन के लिए 'कान्ह डायवर्शन क्लोज डक्ट परियोजना' के लिये 919 करोड़ 94 लाख रूपये की पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति**

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा अनुबंधित एजेंसी से सिंहस्थ-2028 के आयोजन के लिए समय-सीमा में कार्य पूर्ण करने की महती आवश्यकता के दृष्टिगत प्रो-रेटा आधार पर कान्ह डायवर्शन क्लोज डक्ट परियोजना लागत राशि 919 करोड़ 94लाख रूपये की पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई।

उल्लेखनीय है कि उज्जैन जिले की कान्ह डायवर्शन क्लोज डक्ट परियोजना की प्रशासकीय स्वीकृति रुपये 598 करोड़ 66 लाख की प्रदान की गई थी।

समर्थन मूल्य पर सोयाबीन उपार्जन की स्वीकृति

मंत्रि-परिषद द्वारा खरीफ वर्ष 2024 (विपणन वर्ष 2024-25) में केन्द्र सरकार के प्राईस सपोर्ट स्कीम अंतर्गत सोयाबीन का पंजीकृत कृषकों से उपार्जन, राज्य उपार्जन एजेंसी म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित द्वारा किए जाने का निर्णय लिया गया।

जमीन आवंटन घोटाले में चलेगा मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर केस

- हाईकोर्ट से लगा तगड़ा झटका, गवर्नर ने दी थी मंजूरी

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री एम. सिद्धारमैया पर जमीन घोटाले के मामले में केस चलेगा। गवर्नर ने इसके लिए मंजूरी दी थी, जिसके खिलाफ सिद्धारमैया ने हाई कोर्ट में अर्जी दाखिल की थी। उच्च न्यायालय ने सिद्धारमैया की अर्जी को खारिज कर दिया है और गवर्नर की ओर से दी गई मंजूरी को सही करार दिया है। मैसुरु अर्बन डिवेलपमेंट अथॉरिटी के प्लॉटों के आवंटन में घोटाले का आरोप है, जिसमें सिद्धारमैया के खिलाफ केस चलाने की परमिशन राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने दी थी। इसके खिलाफ सिद्धारमैया हाई कोर्ट गए थे। उनकी अर्जी पर सुनवाई करते हुए जस्टिस एम. नागप्रसन्ना ने कहा कि राज्यपाल थावरचंद गहलोत की ओर से केस

चलाने की मंजूरी नियमों के तहत दी गई। इस मामले में ऐक्टिविस्ट टीजे अब्राहम, एस. कृष्णा और प्रदीप कुमार एसपी ने शिकायत दर्ज कराई थी। जस्टिस नागप्रसन्ना ने कहा कि आमतौर पर राज्यपाल मंत्री परिषद की सिफारिश पर ही कोई निर्णय लेते हैं, लेकिन संविधान उन्हें विशेष परिस्थितियों में स्वतंत्र निर्णय लेने की भी परमीशन देता है। अदालत ने कहा कि इस मामले में शिकायत पर फैसला लेना जरूरी था। आमतौर पर राज्यपाल मंत्रि परिषद की सलाह पर निर्णय लेते हैं, लेकिन कई बार विशेष परिस्थितियों में स्वतंत्र तौर पर भी फैसला लिया जा सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मंत्रालय में लेफ्टिनेंट जनरल पी. एस. शेखावत, अति विशिष्ट सेवा मेडल, सेना मेडल, जीओसी, मध्य भारत एरिया जबलपुर ने सौजन्य मुलाकात कर स्मृति चिन्ह भेंट किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने फेडरेशन ऑफ मध्यप्रदेश चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के कार्यक्रम को संबोधित किया।

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव को एमएसएमई मंत्री चैतन्य कश्यप ने लंदन की टी4 एजुकेशन संस्था द्वारा रतलाम के विनोबा सीएम राइज़ स्कूल को विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्कूल पुरस्कार-2024 के शीर्ष तीन फाइनलिस्ट में शामिल होने संबंधी प्रमाण पत्र सौंपा।

प्रदेश के 20 नगरीय निकायों में परिवहन कम्पनियों का गठन

इलेक्ट्रिक वाहनों को दिया जा रहा है प्रोत्साहन

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में शहरी क्षेत्रों में सार्वजनिक परिवहन को प्रोत्साहित करने और सुविधाजनक बनाने के लिये 20 नगरीय निकायों में परिवहन कंपनियों का गठन किया गया है। इन नगरीय निकायों में नगरीय विकास एवं आवास विभाग की विभिन्न योजनाओं जैसे जेएनएनयूआरएम, एफएएमई-1 और अमृत 1.0 के अंतर्गत 1505 बसों का संचालन किया जा रहा है। इनमें 1196 शहरी और 309 अंतर्शहरी बसों का संचालन किया जा रहा है।

प्रदेश के 3 शहरों भोपाल, इंदौर और जबलपुर में इलेक्ट्रिक वाहनों के संचालन को बढ़ावा दिये जाने के लिये 217 ई-चार्जिंग अधोसंरचना विकास का कार्य किया जा रहा है। पीएम ई-बस के लिये विभाग द्वारा निविदा जारी की जा चुकी है। इसके लिये प्राकलन तैयार किया जा रहा है। प्रदेश के 15 शहरों में अमृत योजना के अंतर्गत बस सेवा संचालन द्वारा बसों में यात्रियों की सुविधा के लिये आईटीएमएस उपकरण, इनमें जीपीएस, कैमरा, यात्री सूचना तंत्र एवं महिलाओं की सुरक्षा के लिये पैनिक बटन की सुविधा दी गई है। बसों के सुव्यवस्थित संचालन के लिये कंट्रोल कमांड सेंटर द्वारा सभी बसों की निगरानी सुनिश्चित की जा रही है। प्रदेश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिये इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी का प्रारूप तैयार कर लिया गया है। इसके लिये ईव्ही-तरंग नाम से पोर्टल भी विकसित किया गया है।

रबी सीजन के पूर्व बहुती नहर और नई गढ़ी-1 एवं 2 माइक्रो इरिगेशन परियोजना का कार्य पूर्ण करें : उप मुख्यमंत्री

विंध्य क्षेत्र संबंधी जल संसाधन विभाग की सिंचाई परियोजनाओं की समीक्षा की

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने निर्देश दिए हैं कि आगामी रबी सीजन में सिंचाई व्यवस्था के लिए विंध्य क्षेत्र में जल संसाधन विभाग की सिंचाई परियोजना को पूर्ण करने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य करें। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक और तकनीकी समस्याओं का त्वरित समाधान किया जाये। परियोजना का कार्य समय से पूर्ण हो,

इसके लिए आवश्यक प्रयास किए जायें ताकि किसान भाइयों को असुविधा न हो। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय में रीवा की बहुती नहर परियोजना और नई गढ़ी-1 एवं 2 माइक्रो इरिगेशन परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि इन परियोजनाओं के पूरा हो जाने से किसानों को व्यापक लाभ मिलेगा। बहुती नहर के निर्माण से 65 हजार हेक्टेयर क्षेत्र और नई गढ़ी-1 एवं 2 के कार्य पूर्ण होने पर 50 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में किसानों के खेतों तक पानी पहुंच सकेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बहुती नहर परियोजना में हो रहे विलंब पर असंतोष व्यक्त किया और कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बहुती कैनाल में एक्वा डक्ट निर्माण कार्य प्राथमिकता से पूर्ण किया जाये। साथ ही वितरक कैनाल और सप्लाई कैनाल के उन क्षेत्रों में, जहां सीपेज की समस्या है, तकनीकी निदान कर चैनल निर्माण कार्य समय से पूरा किया जाए। बैठक में मुख्य अभियंता बोधी श्री अनिल सिंह, मुख्य अभियंता रीवा श्री ए.के. देहरिया सहित विभागीय वरिष्ठ अधिकारी और निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

राज्य शासन ने ग्रीष्मकालीन मूंग, उड़द के उत्पादन में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये मंत्रि-परिषद समिति का किया गठन

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में ग्रीष्मकालीन मूंग, उड़द के उत्पादन में अत्याधिक रासायनिक कीटनाशक, उर्वरकों के उपयोग को हतोत्साहित करने एवं जैविक (प्राकृतिक) खेती को बढ़ावा देने के लिये जागरूकता लाने के उद्देश्य से मंत्रि-परिषद समिति का गठन किया गया है। मंत्रि-परिषद समिति में लोक निर्माण विभाग मंत्री श्री राकेश सिंह, परिवहन एवं स्कूल शिक्षा विभाग मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ,किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना और लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग राज्य मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल सदस्य रहेंगे। इसके अतिरिक्त, अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग को इस समिति का सचिव नियुक्त किया गया है।

60 साल की वृद्धा के साथ दुष्कर्म

भोपाल (नप्र)। कोलार इलाके में एक बुजुर्ग महिला के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है। इस मामले में पुलिस ने अज्ञात युवक के खिलाफ केस दर्ज किया है। महिला मजदूरी करती है, आरोपी महिला को डरा-धमका कर निर्माणाधीन मकान में लेकर गया था। घटना के बाद महिला अपने परिजनों के साथ थाने पहुंची तथा शिकायत की। पुलिस ने दुष्कर्म का प्रकरण दर्ज करने के बाद आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। घटना 23 सितंबर दोपहर करीब 2 बजे की है। जब महिला इलाके में मजदूरी का काम कर रही थी।

'झुग्गी वाले अपने मकान किराए पर दे देते हैं'

भोपाल को झुग्गीमुक्त करने के मुद्दे पर बोलीं महापौर; कहा-इसका प्लान बना रहे

भोपाल (नप्र)। जिन्हें मकान मिल गए हैं, वे अपने वहां शिफ्ट हो जाएंगे तो आधे से ज्यादा झुग्गियां तो वैसे ही मुक्त हो जाएंगी। देखने में आता है कि झुग्गी वाले लोगों को मकान तो मिल जाते हैं, लेकिन वे किराए पर दे देते हैं। फिर अन्य जगह पर झुग्गी पर रहने लगते हैं।

मंगलवार को भोपाल के स्मार्ट सिटी ऑफिस में महापौर हेल्पलाइन की समीक्षा करने पहुंची महापौर मालती राय ने यह बात कहीं। झुग्गी के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का सपना है कि भोपाल में सर्वे कराकर जिस जगह पर झुग्गी बनी है, उस जगह पर पक्के निर्माण करके लोगों को मकानों में शिफ्ट करें। मुख्यमंत्री चाहते हैं कि भोपाल की जनता पक्के मकानों में रहे। बैठक में बातचीत हुई है। इसका प्लान बना रहे हैं। इसके बाद जल्द ही अमल में लाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को झुग्गियों के संबंध में जनप्रतिनिधि और अफसरों से चर्चा की थी।

सीएम ने मीटिंग की थी, झुग्गियों को हटाने का प्लान बनाने को कहा- बता दें कि भोपाल को झुग्गी मुक्त करने के लिए अब फिर प्रयास शुरू हुए हैं। सीएम डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को झुग्गियों को हटाने के लिए विस्तृत प्लान बनाने को कहा था। उन्होंने कहा, पहले भवन तैयार करें। फिर झुग्गियों को खाली कराएं। ताकि, लोगों को परेशानी न हो। सीएम डॉ. यादव ने कहा, भोपाल को झुग्गी मुक्त करने के लिए समाधान निकालने के हर संभव प्रयास किए जाएं। उन्होंने कलेक्टर से झुग्गी मुक्त करने की तैयारियों की जानकारी भी ली थी।

कई प्राइम लोकेशन पर झुग्गियां- भोपाल में चाहे राजभवन से सटे इलाके में 17 एकड़ में फैली रोशनपुरा बस्ती हो या बाणगंगा, भीमनगर, विश्वकर्मा नगर जैसी टॉप 8 झुग्गी बस्तियां। ये सभी शहर के बीच प्राइम लोकेशंस पर करीब 300 एकड़ में फैली हैं। इनके अलावा राहुल नगर, दुर्गा नगर, बाबा नगर, अर्जुन नगर, पंचशील, नया बसेरा, संजय नगर, गंगा नगर, बापू नगर, शबरी नगर, ओम नगर, दामखेड़ा, उड़िया बस्ती, नई बस्ती, मीरा नगर जैसी कुल 388 बस्तियां शहर में हैं। इन सबकी जमीन का हिसाब लगाएं तो यह करीब 1800 एकड़ के आसपास बैठती है। इनमें से ज्यादातर पॉश इलाकों में ही हैं।

महापौर हेल्पलाइन में सबसे ज्यादा स्ट्रीट डॉग्स की शिकायतें

स्मार्ट सिटी के ऑफिस में महापौर हेल्पलाइन की समीक्षा भी की गई। इसमें डेढ़ हजार से ज्यादा शिकायतें स्ट्रीट डॉग्स को लेकर थी। सीवेज, अतिक्रमण, बिल्डिंग परमिशन, गोवर्धन परियोजना आदि को लेकर भी ढेरों शिकायतें पेंडिंग हैं।

लोगों को भी कॉल किया

महापौर ने अफसरों के साथ शिकायत करने वाले लोगों को भी कॉल किया। कई लोगों से पूछा कि उनकी समस्या का निराकरण हुआ या नहीं। इसके बाद उन्होंने संबंधित शाखा के अधिकारी से भी बात की।

इन नंबर पर कर सकते हैं शिकायत

स्ट्रीट लाइट, स्ट्रीट डॉग्स, सीवेज, सफाई समेत निगम से जुड़ी अन्य समस्याएं हैं तो आप भी निगम को कॉल करके शिकायत दर्ज करा सकते हैं। इसके लिए महापौर हेल्पलाइन नंबर-155304 पर कॉल करना होगा।

6 लाख के बदले 28 एकड़ जमीन नीलाम कर रहा बैंक

भोपाल में जनसुनवाई में पहुंचा मामला; पीड़ित बोला-मेरे साथ षड्यंत्र, जांच हो

भोपाल (नप्र)। मैंने वर्ष 2008 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) से 9.86 लाख रुपए का कर्ज लिया था। इसके 3 लाख रुपए चुका भी दिए। इसी बीच मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया और 6 लाख रुपए नहीं चुका पाया। अब बैंक ने इतना ओवरड्यू निकाल दिया कि 6 लाख रुपए के बदले 28 एकड़ जमीन नीलाम कर रहा है। इसकी बाजारू कीमत 6 करोड़ रुपए है। मुझे न्याय मिलना चाहिए।

भोपाल के बैरसिया स्थित ग्राम गरेठिया दांगी के नर्वदाप्रसाद पिता मोहर सिंह ने मंगलवार को कलेक्टोरेट पहुंचकर कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह को कुछ इस तरह से अपनी पीड़ा सुनाई। नर्वदाप्रसाद ने कहा- इस मामले में मुख्यमंत्री, कलेक्टर को भी कई बार शिकायत कर चुके हैं, पर अब तक कुछ नहीं हुआ। बैंक के अफसरों ने भूमाफियाओं के साथ षड्यंत्र रचा है। 3 महीने पहले जमीन नीलाम करने की प्रक्रिया शुरू की गई है। इसे तुरंत रुकवाया जाए। मैं बचे रुपए और पैनॉल्टी चुकाने के लिए तैयार हूं।

वर्ष 2012 से 2018 तक बीमार रहा- नर्वदाप्रसाद ने बताया, वर्ष 2012 से 2018 तक मेरा हार्ट ऑपरेशन और ब्रेन ऑपरेशन होने के कारण वह लोन की राशि नहीं चुका पाया। बाद में यह मामला

जबलपुर कोर्ट में भेज दिया गया। नीलामी की जानकारी मुझसे छुपाई गई। 11 जुलाई को मेरी जमीन की नीलामी की जानकारी की आर्डर कॉपी जब मिली तो पता चला। गरेठिया दांगी के नर्वदाप्रसाद पिता मोहर सिंह ने मंगलवार को कलेक्टोरेट पहुंचकर कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह को अपनी पीड़ा सुनाई।

गौरव नगर के लोग बोले-कॉलोनी में ढेरों समस्याएं, दूर की जाए- जनसुनवाई में कोलार स्थित गौरव नगर के लोगों ने कॉलोनी में ढेरों समस्याएं होने की बात कहीं। आम आदमी पार्टी के पदाधिकारियों के साथ रहवासी कलेक्टोरेट पहुंचे थे। जिलाध्यक्ष रीना सक्सेना ने बताया, कोलार के वार्ड नंबर 81 के रहवासियों की समस्या लेकर यहां आए हैं। रहवासी बहुत ज्यादा परेशान हैं। सोसाइटी अध्यक्ष गौतम श्रीने कई बार जनसुनवाई में आवेदन दे चुके हैं। उनकी मांग रही है कि हमें कम्युनिटी हॉल हमें दिया जाए। सीवेज की समस्या दूर हो। अपराधिक किस्म के किरायेदारों को बाहर किया जाए। पानी की समस्या भी दूर होनी चाहिए। कोलार रोड स्थित गौरव नगर के लोगों ने अपनी समस्याएं अफसरों को बताई।

कर्मचारी पर पैसे लेने का आरोप, कई लोगों ने आवेदन दिए- कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने मंगलवार को जनसुनवाई की। कुल 114 लोगों ने अपनी समस्याओं के आवेदन दिए। जनसुनवाई के दौरान एक व्यक्ति ने कलेक्टोरेट के ही एक कर्मचारी पर रुपए लेने के आरोप लगाए। हालांकि, बाद में तस्वीर साफ हुई कि उक्त व्यक्ति के इलाज के लिए रेडक्रास के माध्यम से हजारों रुपए व्यक्ति को पहले दिए जा चुके हैं।

भोपाल में मासूम से रेप के आरोपी के कपड़े जब्त

जिस कमरे में गंदा काम किया, उसमें कैमरे नहीं; एसआईटी ने स्कूल की लापरवाही मानी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के प्राइवेट स्कूल में 3 साल की मासूम से ज्यादती के आरोपी कासिम रेहान को जेल भेज दिया गया है। उसे शनिवार को पुलिस ने प्रोडक्शन वारंट पर रिमांड पर लिया था। रिमांड खत्म होने के बाद सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से उसकी पेशी कराई गई।

इससे पहले पुलिस ने आरोपी के घर पहुंचकर उसके बेडरूम की तलाशी ली। जिया कॉलोनी के मकान नंबर 86 में फर्स्ट फ्लोर पर बने कमरे से पुलिस ने कपड़े सहित अन्य सामान जब्त किया है। पुलिस टीम रविवार सुबह 9.30 बजे उसके घर पहुंची थी। शुक्रवार को आरोपी के परिजन के बयान दर्ज किए गए थे।

रिमांड के दौरान आरोपी कासिम रेहान ने नया खुलासा किया है। उसने बताया- 16 सितंबर को एफआईआर दर्ज होने से 9 दिन पहले बच्ची के साथ गलत काम किया था। वारदात को बच्ची के

क्लास रूम के नजदीक एक कमरे में अंजाम दिया। यह कमरा वाशरूम के नजदीक है। अक्सर खाली रहता है और इसमें सीसीटीवी कैमरे भी नहीं हैं।

शिकायत के दिन परिजन ने बताया था कि दो दिन पहले बच्ची स्कूल से घर पहुंची तो उसके प्राइवेट पार्ट पर चोट के निशान थे। फिलहाल, एसआईटी आरोपी के बयानों को वेरिफाई कर रही है। उससे अन्य बच्चियों से पूर्व में छेड़छाड़ किए जाने के संबंध में भी पूछताछ की गई है। एसआईटी को आरोपी के खिलाफ सीसीटीवी फुटेज में अहम सबूत भी मिले हैं। स्कूल में कम्प्यूटर से जुड़ी टेक्निकल समस्याओं को हल करने के लिए कासिम को हायर किया गया था।

आरोपी की बहन ने कोर्ट में दिया आवेदन- कासिम रेहान की बड़ी बहन ने सोमवार को कोर्ट में आवेदन लगाया है। इसमें कहा है कि कासिम की बेगुनाही साबित करने के लिए सीसीटीवी कैमरों के फुटेज ही एकमात्र रास्ता हैं। पुलिस ने स्कूल के सीसीटीवी कैमरों के डीवीआर को जब्त किया है। फुटेज से छेड़छाड़ या उनको डिलीट किए जाने की पूरी गुंजाइश है। कोर्ट को हस्तक्षेप कर इन डीवीआर में मौजूद 1 सितंबर से 16 सितंबर तक के फुटेज सुरक्षित किए जाने चाहिए।

स्कूल प्रबंधन ने न तो वेरिफिकेशन किया, न डॉक्यूमेंट चेक किए

जांच कमेटी में शामिल टीटी नगर एसडीएम डॉ. अर्चना शर्मा रावत ने सोमवार को स्कूल में मिली अनियमितताओं से जुड़ी रिपोर्ट बनाकर कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह को सौंप दी है। रिपोर्ट के मुताबिक, स्कूल प्रबंधन ने आरोपी टीचर का न तो वेरिफिकेशन किया और न ही डॉक्यूमेंट चेक किए थे। एसडीएम ने बताया कि जांच में लापरवाही पाई गई है। स्कूल मैनेजमेंट अलर्ट रहता तो शायद घटना नहीं होती। जांच के दौरान स्टाफ, पेरेंट्स और बच्चों से बात की गई थी। स्कूल की मान्यता रद्द करने का फैसला कमेटी लेगी।

गुड़हल से पथरी का ट्रीटमेंट, सदा सुहागन से शुगर कंट्रोल

इंसुलिन का पौधा कैंसर-बीपी में फायदेमंद; भोपाल में 104 वैद्य बता रहे जड़ी-बूटी के फायदे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय में 16 राज्यों के 104 वैद्य जड़ी-बूटी से मरीजों का इलाज करने आए हैं। वैद्य जी, इस जड़ी के खाने से शुगर ठीक हो जाएगी क्या...पेट में छाले हैं, देसी इलाज से ठीक हो सकते हैं...ये सवाल भोपाल के इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय में जनजातीय वैद्य शिविर और कार्यशाला में पूछे जा रहे हैं।

शिविर में देश के 16 राज्यों के 104 वैद्य जड़ी-बूटी से मरीजों का इलाज करने आए हैं। 21 सितंबर से शुरू हुआ शिविर 25 सितंबर तक

चलेगा। यहां अब तक 1800 से ज्यादा लोग जांच और इलाज करा चुके हैं।

वैद्यों का दावा है कि इंसुलिन पौधे की जड़ी से कैंसर-ब्लड प्रेशर का ट्रीटमेंट होता है। गुड़हल का फूल पथरी को खत्म करता है तो सदा सुहागन (सदाबहार) पौधे का फूल शुगर कंट्रोल करता है

इंसुलिन की जड़ी से अपेंडिक्स, कैंसर, बीपी का इलाज- जनजातीय वैद्य शिविर में यानुंग जमोह अरुणाचल प्रदेश से आई हैं। वे हिमालय पर्वतमाला की तलहटी में पाई जाने वाली जड़ी बूटियों से इलाज करती हैं। खासकर अपेंडिक्स, कैंसर, बीपी और शुगर जैसी बीमारियों का इलाज इंसुलिन नाम की जड़ी से करती हैं। इसके लिए उन्हें पद्मश्री भी मिल चुका है। यानुंग का दावा है, इंसुलिन पौधे के तने को दिन में तीन बार गन्ने की तरह खाने से शुगर, बीपी और पेट से जुड़ी बीमारियां ठीक हो जाती हैं।

गुड़हल के फूल की चाय ब्लड प्यूरिफाई करती है

भोपाल में रहने वाले वैद्य बीएस रजोरा कहते हैं, गुड़हल औषधीय महत्व का पौधा है। इसके फूल की चाय बनाकर पीने से पथरी में आराम मिलता है। ब्लड भी प्यूरीफाई होता है। महिलाएं अगर इस चाय को पीती हैं तो उन्हें मेंस्ट्रुअल पीरियड में होने वाले दर्द से राहत मिलती है। गुड़हल के फूल को चबाकर खाने से व्यक्ति के शरीर में ताकत का इजाफा होता है। बाजार में गुड़हल के फूल का पाउडर हिबिस्कस पाउडर के नाम से मिलता है। वैद्य रजोरा ने बताया, ऐसे मरीज, जिन्हें हाई ब्लड शुगर की शिकायत है, वे सदा सुहागन पौधे के फूल को चबाकर खाएं। अलग से इंसुलिन नहीं लेना पड़ेगी। लिवर जब इंसुलिन बनाना बंद कर देता है, तब डॉक्टर्स पेशेंट को इंसुलिन लेने की सलाह देते हैं। शुगर का कोई परमानेंट ट्रीटमेंट, पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में भी नहीं है। इसे केवल जड़ी-बूटियों से नियंत्रित किया जा सकता है। वैद्य बीएस रजोरा के मुताबिक, सदा सुहागन पौधे के फूल को चबाकर खाने से ब्लड प्रेशर कंट्रोल होता है।

संपादकीय

भारत अब चेस का भी चैम्पियन

जो शतरंज का खेल भारत ने दुनिया को दिया, उसी की वैश्विक स्पर्धा में भारत द्वारा पहली बार स्वर्ण पदक जीतना किसी ओलिंपिक में गोल्ड मेडल में जीतने से कम तो क्या, कुछ ज्यादा ही है। दुनिया में चेस ओलिंपियाड के 97 साल के इतिहास में पहली बार भारतीय युवा शतरंज खिलाड़ियों ने ओपन और विमेंस कैटेगरी में ऐतिहासिक गोल्ड मेडल पर कब्जा कर लिया। दोनों श्रेणियों में स्वर्ण पदक जीतने का यह पहला अवसर है। भारत चेस ओलिंपियाड का नया चैम्पियन बन गया है। 45वें चेस ओलिंपियाड में भारत को इंडिविजुअल कैटेगरी में भी 4 गोल्ड मिले, मेंस और विमेंस दोनों कैटेगरी में 2-2 प्लेयर्स ने पहला स्थान हासिल किया। दोनों श्रेणियों में 5 5 खिलाड़ियों ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। 11 राउंड के बाद ओपन टीम ने 22 में से 21 पॉइंट्स हासिल किए। वहीं विमेंस टीम ने 19 पॉइंट्स के साथ गोल्ड पर कब्जा किया। चेस ओलिंपियाड में गोल्ड जीतने के बाद चेस टीम ने भारतीय कप्तान रोहित शर्मा स्टाइल में ट्रॉफी उठाकर सेलिब्रेशन किया। गौरतलब है कि ओलिंपियाड के 11वें राउंड की ओपन कैटेगरी में भारत ने स्लोवेनिया को 3.5-0.5 से हराया। वहीं, विमेंस टीम ने अजरबैजान को 3.5-0.5 के अंतर से ही आखिरी राउंड हराया। दरअसल ओपन कैटेगरी में भारत ने 10वें राउंड के बाद ही भारत ने अपना अव्वल स्थान सुनिश्चित कर लिया था, लेकिन महिला टीम का गोल्ड 11वें राउंड के बाद कन्फर्म हुआ। क्योंकि दूसरे नंबर पर मौजूद कजाकिस्तान की टीम ने अमेरिका के खिलाफ 2-2 से ड्रॉ खेला था। इस कारण भारत 19 पॉइंट्स के साथ पहले और कजाकिस्तान 18 पॉइंट्स के साथ दूसरे नंबर पर रहा। गौरतलब है कि चेस ओलिंपियाड का आयोजन 10 सितंबर से हंगरी के बुडापेस्ट शहर में हुआ था। ओलिंपियाड के विमेंस इवेंट में 10वें राउंड के बाद भारत और कजाकिस्तान 17-17 पॉइंट्स के साथ पहले नंबर पर थे। 11वें राउंड में भारत ने अजरबैजान को 3.5-0.5 से हरा दिया। टीम से हरिका द्रोणावल्ली, दिव्या देशमुख और वंतिका अग्रवाल ने अपने-अपने मैच जीते। वैशाली रमेशबाबू ने ड्रॉ खेलकर भारत को 3.5 पॉइंट्स तक पहुंचाया। कजाकिस्तान और अमेरिका के बीच मैच के नतीजे से विमेंस इवेंट में गोल्ड का फैसला होना था। दोनों के बीच मुकाबला 2-2 से ड्रॉ हो गया। इस कारण कजाकिस्तान 18 पॉइंट्स पर अटक गया, वहीं भारत ने 19 पॉइंट्स के साथ पहला स्थान हासिल कर स्वर्ण पदक पर कब्जा किया। विमेंस कैटेगरी में भारत ने लगातार 7 राउंड जीते, फिर 8वें राउंड में पोलैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। 9वें राउंड में टीम ने अमेरिका के खिलाफ ड्रॉ खेला। 10वें राउंड में टीम ने चीन और 11वें राउंड में अजरबैजान को हराकर 19 पॉइंट्स के साथ गोल्ड कन्फर्म किया। भारत की यह देश की युवा प्रतिभाओं की जीत है, जो इस बात का खुला ऐलान है कि भारत अब हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवाने के लिए तैयार है। भारतीय चेस टीम की जीत के शिल्पकार सभी खिलाड़ी रहे हैं और यह टीम पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है। ये युवा खिलाड़ी अब भारत के नए स्पोर्ट्स स्टार हैं। अमूमन भारत में क्रिकेट के हो हल्ले के बीच चेस में भारत की यह जीत बहुत आश्वस्त करने और उम्मीदें जगाने वाली है। देश के पूर्व चेस खिलाड़ी प्रवीण ठिप्से ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि चेस ओलिंपियाड में भारत की यह जीत शानदार है, लेकिन इसे कायम रखने के लिए हमे और भी अंतरराष्ट्रीय स्तर के चेस खिलाड़ी तैयार करने होंगे। भारतीय चेस खिलाड़ियों ने देश का गौरव बढ़ाया है, इसमें संदेह नहीं।

नजरिया

अनुराग बेहार

लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सीईओ एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के संस्थापक वाइस चांसलर हैं।

अंग्रेजी अखबार मिंट में प्रकाशित आलेख से अनुदित

एनजीओ के सामने अविश्वसनीय कार्य के लिए दबाव

भारत में बहुत सारे ग़ैर-सरकारी संगठन (NGOs) हैं। उनका काम का विस्तार जमीनी स्तर पर लोगों को प्रेरित करने से लेकर शोध और नीति निर्माण तक के व्यापक दायरे में है। एनजीओ की प्रचलित परिभाषा के मुताबिक देश भर में इनकी अनुमानित संख्या पचास हजार से एक लाख के बीच होगी। इनमें से कुछ बहुत खराब है और कुछ बहुत अच्छे हैं। अच्छे होने की बात करें तो इनमें से अधिकांशतः अच्छाई के मध्यम स्तर पर हैं, बाकी कम और ज्यादा के स्तर पर हैं। यहाँ अच्छा होने का अर्थ है कि वे नेक इरादों वाले हैं, अपने काम के प्रति समर्पित हैं और परिश्रमी हैं, अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता रखते हैं और ईमानदार हैं। अविश्वसनीय और सतही (फेक-फ्लेक) का फ्रेमवर्क एनजीओ की अच्छाई का आकलन करने के लिए उपयोगी है। संक्षेप में कहें तो फेक और फ्लेक X और Y अक्ष के समान हैं जिनके आधार पर संस्थाओं का मापन करते हुए उनका मानसिक आकलन किया जा सकता है। इन आयामों के दूसरे छोर को प्रामाणिक और कठोर या सख्त का नाम दिया जा सकता है।

एनजीओ को वित्तीय संसाधन दानदाताओं द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं। इनमें परोपकारी संस्थाएँ, कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी को लेकर काम करने वाले संगठन, अत्यधिक संपन्न व्यक्ति, बहुपक्षीय संस्थान और सरकारी संस्थान शामिल हैं। इनके अलावा बहुत से मध्यम वर्ग के व्यक्ति होते हैं, जो इन एनजीओ को आर्थिक सहायता देते हैं पर यहाँ हम उन्हें दानदाताओं की श्रेणी में नहीं रखेंगे और क्यों इसका कारण आगे स्पष्ट हो जाएगा।

चूंकि एनजीओ वित्तीय संसाधनों के लिए दानदाताओं पर निर्भर रहते हैं इसलिए दानदाता उन पर पूरा प्रभाव बनाए रखते हैं। पिछले 20 सालों में इन दानदाताओं ने एनजीओ के काम से जुड़े अच्छे शब्द को बुरे की तरफ धकेलना शुरू कर दिया है।

उनके काम करने के तरीकों ने इन एनजीओ को अधिक बेईमान और अविश्वसनीय बना डाला है, साथ ही अधिक गूढ़ और सतही भी। इस बदलाव के बावजूद बहुत अच्छे और विश्वसनीय एनजीओ की एक बड़ी संख्या मौजूद है। सारे दानदाता भी बुरे नहीं हैं पर अब अब ऐसा बहुतायत में देखने में आ रहा है।

ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि दानदाताओं की कुछ ऐसी माँगें होती हैं जो एनजीओ के काम को प्रभावित करती हैं। जब बड़ी संख्या में एनजीओ की माँगें एक जैसी होती हैं तो इसका सारे एनजीओ क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

ये ज़रूरतें कैसी हैं और इनका प्रभाव इतना व्यापक क्यों है?

इसे एक उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं। आई पी एल क्रिकेट टीम के मालिक के बारे में सोचे जिसकी माँग है कि इस टीम को हर मैच में 260 रन बनाने ही होंगे, भले ही पिच, मौसम और गेंदबाजी कैसी भी हो। इस मालिक ने क्रिकेट केवल मैदान में या टीवी पर देखा है, खुद ने स्कूल के बाद मैदान में क्रिकेट खेला नहीं है। 260 रन का लक्ष्य लेना अच्छी

बात है पर पिच और विरोधी टीम की रणनीति को समझे बिना ऐसा लक्ष्य तय करना व्यर्थ की बात है, पागलपन है। यह उदाहरण बात को स्पष्ट करने में उपयोगी तो है पर स्थिति का बेहद सामान्यीकरण करने जैसा भी है क्योंकि सामाजिक मुद्दे क्रिकेट के खेल से अधिक जटिल और गहरे होते हैं। सबसे पहले तो हरेक के संदर्भ बहुत विविधता लिए हुए हैं, पथ निर्भरताएँ अधिक हैं, प्रतिक्रियाएँ अप्रत्याशित हैं, अनियंत्रित कारक बहुत अधिक हैं, संघर्ष व्यापक हैं और कारकों के बीच अंतःक्रियाएं अत्यंत जटिल हैं।

अब उन विशेष आवश्यकताओं के बारे में बात करते हैं जो आपस में जुड़ी हुई हैं और सभी एनजीओ की कार्यप्रणाली को प्रभावित करती हैं।

पहली आवश्यकता है स्केल या विस्तार यानी अधिक संख्या तक पहुँचना- क्षेत्रफल के नजरिए से भी और लाभार्थी लोगों की संख्या के नजरिए से भी और ऐसा इस बात की अनभिज्ञता के चलते होता है कि सामाजिक-मानवीय हस्तक्षेप या कार्य उद्योगों के समान एकदम बढ़त नहीं पा सकते। इसके लिए व्यक्ति दर व्यक्ति, संदर्भ दर संदर्भ काम करना पड़ता है। विस्तार की इस माँग के चलते एनजीओ को या तो सतही काम करना पड़ता है या अपने काम के आंकड़ों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना पड़ता है।

दूसरी आवश्यकता स्थायी बदलावों की होती है। यह सतही काम करने को उद्यत करने वाला एक और तरीका है जिसके चलते एनजीओ केवल ऊपरी तौर पर काम करते हैं, मुद्दों की गहराई में नहीं जाते। यदि आप जटिल सामाजिक मुद्दों पर काम कर रहे हैं तो स्थाई बदलाव देख पाना कठिन है। यह सही है कि मुश्किल मुद्दों पर काम करने और उनमें प्रगति अंकित करने के भी संकेतक होते हैं पर उन्हें समझने और प्राप्त करने के लिए अत्यधिक प्रयास की आवश्यकता होती है। सामान्य मुद्दों पर टिके रहना यानी एनजीओ के लिए आसान काम और दानदाताओं के लिए त्वरित आत्म संतुष्टि यानी दोनों के बीच एक आरामदायक संतुलन...

तीसरी आवश्यकता इस नकली और झूठ वाले अक्ष की ओर बहाव को और बढ़ा देती है और वह है काम में गति की माँग। मानवीय और सामाजिक परिवर्तन में समय लगता है। त्वरित परिवर्तन की मांग करना, और वह भी ऐसे परिवर्तन जो निश्चित और स्पष्ट दिखाई देते हों, एनजीओ को अस्थिरता और नकलीपन की तीव्र ढलान पर ले जाता है। गति की आवश्यकता का एक स्पष्ट उदाहरण यह है कि कई सारे प्रकल्प छोटी अवधि यानी आमतौर पर 2-3 साल और अक्सर सिर्फ़ एक साल के लिए चलाए जाते हैं और फिर बंद कर दिए जाते हैं- इतने काम समय में तो सामाजिक मुद्दों की सतह तक को छुआ नहीं जा सकता।

चौथी आवश्यकता है- परिवर्तन की स्थिरता। यह दुनिया की समझ को लेकर व्याप्त बुनियादी गलतफहमी से उत्पन्न होती है। निरंतर काम किए बिना कुछ भी कायम नहीं रह सकता। यहाँ तक कि हमारे लोकतंत्र को भी इसे बनाए रखने के लिए निरंतर काम करने की आवश्यकता होती है तो कोई भी चीज खुद को बहुत बड़ी सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-आर्थिक ताकतों के सामने कैसे कायम बनाए रख सकती है? ऐसा संभव नहीं है लेकिन बहुत से दानदाता इस भ्रम में जीते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले सभी व्यक्ति वास्तविक परिवर्तन लाकर अधिक लोगों के जीवन को जल्दी से बेहतर बनाना चाहते हैं जो ठीक है पर जब यह चाह क्रिकेट टीम के मालिक की तरह हो जाती है जो हर टी 20 मैच में 260 रन बनाने की मांग करता है, तो यह टीम के स्वाभाविक चरित्र के साथ-साथ खेल को भी नुकसान पहुंचाता है। यही एनजीओ क्षेत्र के साथ हुआ है। दानदाताओं की आवश्यकताओं ने इनके कार्य की प्रामाणिकता और जज़्बे को खत्म कर दिया है। एनजीओ शायद ही इस सबका का विरोध कर सकते हैं, क्योंकि उनका अस्तित्व ही दानदाताओं पर निर्भर करता है। यह हमारे जैसे दानदाताओं के लिए है कि वे इस बारे में सोचे और अपना तरीका बदलें।

विश्वरंग

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

श्रीलंका : अब 'जनाधिपति' हैं अनुरा दिसानायके!

55 वर्षीय अनुरा कुमारा दिसानायके अब द्वीप- राष्ट्र श्रीलंका के निर्वाचित जनाधिपति है। जनाधिपति यानि राष्ट्रपति। श्रीलंका के प्रबुद्ध मतदाताओं ने उन्हें बड़ी उम्मीदों के साथ अपना राष्ट्राध्यक्ष चुना है। यूं तो उनकी जीत की खबर रविवार, 22 सितंबर की सुबह ही मिल गयी थी, अलबत्ता संवैधानिक प्रावधान के तहत उनके निर्वाचन की औपचारिक घोषणा में चौबीस घंटे से अधिक का विलंब हुआ। ऐलान में देरी की वजह यह रही कि राष्ट्रपति पद के लिये चुने जाने के लिये जरूरी है कि उम्मीदवार को मतों के 50 प्रतिशत से एक मत अधिक मिले। श्रीलंका के संसदीय इतिहास में यह पहला मौका था कि अनुरा जीतकर भी इस शर्त को पूरा नहीं कर पाये। लिहाजा मतदाताओं की द्वितीय वरीयता की गणना शुरू हुई और उसमें अनुरा कसौटी पर खरे उतरे। उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी सजिथ प्रेमदासा को 12.7 लाख से अधिक वोटों से मात दे दी।

कोलंबो खूबसूरत शहर है और अनुरा राष्ट्रपति चुने जाने के पूर्व तक कोलंबो से निर्वाचित सांसद थे, लेकिन उनकी जीत पर न तो कोलंबो और न ही अन्यत्र ढोल-ताशे बजे, न आतिशबाजी हुई और न ही विजयोन्मत्त कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी से आकाश गुंजाया। सोमवार को कोलंबो में लाल ड्रेस पहने जनता विमुक्ति पेरामुना के समवेत विजयगीत गाते हुये कार्यकर्ताओं की अनुशासित और प्रभावशाली रैली जरूर निकली। दरअसल, स्वयं अनुरा दिसानायके ने कार्यकर्ताओं से अपील की थी कि वे आर्थिक संकट के अभूतपूर्व दौर में सड़को पर जश्न नहीं मनाएं, बल्कि घर पर ही जीत की खुशी को सेलीब्रेट करें। कार्यकर्ताओं ने अपने नेता की बात मानी। सुश्री सुभाषिणी रत्नायक कोलंबो के केलानिया विश्वविद्यालय में छात्र- परामर्शदात्री हैं। वह अन्य दो विश्वविद्यालयों में हिन्दी की अतिथि- आचार्य भी है। सुश्री रत्नायक उन लाखों युवाओं से में एक हैं, जो अनुरा दिसानायक की जीत से हर्ष विह्वल है। इन युवाओं को लगता है कि अनुरा अपनी दृढ़ता और समाजवादी नीतियों से श्रीलंका को आर्थिक- बोगदे से बाहर निकालने में कामयाब होंगे। यह बात कतई लुकीछिपी नहीं है कि अनुरा वामपंथी रुझान के राजनीतिज्ञ हैं और अन्य अधिकांश नेताओं के विपरीत अंतरराष्ट्रीय वित्तीय कोष (आईएमएफ) की शर्तों से सहमति नहीं रखते। वह आईएमएफ की शर्तों को बुरी तरह से ऋणग्रस्त और आर्थिक रूप से जर्जर श्रीलंका पर थोपा हुआ मानते हैं। वह करीब तीन अरब डॉलर के बेल-आउट पैकेज को रद्द करने की बात तो नहीं करते, लेकिन शर्तों पर बातचीत को जरूरी मानते हैं। वह श्रीलंका के 'पुनरोदय' के हिमायती हैं। वस्तुतः उन्होंने सन् 2022 में अभूतपूर्व आर्थिक संकट के विरुद्ध उपजे जनआंदोलन - अर्गालय - से ही शोहरत की सीदियां चढ़ीं, अन्यथा सन 2019 में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव में उन्हें कुल जमा तीन फीसद यानि 4,18,553 वोट मिले थे। सन् 22 में अर्गालय से अनुरा भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक बनकर उभरे। उनकी खरी-खरी लोगों को रास आई। गौरतलब है कि अनुराधापुर में थंबूटूटेगमा में 24 नवंबर, सन् 1968 को जनमे अनुरा श्रमिक पिता की संतान हैं। अपने पूरे नाम के आद्य अक्षरों के समुच्चय से बने 'एकेडी' के तौर पर लोकप्रिय अनुरा केलानिया विश्वविद्यालय से स्नातक है। वह जेवीपी से सन् 1987 में ही जुड़ गये थे। सन् 2000 में उनका सितारा चमका और तब से या तो राष्ट्रीय सूची से अथवा पहले कुरूनेगला और फिर गत दो बार कोलंबो से साँसद चुने गये। सन् 2004-05 में सुश्री चंद्रिका कुमारतुंगा के राष्ट्रपति और महेन्द्र राजपक्षे के प्रधानमंत्री रहते वह कृषि और पशुधन मंत्री रहे। सन् 2014 में वह जेवीपी और सन् 2019 में राष्ट्रीय जनशक्ति के नेता चुने गये। इस चुनाव में भ्रष्टाचार को केन्द्रीय मुद्दा बनाकर रूपक गढ़ने में वह सफल रहे और यदि सन् 19 में उनको प्राप्त मतों को देखें तो कह सकते हैं कि वह 'क्वांटम-लीप' की बदौलत जनाधिपति के सर्वोच्च और प्रतिष्ठित पद तक पहुंचे।

अनुरा कुमारा दिसानायके वामपंथी रुझान रखते हैं। उनकी शख्सियत वामविचारों में पगी है। हम उन्हें स्वाभाविक तौर पर नव-मार्क्सवादी कह सकते हैं उनकी यही चरित्रावलि उनको भावी नीति और कदमों को लेकर शंकायें और अटकलें उपजाती है। वह उस जेवीपी से जुड़े हैं, जिसने सन् 1987 में भारत-श्रीलंका समझौते और शांति सेना का विरोध किया था। श्रीलंका और हिन्द महासागरीय क्षेत्र में चीन की गहरी रूचि और हंबनटोटा बंदरगाह 99 साल की लीज पर चीन को दिये जाने से सब परिचित हैं। ऐसे में अनुरा की वामपंथी रुझान से अटकले स्वाभाविक है। मानना चाहिये कि जातीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा भारत की चार बिलियन डॉलर की मेगा मदद के मद्देनजर भारत और श्रीलंका के रिश्ते मैत्री और सौहार्दपूर्ण रहेंगे। इसी साल फरवरी में अनुरा के नेतृत्व में उच्चस्तरीय शिष्ट मंडल की विदेशमंत्री जयशंकर और रक्षा सलाहकार अजीत डोवाल से भेंट और चर्चा को विस्मृत नहीं किया जा सकता। हां, यह जरूर देखना होगा कि वह तमिलों को सत्ता में भागीदारी के लिए संविधान में किये 13 वें संशोधन पर अमल करते हैं या नहीं। गौरतलब है कि उनके मुकाबले सजिथ प्रेमदासा को तमिल-इलाकों में ज्यादा वोट मिले।

इसमें शक नहीं कि अनुरा अपने सरोकारों के चलते सामाजिक कल्याण के उपक्रमों को अनुदान में वृद्धि के साथ स्वास्थ्य, चिकित्सा, भोजन और शैक्षिक सेवाओं पर कम कराधान की नीति अपनायेंगे। बिलाशक उनके निर्वाचन से श्रीलंका में नये युग का सूत्रपात हुआ है। राजपक्षे परिवार का दो दहाई से अधिक के वर्चस्व का दौर समाप्त हुआ और बूढ़े रानिल विक्रमसिंघे पर अवलंबन का भी। तमिल नेता एमए सुमंथिरन की यह बात मायने रखती है कि यह चुनाव जातीय या धार्मिक अंधता व उन्माद की अनुपस्थिति के लिए याद किये जाएंगे। श्रीलंका में भारत के पूर्व सह उच्चायुक्त धीरेन्द्रसिंह दुनिया में दक्षिण पंथ के वर्चस्व के दौर में इसे जेवीपी का 'चमत्कार' मानते हैं। वह कहते हैं कि इसके लिए वित्तीय संकट और विक्रमसिंघे का कमजोर प्रशासन उत्तरदायी है। उनकी मान्यता है कि श्रीलंका तटस्थता की नीति पर चलेगा और भारत से मैत्री निभायेगा।

अनुरा ने दीर्घकालिक स्थायित्व के लिए क्रमिक परिवर्तनों का संकेत दिया है। अनाज, दवाओं और ईंधन की किल्लत से जूझ रहे अर्थ-जर्जर श्रीलंका जैसे छोटे टापू राष्ट्र में चुनौतियां बढ़ी है। अनुरा की जीत को नये चोले में कम्युनिज्म की वापसी के तौर पर भी देखा जा सकता है।

जो जैसे हैं वैसे हैं, हम सोचे हम कैसे हैं ?

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

आमतौर पर हमें किसी और से शिकायत होती है कि वह ऐसे हैं या वैसे हैं ! लेकिन जरूरत इस बात पर गौर करने की भी है कि हम कैसे हैं? दरअसल ऐसा होता आया है कि हम जो व्यवहार दूसरों के प्रति करते हैं, वैसा ही व्यवहार हमारे प्रति पलट कर आता है। वैसे तो कहा जाता है कि आदमी पर संगत का बहुत गहरा असर पड़ता है। यह सकारात्मक भी होता है और नकारात्मक भी हो सकता है। कभी-कभी विपरीत विचारधारा वाली शख्सियत में परस्पर ऐसे प्रगाढ़ संबंध भी दिखाई देते हैं जो अटूट होते हैं। संबंधों की निरंतरता तब ही बनी रहा करती है, जब हम दूसरों की स्थिति का वास्तविक आकलन करने में सफल होते हैं। अन्यथा कोई भी रिश्ता अधिक समय तक टिक नहीं सकता।

वैसे तो हर किसी शख्सियत का हर किसी बात को लेकर उसका अपना नजरिया होता है, जो दूसरों की विचारधारा से मेल खाएं यह कतई जरूरी नहीं होता। अब यदि किसी में अच्छाई है और किसी में बुराई है, तो एक संभावना यह होती है कि अच्छाई बुराई में परिवर्तित हो जाए तो दूसरी संभावना यह भी होती है कि बुराई अच्छाई में परिवर्तित हो जाए। लेकिन इसमें तो मत नहीं कि समाज में हर एक वर्ग का अपना एक अलग ही महत्व है। किसी भी व्यक्ति, वर्ग या समूह में सर्वगुण संपन्नता के दर्शन हो, यह कतई आवश्यक नहीं है। दरअसल हर व्यक्ति वर्ग या समूह का अपना एक पृथक दृष्टिकोण होता है। जिसके आधार पर समाज में उसकी भूमिका निकलकर आती है।

ऐसी स्थिति में संतुलित मानसिकता के साथ अच्छाइयों को ग्रहण कर बुराइयों का परित्याग करते हुए व्यक्ति विशेष का आचरण और व्यवहार समूचे परिवेश को अत्यंत सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अलग-अलग धर्म दर्शन में आत्मावलोकन की महत्ता दर्शाई गई है। जिसके आधार पर हम अपने आसपास के संसार को जीने के काबिल बना सकते हैं। अनेकता में एकता का जो प्रतिबिंब दिखाई देता है, वह अपने आप को सामने वाले की जगह बैठ कर सोचने का फलितार्थ हुआ करता है। अनेक अवसरों पर हम परिस्थितिवश कूदकर किसी निष्कर्ष पर पहुंच जाया करते हैं। लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं होती कि हमारे सोच -विचार का तरीका सही है।

जीवन में अनेक अवसर ऐसे आते हैं जब किसी के प्रति राग अथवा द्वेष की अधिकता हो जाती है। कभी-कभी हमारे पूर्वाग्रह हमारी अपनी कपोलकल्पित अवधारणा की पुष्टि कर बैठते हैं। जिसके चलते मधुर से मधुर संबंध भी गलतफहमियों का शिकार होकर टूट जाया करते हैं। यही नहीं अपितु औरों की नजर में हमारी विश्वसनीयता में भी कमी आ जाती है। दरअसल परस्पर संबंधों के निर्वहन के लिए वैचारिक तालमेल बैठाना अत्यंत आवश्यक होता है। अन्यथा कोई भी रिश्ता-नाता अधिक समय तक टिकाऊ नहीं रह पाता। अनेक अवसरों पर क्षणिक भावावेश के चलते वर्षों पुराने संबंधों में भी दरार आने लगती है। एक प्रकार से रिश्ते बनाना आसान हो सकता है लेकिन निभाना आसान नहीं होता।

इसलिए यह जरूरी है कि जिससे हमारा अपना नाता है, उसे उसके वास्तविक स्वरूप के आधार पर निभाने की कला आनी चाहिए। अब यदि हम यह सोचे कि जैसा हम सोचते हैं वैसा ही सब सोचे, तो यह कहीं से कहीं तक संभव नहीं लगता। हर एक आदमी के जीवन में अलग-अलग प्रकार की परिस्थितियां निर्मित हुआ करती है। जिसके चलते विषय विशेष के प्रति उसकी धारणा बना करती है। चूंकि ऐसी धारणा अनुभवजन्य हुआ करती है, इसके चलते आदमी अन्य कोई जोखिम लेने से कतराता है। यानी कि हर कीमत पर अपनी ही धारणा पर अटल रहा करता है। ऐसी स्थिति में बिना वैचारिक सामंजस्य बैठाएं संबंधों का निर्वहन नामुमकिन हुआ करता है। इसलिए हमारे अपने विचारों में उदारता का भाव जरूरी है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

पिताजी का जूता

प्रदीप औदिच्य

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जूता विदेश में भले ही सिर्फ पैर में पहनने के काम आता हो पर भारत में जूते के बहू आयामी उपयोग हैं,भारत में वह आदमी की हैसियत बताने से लेकर बच्चों को सुधारने तक कई जगह काम आता है,प्राचीन परम्परा में जूते से कई चीजें तय होती थीं।

एक तो जूते से आदमी की औकात तय होती है,आदमी ने कितना महंगा पहना है,,किस कम्पनी का है।

आजकल जूते के इतने भव्य शो रूम होते है,,मानो इनसे खरीदे गए जूते पैर में पहनकर चलने के बजाय किसी और काम आते हैं। जूते के एक उपयोग कानून व्यवस्था संभालने का भी रहा है।

प्राचीन समय में जूते से न्याय व्यवस्था भी संवरती थी,गांव में जूता उपहार में देकर जहां सम्मानित किया जाता था,वहीं चोर का चोरपना, या असामाजिक तत्वों के अंदर के तत्व खत्म करने के लिए उन्हें सामाजिक तत्व पैदा कर उत्तम जीवन प्रदान करने का कार्य भी जूते के जिम्मे ही आता था।

राजा के जूते से लेकर गंगू दरबान के जूते तक की अनेक कहानियां है,पर आज बात करेंगे तो पिताजी का जूते की।

पिताजी का जूता बेटे के जीवन में अहम स्थान रखता है।

एक तो ये कहावत हुआ करती थी कि जब पिताजी का जूता बेटे के पांव में आने लगे तो बेटा नहीं वह दोस्त हो जाता है,,पता नहीं ये कहावत किस परिवार या किस देश की है,, इस बात की गारंटी मैं दे सकता हूं कि ,ये भारत के किसी मध्यम वर्गीय परिवार के बाप बेटे पर किसी भी तरीके से फिट नहीं होती।

अगर ऐसा कही होता भी हो तो बेटे के द्वारा पिताजी का जूता पांव में पहनने से पहले कई बरस की लंबी प्रक्रिया होती है जिसमे उसका वास्ता बाप के जूते से पड़ता था। बाप का जूता बेटे के पांव में आने से पहले कई बार शरीर के विभिन्न स्थानों पर छू चुका होता है। अच्छा ये बात आज की पीढ़ी समझ ही नहीं सकती, हालांकि शहरों में 25 साल पहले पिताजी द्वारा बेटे को जूते मारने की परम्परा लगभग खतम हो गई है,पर गांव में बाप बेटे के रिश्ते को जूते ने मजबूत बनाए रखा है। अब नई पीढ़ी को क्या बताएं कि घर के बाहर पिताजी के जूते देख कर घर के अंदर घुसने की हिम्मत जुटा पाना बच्चे के लिए मुश्किल काम था,पता नहीं किस गलती का पुरस्कार पैरों के जूते फेंक कर मिले।

स्कूल समय से पिताजी के जूते और बेटे का सिर का अटूट सम्बन्ध प्रारम्भ होता है वह उसके जवानी तक चलता है,कभी कभी तो बेटे के बेटे होने तक पिताजी का जूता फेंकने की प्रक्रिया चलती रहती है..।

हां इस अनेक वर्ष के दौरान जूते और उसकी कम्पनियां बदलती रहती है। पर प्रक्रिया सतत जारी रहती है।

इसको उदाहरण से समझा जा सकता है.. मान लो,पिताजी आज ही शहर से नया जूता लेकर आए..वहां उससे जूते की मजबूती पर पूछा तो कहा गया कि,जूता बहुत मजबूत है..।

पिताजी गांव में घुसे और बेटा बीड़ी पीते पकड़ा गया,तो घर पहुंचने से पहले ही जूते की मजबूती का परीक्षण निश्चित है।

जब पिताजी जूता मार रहे होते है,तब गांव के लोग बचाते नहीं है..वह आते जाते सलाह दे जाते है..दो हमारी तरफ से भी मारो।

स्कूल से आई पढ़ाई की शिकायत पर पिताजी का जूता ही एकमेव न्याय प्रणाली का परिणाम होता था, गांव में ये तय नहीं होता की आपकी शिकायत पर अकेले पिताजी ही सजा दें। ना जी,ये कार्य घर के अन्य सदस्य या पिताजी के दोस्त भी कर सकते है,,ये महती जिम्मेदारी वह खुशी खुशी उठा लेते हैं,उनको किसी से पूछने की जरूरत नहीं पड़ती। गांव में कुछ बच्चे ऐसे होते है,जो अपने पिता के जूते पहले खा लेते है,,गलती बाद में पूछी जाती है।

एक बार गांव के स्कूल के हेड मास्टर साहब अपनी सायकिल लेकर जा रहे थे..उधर से रास्ते में एक बच्चे के पिताजी मिले उन्होंने कहा ,क्या हुआ माड़ साहब,?

उन्होने बताया कि सायकिल पंचर किसी बच्चे ने कर दी।

उस दिन गांव के चार लड़के अपने पिताजी के जूता सम्मान से सुशोभित हुए,बाद में मालूम चला कि वह बेचारे तो उस दिन स्कूल ही नहीं गए,वह भैंस चराने जंगल गए हुए थे।

तो पिताजी का जूता ,एक मात्र अस्त्र होता था जिससे बच्चे डरते थे,जो पैरों में पहनने से ज्यादा बच्चे की स्कूल एवम जीवन शिक्षा देने के काम आता था।

एक लड़के को उसके पिता ने गांव में ताश खेलते दूर से देख लिया,बाप ने एक जूता फेक कर मारा वह सटीक निशाने पर लगा..बेटा बोला बापू, अगर तुमने मुझे जूते फेकने के बजाय भाला फेकने की प्रैक्टिस की होती तो ओलंपिक में पदक मिल जाता।

फिर क्या था,बाप ने दूसरा जूता किसी भाला फेंक चैंपियन की तरह फेका जो सीधा खोपड़ी पर लगा।

चिंतन

चित्रा माली

जन चेतना के बुद्धिजीवी- एडवर्ड सईद

भाषा को लेकर भी सईद के चिंतन में एक अलग तरह की छटपटाहट दिखाई देती है,वे कहते हैं कि मेरा व्यक्तित्व अरबी और अंग्रेजी के बँटा हुआ था। सईद कहते है कि मुझे नहीं पता कि मेरी पहली भाषा कौन सी है, लेकिन ये अवश्य है कि दोनों ही भाषाएं मेरे जीवन में साथ-साथ रही हैं और एक भाषा में दूसरी भाषा की प्रतिध्वनियां गूंजती रही हैं – कभी विडंबनात्मक रूप में, कभी नॉस्टेलजिया के रूप में। 1948 में जब इजरायल राष्ट्र का गठन हुआ तो सईद 12 वर्ष के थे। इस राष्ट्र के गठन से हजारों फिलिस्तीनी परिवारों को अपनी जड़ जमीन से विस्थापित होना पड़ा इनमें एक सईद का परिवार भी था। सईद का बचपन लेबनान और मिस्त्र में बीता। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मिस्र में हुई जिससे पढ़ाई में निपुण होने के बाद भी वे औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली और उसकी संस्कृति के साथ मेल नहीं बिठा पाए।

एडवर्ड सईद का जन्म 1 नवंबर 1935 में यरूशलेम में हुआ था। जो तीन महान धार्मिक विश्वासों का केंद्र बिंदु रहा है, जहां संस्कृति और धर्मों का एक अटूट संगम है,यह जमीन का ऐसा टुकड़ा है जिसमें आकर सब एक दूसरे में समाहित हो जाते है। सईद के नाम का पहला शब्द 'एडवर्ड' है जो इंग्लैंड के प्रिंस ऑफ वेल्स से प्रभावित होकर उनके माता पिता ने रखा था लेकिन इस विचित्र सम्मिलन से सईद की अपने परिवेश में एक अजीब तरह की पहचान बनती थी। सईद अपने नाम के पहले शब्द एडवर्ड को लेकर काफी असहज महसूस करते थे। अरब परिवार में नाम का यह आधा हिस्सा उन्हें असहज बनाता रहा था। भाषा को लेकर भी सईद के चिंतन में एक अलग तरह की छटपटाहट दिखाई देती है,वे कहते हैं कि मेरा व्यक्तित्व अरबी और अंग्रेजी के बँटा हुआ था। सईद कहते है कि मुझे नहीं पता कि मेरी पहली भाषा कौन सी है, लेकिन ये अवश्य है कि दोनों ही भाषाएं मेरे जीवन में साथ साथ रही हैं और एक भाषा में दूसरी भाषा की प्रतिध्वनियां गूंजती रही हैं-कभी विडंबनात्मक रूप में, कभी नॉस्टेलजिया के रूप में। 1948 में जब इजरायल राष्ट्र का गठन हुआ तो सईद 12 वर्ष के थे। इस राष्ट्र के गठन से हजारों फिलिस्तीनी परिवारों को अपनी जड़ जमीन से विस्थापित होना पड़ा इनमें एक सईद का परिवार भी था। सईद का बचपन लेबनान और मिस्त्र में बीता। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मिस्र में हुई जिससे पढ़ाई में निपुण होने के बाद भी वे औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली और उसकी संस्कृति के साथ मेल नहीं बिठा पाए। आगे की पढ़ाई अमेरिका में हुई और अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में वे अंग्रेजी तुलनात्मक साहित्य के प्रोफेसर हो गए। अमेरिकी शिक्षा व्यवस्था में भी सईद ने अपने आपको एक आउट साइडर के रूप में ही पाया। सईद ग्राम्शी,एडोर्नो, रेमंड विलियम्स और मिशेल फूको के लेखन से अधिक प्रभावित थे। पूर्व में सईद विश्वविद्यालय और उसके अध्ययन कक्षों के दायरों तक सीमित रहे लेकिन 1967 के अरब - इजरायल युद्ध में अरबों की स्थिति ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया। सईद ने अरब शरणार्थियों की भयावह स्थिति को बड़े करीब से देखा था। 1948 में वे स्वयं शरणार्थी के रूप में इस स्थिति को देख चुके थे। इसके बाद एडवर्ड सईद अमेरिका के विशुद्ध अकादमिक दायरे की सीमाओं को तोड़कर बाहर निकले और फिलिस्तीनी संघर्ष के प्रवक्ता बन गए। सईद अपनी किताब 'रिफ्लेक्शंस ऑन एक्साइल' की भूमिका में लिखते हैं कि पिछले तीन दशकों में जो एक सबसे बड़ा तथ्य उभर कर आया है वह यह है कि युद्ध,उपनिवेशवाद की प्रक्रिया और उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ाई,आर्थिक और राजनीतिक क्रांति,अकाल,जातीय नरसंहार और शक्ति के विशाल तंत्र के विनाशकारी परिणामों की वजह से एक विराट संख्या में मनुष्यों की आबादियां अपनी जड़ - जमीन से बेदखल हो गई है।

निर्वासित,प्रवासी,शरणार्थी और तमाम धकियाये हुए लोग जो अपनी जड़-जमीन से उखड़ गए हैं उन्हें इस नए परिवेश में रहना पड़ता है। वे जो कुछ कर रहे हैं उसमें रचनात्मकता के साथ साथ एक अवसाद को भी देखा जा सकता है। यह उन नए अनुभवों में से एक है जिसका वृत्तांत और ऐतिहासिक अभिलेख अभी लिखा जाना है। आज जब हम इंटेलेक्चुअल्स (बौद्धिकों) की बात करते हैं तो उन्हें एक संकुचित दायरे में पाते हैं जो अपने विश्वविद्यालयों के बौद्धिक कक्षों तक सीमित होकर रह गए हैं। उनके लिए ज्ञान या जानकारियों का मकसद महज अपनी पदोन्नति या निजी स्वार्थों की पूर्ति करना है। इसके विपरीत अगर वर्तमान समय में हम पब्लिक इंटेलेक्चुअल की बात करें तो एडवर्ड डब्ल्यू सईद का नाम सबसे पहले हमारे ज़ेहन में आता है जिन्हें पूरे विश्व में पब्लिक इंटेलेक्चुअल के रूप में जाना और याद किया जाता है। वे ऐसे इंटेलेक्चुअल थे जो जनता की लड़ाई सड़क पर आकर लड़ते थे,वे महज विमर्शों तक सीमित नहीं थे। वे अपनी बौद्धिक जिम्मेदारियों को जानते समझते थे और सार्वजनिक जीवन में उसका निर्वहन भी करते थे। सार्वजनिक बौद्धिक का यह पद लगभग समाप्त या कहें अर्थहीन हो गया था जिसे सईद ने अपनी जीवनशैली और कार्यपद्धति से एक नई पहचान प्रदान की है। वर्तमान समय में समूचे विश्व में सत्तातंत्र ने 'बौद्धिक 'को महज एक अकादमिक विशेषज्ञ या वेतनभोगी प्रोफेशनल बना दिया है,जबकि बौद्धिक का अर्थ है जन चेतना को उभारने वाला वह व्यक्ति है जो अपने समय के तनावों और जटिलताओं से वाकिफ हो; जो समुदाय के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाता हो। सईद ने कहा कि यह कार्य एक गैर - विशेषज्ञ कार्य है जो प्रोफेशनल डिसिप्लिन के बैरियर को तोड़ता है। सईद ऐसे विचारक थे जो अपनी सोच से व्यक्ति, समाज और समाज विज्ञान की पूर्व धारणा को खारिज कर नई शक्ल प्रदान करते हैं। भारत में भी इस तरह के विमर्शों की एक शुरुआत हुई है जिसमें कई पब्लिक इंटेलेक्चुअल्स ने अपनी भागीदारी की है लेकिन एक तबका ऐसा भी है जो इंटेलेक्चुअल्स को अध्ययन अध्यापन तक सीमित रहने की वकालत करता है जिनकी जनांदोलनों को लेकर एक खास तरह की कंडीशनिंग है जो अलग किस्म के पूर्वाग्रह से ग्रसित है। चंद पब्लिक इंटेलेक्चुअल जो अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं उन्हें यह तबका और मीडिया अलग अलग तरह से टारगेट करता रहता है।

मीडिया की भूमिका को लेकर एडवर्ड सईद की 1981 में प्रकाशित किताब 'कवरिंग इस्लाम : हाउ मीडिया एक्सपर्ट डिटर्मिन' की चर्चा की जाना लाजमी है। जिसमें सईद लिखते हैं कि कैसे अमेरिकी मीडिया इस्लाम की छवि को गढ़ता है और इस्लाम को आतंकवाद का पर्याय बनाकर पेश करता है। सोलह वर्ष बाद 1997 में इस किताब का विंटेज संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। सईद लिखते है कि अमेरिकी और पश्चिमी मीडिया में इस्लाम और मुसलमानों की अतिश्योक्तिपूर्ण और शत्रुता से भरी छवियों का निर्माण किया जाता है क्योंकि पश्चिम में अपने से अलग 'अन्य' से पेश आने के अलग तौर तरीके हैं । अमेरिका में अनेक नीति निर्धारण के मसलों और मीडिया में होने वाली बातचीत खासकर समाचार कार्यक्रमों और 'टॉक शो' में इस्लाम केंद्रीय विषय बन गया है और तथाकथित विशेषज्ञों की एक फौज तैयार की गई है, जिसका कार्य इस्लाम और इस्लामिक देशों की एक फार्मूलाबद्ध छवि को गढ़ना है । इस्लाम के बारे में इनके द्वारा दुर्भावनापूर्ण और द्वेष से भरे सामान्यीकरणों में मुस्लिम जहन,चरित्र,समाज और संस्कृति की जिस प्रकार से अवमानना की जाती है वह पश्चिम के सहज बोध में आज स्वीकार्य रूप ले चुका है,परिणामस्वरूप

पश्चिमी मीडिया इस्लाम को अपना मुख्य दुश्मन मान चुका है। इसके साथ इस्लामिक संस्कृति का लगातार सरलीकरण किया जाता है, उसे कुछ खास नियम कायदों, रीति रिवाजों,धार्मिक विश्वासों, घिसी पिटी छवियों में सीमित कर दिया जाता है। इसके बाद हर नकारात्मक तथ्य को इस्लाम के साथ जोड़ दिया जाता है फिर चाहे वह हिंसा हो या उनकी पुरातनपंथी जीवन शैली या रूढ़िवादिता हो। पश्चिमी देशों की मीडिया ने जिस तरह से इस्लाम और इस्लाम के अनुयायियों की छवि का निर्माण किया है लगभग इसी तरह के प्रभावों को हम भारत और भारतीय मीडिया के संदर्भ में देख सकते है। अमेरिका या पश्चिमी मीडिया ने ही इस्लाम या मुसलमानों की छवि को नहीं गढ़ा है वरन हाल के कुछ वर्षों में भारतीय मीडिया ने भी एक अन्य की तरह के मुसलमानों, अल्पसंख्यकों, राजनीतिज्ञों,शिक्षकों,छात्रों,दलितों और महिलाओं की छवि को गढ़ने का निरंतर प्रयास किया है,जो सत्ता की विचारधारा से मेल नहीं खाते है। विभिन्न आतंकवादी हमलों और हिंसक घटनाओं में भी इस्लाम से संबंधित लोगों को खोजा जाता रहा है,जबकि हिंसा का संबंध किसी खास संप्रदाय, धर्म, जाति या वर्ग से न होकर व्यक्ति की व्यक्तिगत हिंसक प्रवृत्ति से होता है जो किसी भी धर्म, संप्रदाय,जाति के व्यक्ति में हो सकती है, लेकिन मीडिया अपने एजेंडे के तहत हिंसक घटनाओं या आतंकवादी गतिविधियों को संप्रदाय,धर्म से जोड़कर मीडिएट करने की लगातार कोशिश करती रहती है। मीडिया के मार्फत खासकर उन लोगों पर भी निशाना साधा जाता रहा है जो अल्पसंख्यकों और वंचित तबकों के हक में आवाज बुलंद करते हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्रों की राष्ट्र विरोधी छवि को गढ़ने का कार्य,पिंजरा तोड़ आंदोलन की छात्राओं के खिलाफ दुष्प्रचार करने का कार्य,कोरोना काल में तबलीगी जमात और मुसलमानों को महामारी फैलाने के लिए जिम्मेदार ठहराने वाले कार्यक्रम इन समाचार वाचकों के द्वारा ही संचालित किए गए थे । एडवर्ड सईद की किताब 'कवरिंग इस्लाम : हाउ मीडिया एक्सपर्ट डिटर्मिन' जो अमेरिकी मीडया और पश्चिमी मीडिया के संदर्भ में लिखी गई थी।

भारतीय मीडिया में भी विगत कुछ वर्षों से यही सब परिलक्षित होता दिखाई दे रहा है। आज एडवर्ड सईद की पुण्यतिथि पर हम उनकी किताब का संदर्भ लेते हुए मीडिया पर विमर्श कर रहे हैं जो अत्यंत आवश्यक है। एडवर्ड सईद 1997 में पहली बार भारत भ्रमण पर आए थे तब वे ल्यूकेमिया से ग्रसित थे और कीमोथेरेपी की वजह से काफी कमजोर और बीमार महसूस कर रहे थे लेकिन भारत में हर जगह जिस गर्मजोशी से उनका स्वागत किया गया और मान सम्मान दिया गया उससे वे अभिभूत थे। खासकर उच्चस्तरीय विचार विमर्श और संवाद से वे अधिक प्रभावित थे जो छात्रों,शिक्षकों और पत्रकारों के द्वारा उनके साथ किया गया था । इसके लिए वे कहते है कि मैंने बहुत कम मौकों पर इस तरह के प्रखर संवादों का अनुभव किया है। एडवर्ड सईद की यह टिप्पणी हम सभी भारतीयों के लिए काफी महत्वपूर्ण व गौरवान्वित करने वाली है कि हमारे यहां एक ओपन पब्लिक स्फियर हुआ करता था। दमयंती दत्ता द्वारा एडवर्ड सईद का 1997 में एक साक्षात्कार लिया गया था जो 'द टेलीग्राफ' में प्रकाशित हुआ था। जिसमें उनसे एक प्रश्न पूछा गया था कि एक शिक्षक, सक्रिय लेखक और सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता इन तीनों भूमिकाओं में आप सामंजस्य किस प्रकार स्थापित करते हैं और कौन-सी भूमिका आपको सबसे ज्यादा सुखद लगती है ? एक शिक्षक होना आपके लिए क्या मायने रखता है ? इसके जवाब में एडवर्ड सईद कहते है कि मेरे ख्याल से शिक्षक की भूमिका। मुझे पढ़ाते हुए करीब चालीस बरस हो गए। छात्रों की मौजूदगी के बगैर जब भी कुछ पढ़ता या सोचता हूं तो ऐसा कुछ होता है, जो मुझे रास नहीं आता और मैं ऐसी स्थिति से बचना चाहता हूं। यही वजह है कि कक्षाएं लेना मेरे लिए बंधा बंधाया रूटीन नहीं बल्कि नित नयी खोज और सीखने का अनुभव रहा है। प्रतिक्रियाओं के लिए मैं बहुत ज्यादा अपने छात्रों पर निर्भर करता हूं । शुरुआती दिनों में जब मैंने पढ़ाना शुरू किया था, मैं जरूरत से ज्यादा तैयारी करता था। कक्षा के एक एक सेकंड की योजना बनाता था। पर बाद में कोलंबिया में मुझे इतने असाधारण छात्र मिले कि मुझे लगा कि छात्रों के विचार मुझमें सोच और चर्चा के स्तर पर ऐसी उत्तेजना भर सकते हैं,जिसकी पहले मैंने कल्पना नहीं की थी। जो मेरे लेखन का हिस्सा बन जाते हैं। एडवर्ड सईद के लिए शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है जिसमें लगातार सीखते रहने की संभावनाएं हैं बशर्ते आपने खुद उन संभावनाओं को खत्म न किया हो। संवाद की इस प्रक्रिया में लगातार वाद,विवाद और संवाद होते हैं जो एक दूसरे को विषय की बारीकियों को जानने समझने के लिए प्रेरित भी करते हैं। संवाद की यह प्रक्रिया अनवरत जारी रहने वाली प्रक्रिया है जो समाज को सही मार्ग पर ले जा सकती है लेकिन वर्तमान समय में इस संवाद की पूरी प्रक्रिया को व्यवस्था विरोधी करार दे दिया गया है। संवाद की इस इकतरफा प्रक्रिया को बढ़ाने में मीडिया के चैनल्स और एंकरों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसमें उनके द्वारा प्रसारित सूचनाएं ही परम सत्य है जिस पर वाद विवाद और संवाद के सभी रास्ते बंद है । इस इकतरफा संवाद की प्रक्रिया से समाज में लगातार सहिष्णुता का ह्रास हो रहा है। हाल की साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाओं से, छोटे बच्चों के जहन में भरी हिंसा के फलस्वरूप हो रही घटनाओं की जिम्मेदारी भी इन्हें लेनी होगी, जिससे इनके द्वारा लगातार पल्ला झाड़ा जा रहा है। इस पर हर नागरिक को सवाल पूछना चाहिए और देश में साम्प्रदायिक सौहार्द्र और सहिष्णुता को क्षति पहुंचाने वाले कार्यक्रमों का बहिष्कार करने चाहिए। स्वतंत्रता के पूर्व औपनिवेशिक काल में जिस तरह से मीडिया दो खेमों में बंटा हुआ था, आज भी कमोबेश वही स्थिति है,एक सत्ता समर्थक और दूसरा सत्ता विरोधी। जो सरकार से सरकारी प्रणाली पर सवाल करता है जो लोकतंत्र और लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक है यही प्रतिरोधी पक्ष मीडिया का सच्चा और वास्तविक चरित्र है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में पब्लिक इंटेलेक्चुअल्स को अगर देखा जाए तो जनसरोकार को लेकर चंद इंटेलेक्चुअल्स ही है जो अपने कंफर्ट ज़ोन से बाहर निकलकर जनता के अधिकारों की लड़ाई में शामिल हैं। उनके इस जज्बे को सलाम जो आज भी पब्लिक इंटेलेक्चुअल्स (टर्म) पद की गरिमा को बचाए हुए है इसलिए ऐसे समय में सईद को पढ़ना और याद करना अनिवार्य हो जाता है।

वक्रोक्ति

प्रो. राकेश सिंघई

लेखक वर्तमान में विश्वविद्यालय अभियांत्रिकीय संस्थान, आरजीपीवी शिवपुरी में संचालक हैं।

गड्ढों की प्रसव पीड़ा

एक नेता जी बड़े जोश से विकास-विकास चिल्लाते हुए, पिछली सरकारों के समय की एवं अपनी सरकार की विकास गाथा में सड़कों की अकादमिक तुलना कर रहे थे। पब्लिक भी बीच-बीच में ताली बजा रही थी। नेता जी कह रहे थे सड़कों के गड्ढे बताते हैं की विकास हुआ है, अन्यथा पहले तो ये गड्ढे भी नहीं हुआ करते थे। जनता हाँ में मुंडी हिलाते हुए नेता जी से सहमति जता रही थी, और नेता जी अब गड्ढों के आकार पर अपनी शोध का बखान कर रहे थे। जितना बड़ा गड्ढा, उतना रोड का इस्तेमाल, और उतना ज्यादा विकास।

एक दौर आया विकास का, और शहरो, कस्बों को चका-चक चमकती हाईवे की सड़कों से जोड़ दिया गया। सभी ने अभी चैन की सांस ली ही थी की, रोड ठेकेदारों का छिपा हुआ तिलिस्म बाहर आने लगा। कहते हैं, किसी देश का औद्योगिक विकास देखना हो तो सड़कों का जाल जितना बिछेगा उतना विकास होगा। पर इसमें सड़कों की गुणवत्ता की कोई बात नहीं कही गई। सो, हाईवे बन तो गए, विकास भी दिखा गए, पर विकास का प्रमाण-पत्र पाते ही, सड़कों के छिपे गड्ढे बाहर आकर विकास को धता दिखाने लगे। सड़कें ऐसी हो गई हैं की, जैसे किसी बहुत बड़े कारीगर ने इन्हें ज़मीन पर गड्ढे उकेरने की प्रतियोगिता जीतने के लिए बनाया हो। गड्ढे भी ऐसे कि लगने लगता है जैसे सड़क ने खुद किसी दर्दनाक प्रसव प्रक्रिया से गुजरते हुए इनको जन्म दिया हो। और इन गड्ढों की संख्या देख कर यही लगता है कि सड़क हर साल जुड़वा, तिड़वा या चौड़वा गड्ढों को पैदा करने का हुनर रखती है। ऐसा लगता है जैसे सड़क निर्माण विभाग ने इसे कमर दर्द वाले किसी पहलवान को उपहार में दिया हो। जहां देखो, वहां गड्ढे ही गड्ढे। असल में, गड्ढों ने इतने बड़े रूप धारण कर लिए हैं कि अब सड़कों पर चलने के लिए ड्राइवर से पहले तैराकी का सर्टिफिकेट मांगना चाहिए।

कुछ वर्ष पूर्व एक समय जब विकास की ओढ़नी उड रही थी, जब नई-नई सड़कें बनी थी, तब सड़कें सीधी होती थीं, सपाट होती थीं। लेकिन अब तो सड़कें किसी पहाड़ी यात्रा का अनुभव कराती हैं। गाड़ी चलाते समय आपको ये अनुभव होता है, जैसे आप ऑफ-रोडिंग कर रहे हों। लगता है कि सरकार ने सड़कों पर साहसिक-पर्यटन को बढ़ावा देने का बीड़ा उठा लिया है।

यहां तक कि गर्भवती महिलाएँ अगर इस सड़क से गुजरें, तो डॉक्टर की ज़रूरत भी नहीं पड़ेगी। मोहल्ले के लोग कहते हैं, 'जिन सड़कों से गुजरो, वहां गड्ढे खुद ही बच्चे को समय से पहले जन्म दिलवा देंगे।' प्रसव के लिए अस्पताल जाने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी। बस अपनी गाड़ी लो और गड्ढों से भरपूर सड़कों पर घूम आओ, उदरस्थ-शिशु रोलर-कोस्टर का आनंद लेने अपने आप दुनिया में आ जाएगा। यही तो है 'प्राकृतिक प्रसव' का नया सरकारी तरीका!

अक्सर लगता है कि ये सड़कें प्रसव पीड़ा का आधुनिक प्रतिरूप हैं–हर गड्ढा एक नई पीड़ा, हर झटका एक नया अनुभव। और इन सड़कों पर गाड़ी चलाना मतलब बिना डॉक्टर के प्रसव पीड़ा में खुद को झोंक देना। असली मर्दानगी तो तब साबित होती है जब आप इन सड़कों पर बिना हड्डी टूटे गाड़ी चला लें। अगर आपकी गाड़ी के टायर कुछ ही महीनों में घिस जाते हैं, तो समझिए कि गड्ढे देवता आपकी भक्ति से प्रसन्न हो गए हैं। हर गड्ढे से आपकी गाड़ी का 'गुर्र' करती आवाज़ें सुनाई देती हैं, जैसे गाड़ी खुद आपको कह रही हो, 'भैया, अब मुझसे नहीं होगा'।

कहते हैं कि सड़कों पर गड्ढे केवल बारिश में दिखते हैं, लेकिन हमारे शहर में तो ये बारहमासी देवता हैं। बारिश तो बस बहाना है, वरना ये गड्ढे साल भर आपकी सेवा में तत्पर रहते हैं। गर्मी में ये इतने बढ़ जाते हैं कि गाड़ी के पहिए मानो उनसे गले मिलकर रोने लगते हैं।

और अगर कभी गलती से कोई नई सड़क बन जाए तो मोहल्ले के लोग उसे किसी नवजात शिशु की तरह देखते हैं-धीरे-धीरे उसकी तस्वीरें खींची जाती हैं, व्हाट्सएप पर बधाइयाँ दी जाती हैं। लेकिन जैसे ही पहली बारिश होती है, वह नवजात सड़क ऐसे लुप्त हो जाती है जैसे सरकारी फाइलों में 'प्रगति' के आंकड़े।

असल में, हमारे यहां की सड़कों का फंडा बड़ा ही सरल है-'गड्ढे बने तो नेता चुनावी भाषण में गड्ढों के बखान से वोट मांगेगा, और अगर गड्ढे नहीं बने तो जनता कहेगी, 'अरे कुछ हुआ ही नहीं! और सरकार का योगदान शून्य हो जायेगा'। यह गड्ढे वही हैं जो नेताओं को चुनने और सरकार गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आखिर, जब जनता अपनी टूटी हुई गाड़ियों के साथ वोट देने जाएगी तो वोटिंग मशीन से पहले यह तो सोचेगी ना, की उनके पास कम से कम टूटी गाडी तो है, वरना पुरानी सरकारों के समय तो यह भी नसीब में नहीं थी।

सच कहें तो, हमारे शहर की सड़कों ने ये साबित कर दिया है कि विकास की यात्रा में गड्ढों का भी अपना महत्वपूर्ण योगदान है। जितने गड्ढे, उतना विकास!

इसलिए अगली बार जब आप सड़क पर चलें और आपकी गाड़ी गड्ढों से झूलने लगे, तो मुस्कुराइए, क्योंकि यह सिर्फ गड्ढा नहीं है–यह आपकी सरकार का 'समर्पण' है, जो आपको नए अनुभवों से रूबरू कराता है! तो नेता जी को गड्ढों की संख्या के बराबर वोट देकर बहुमत से जितायें। और अगली बार जब कोई आपसे पूछे कि 'प्रसव पीड़ा कैसी होती है?' तो आप उन्हें हमारे मोहल्ले की सड़कों पर एक राइड पर ले जाइए। यकीन मानिए, वे अपनी पूरी जिंदगी प्रसव-पीड़ा के बारे में कभी नहीं पूछेंगे।

भारत के हितों की अनदेखी, सिंधु जल संधि को बदलने का वक्त

(गंगाधर ढोबले)

जब भूगोल पानी और पहाड़ों की सरहदें बनाता है, तब इतिहास घटता है और इतिहास के घटने के साथ भूगोल भी बदलता रहता है। इसका सबूत है पिछले 75 वर्षों से किसी न किसी रूप में चल रहा सिंधु जल विवाद। इसकी जड़ में है भारत का विभाजन। यह विभाजन पाकिस्तान की कटुता और शत्रुता की बुनियाद पर हुआ है। इससे सिंधु का गौरवशाली इतिहास मटियामेट हो गया। कभी वैदिक काल (ईसा पूर्व 1500 से 500 वर्ष) में वेदों की रचना करने वाले सिंधु के तटों ने सिकंदर (ईसा पूर्व 233 वर्ष) से लेकर मुगलों, अंग्रेजों से होकर नेहरू तक, कई रणसंग्राम और राजनीतिक उतार-चढ़ाव देखे। यह सिलसिला आज भी कुछ भिन्न रूप में चल रहा है और शायद आगे भी चलता रहेगा।

भारत की चिंता: इस पृष्ठभूमि का ताजा संदर्भ है सिंधु जल संधि पर नए सिरे से वार्ता की भारत की मांग। भारत की चिंता के मुख्य विषय हैं- इस परिक्षेत्र में बढ़ती आबादी, पाकिस्तान से निरंतर आता आतंकवाद, जल बंटवारे में भारत के प्रति अन्याय, विवाद की स्थिति में फैसले के प्रावधान समय के अनुरूप बनाना, पर्यावरण की समस्या और स्वच्छ ऊर्जा के विकास को बढ़ावा देकर कार्बन उत्सर्जन को कम करना।

पाक प्रायोजित आतंकवाद: उरी में भारतीय फौजी ठिकाने पर हुए आतंकी हमले के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा था, 'सिंधु में जल और खून एक साथ नहीं बह सकते।' केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने सिंधु का पानी बंद करने की चेतावनी दी थी। ऐसे जल-अस्त्र का प्रयोग संभव है, क्योंकि फिरोजपुर हेडवर्क जैसी सतलुज का पानी उलीचने वाली परियोजना प्रवाह के ऊपर की दिशा में है, जबकि पाकिस्तान का हुसैनीवाला हेडवर्क जैसी परियोजना प्रवाह की निचली दिशा में। भारत ज्यादा पानी उठा ले या प्रवाह को रोककर कहीं और मोड़ दे, तो पाकिस्तान के प्रॉजेक्ट ठप पड़ जाएंगे।

असमान बंटवारा: वर्ल्ड बैंक के नेतृत्व में 1951 से लेकर 1959 तक दोनों देशों के बीच चर्चाओं के दौर चले थे। अंत में 19 सितंबर 1960 को कराची में संधि हुई। सिंधु जल क्षेत्र में कुल छह नदियां हैं। इनमें पश्चिम की सिंधु, झेलम और चिनाब पाकिस्तान को मिलीं, जबकि पूरब की सतलुज, ब्यास और रावी भारत के हिस्से में आईं।

भारत ने भी दिया अंशदान: पाकिस्तानी इलाके की नदियों का लगभग 80 प्रतिशत पानी पाकिस्तान के हिस्से में आया, जबकि भारत को 20 प्रतिशत मिला। पूरब की नदियों का 70 प्रतिशत पानी पाकिस्तान को और केवल 30 प्रतिशत पानी भारत को मिला। 6 नदियों को मिला दिया जाए तो लगभग 75 प्रतिशत पानी पाकिस्तान को और केवल 25 प्रतिशत भारत को मिला। यही नहीं, पाकिस्तान के पंजाब इलाके में जल परियोजनाओं के लिए वर्ल्ड बैंक के साथ भारत ने भी 6 करोड़ 20 लाख पाउंड का अंशदान दिया।

बदलाव का वक्त: संधि का समय ध्यान में रखने लायक है। संसद सत्र 9 सितंबर 1960 को खत्म हुआ और इसके 10 दिन बाद संधि पर हस्ताक्षर हुए। 30 नवंबर 1960 को संसद के अधिवेशन में इस पर जबरदस्त हंगामा हुआ। जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव, राम मनोहर लोहिया और अटल बिहारी वाजपेयी समेत कई विपक्षी सदस्यों ने सरकार से पूछा कि क्यों भारत के हितों को तिलांजलि दी गई? तत्कालीन पीएम जवाहरलाल नेहरू का जवाब था कि 'मानवीयता के आधार' पर पाकिस्तान को रियायत दी गई। इस अन्याय को छोड़ने का समय अब आ गया है।

वर्तमान विवाद: 2005 में पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर की किशनगंगा और रतले जल विद्युत परियोजनाओं की डिजाइन पर आपत्ति उठाई थी। किशनगंगा नदी को पाकिस्तान में नीलम कहा जाता है और वह पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर और भारत की अस्थायी सरहद है। भारत का कहना था कि यदि कोई विवाद हो तो संधि में मौजूद चार विकल्पों का एक-एक कर इस्तेमाल किया जाए।

चार विकल्प: पहला विकल्प है, स्थायी सिंधु जल आयोग के समक्ष विवाद पेश करना, दूसरा- वर्ल्ड बैंक द्वारा नामित तटस्थ विशेषज्ञ से सलाह लेना, तीसरा- वर्ल्ड बैंक को फैसले के लिए मामला सौंपना और चौथा विकल्प है- स्थायी 'कोर्ट ऑफ आर्बिट्राज' गठित करना। भारत चाहता था कि पहले तीन विकल्पों का इस्तेमाल होने के बाद ही अंतरराष्ट्रीय कोर्ट तक पहुंचा जाए। माना जाता है कि दोनों पक्ष 'तटस्थ विशेषज्ञ' पर लगभग सहमत हो गए थे, लेकिन 2016 में पाकिस्तान ने 'कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन' की मांग कर दी और मामला उलझ गया।

भारत विकास परिषद ने किया गुरु-शिष्य परंपरा का सम्मान

गुरु वंदन-छात्र अभिनंदन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

बैतूल। छत्रपति शिवाजी विद्या मंदिर बैतूल में भारत विकास परिषद की बैतूल शाखा द्वारा गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिषद के सदस्यों और विद्यार्थियों ने स्कूल के शिक्षकों को तिलक लगाकर, पुष्पहार पहनाकर, नारियल भेंट कर एवं उनके चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया। परिषद के सदस्यों ने विद्यार्थियों को भी तिलक लगाकर सम्मानित किया और उन्हें पेन व पेंसिल भेंट की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती पूजन और राष्ट्रगान के साथ हुआ। परिषद के उपाध्यक्ष युवराज मालवीय श्री गौड़ द्वारा भारत विकास परिषद का परिचय दिया गया। परिषद के सचिव आशीष पचौरी ने बच्चों को इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य समझाते हुए बताया कि भारत विकास परिषद किस प्रकार से गुरु वंदन छात्र अभिनंदन का आयोजन करता है। इस अवसर पर मेडिकल कैंप प्रभारी डॉ. राकेश मालवीय ने स्कूल के प्राचार्य सुखदेव कवडकर का सम्मान किया। वहीं, प्रांतीय रक्तदान एवं नेत्रदान प्रभारी प्रकाश बंजारे ने परिषद द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रांतीय कार्यों की जानकारी साझा की।

कार्यक्रम का संचालन तूलिका पचौरी, नूतन जैन एवं प्रमिला धोत्रे द्वारा किया गया। महिला शिक्षिकाओं का सम्मान बिल्लो पवार और सपना दवंडे द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में बैतूल शाखा अध्यक्ष पी. आर. मगरदे और कोषाध्यक्ष दिनेश पंडाग्रे ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर स्कूल प्राचार्य सुखदेव कवडकर, संध्या बर्डे, सरिता देशमुख, वैशाली पडलक, ममता बारस्कर, रुचिका येरपुड़े, प्रियंका खातरकर, प्रेरणा झरबड़े, वैशाली नलगे, उपासना राने, माधवी विनोदकर, प्रतिभा जैन, आफरीन अली, गीता कोलते, नाज़नीन खान और तृप्ति सैलकरी उपस्थित रहे।

छोटे से गांव के किसान का बेटा बना अग्निवीर

रोहित खड़के का भारतीय सेना में सेवा देने का सपना हुआ पूरा

बैतूल। आठनेर तहसील के ग्राम वडाली के रहने वाले रोहित खड़के, जो कि निम्न-मध्यम वर्ग के परिवार से आते हैं, इनके पिताजी किसान है। आज अग्निवीर के टेक्निकल की परीक्षा के परिणाम घोषित हुए है, जिसमे रोहित खड़के भारतीय सेना में अग्निवीर के लिए चुने गए है। परीक्षा पास होने पर परिवार में खुशी का माहौल है। ग्रामीणों ने रोहित को बधाईयां भी दी। बेटे के चयन पर रोहित के पिताश्री माखन खड़के बहुत खुश है। उनका कहना है कि आज मेरे बेटे ने गांव का ही नही मेरा भी नाम रोशन किया है और इसी तरह आगे भी करता रहे, यही कामना करता हूं। रोहित खड़के ने बताया कि 3 साल से वह प्रयास कर रहा था इसके बाद एग्जाम दिया और आज परीक्षा परिणाम आने पर पास हो गया। मैं शुरू से ही भारतीय सेना में शामिल होने का सपना देखता था जो आज पूरा हो गया है।

वेतन विसंगति को लेकर वन एवं वन्य प्राणी संघ की हुई बैठक

बैतूल। सोशल मीडिया के जरिए वेतन विसंगति की भ्रामक जानकारी फैलाने से वन कर्मचारियों में ऊहापोह की स्थिति निर्मित हो गई है यही वजह है कि इस पर मिल बैठकर चर्चा और उसका निराकरण पर वन एवं वन कर्मचारियों के संघ की जिला इकाई ने एक बैठक वन विद्यालय में आहूत की गई। बैठक का मुख्य विषय

कर्मचारियों की वेतन विसंगतियों पर चर्चा कर आगामी समय में वेतन विसंगति को दूर करने हेतु क्या उपाय किए जाए इस संबंध में सभी कर्मचारियों द्वारा विचार विमर्श किया गया। संघ के जिला अध्यक्ष आकाश प्रधान ने बताया कि सोशल मीडिया पर वेतन विसंगतियों को लेकर जो भ्रमित जानकारी फैली हुई है. बैठक के दौरान चर्चा उपरांत यह निर्णय लिया गया कि अपने वृत्त स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों से इस संबंध में चर्चा की जाएगी यदि कोई 'वेतन विसंगति जैसी बातें निकलती है या कोई आदेश जारी किया जाता है। जो कि आज दिनांक तक नहीं किया गया हो तो अधिकारियों को साथ लेकर भोपाल स्तर पर संघ द्वारा अपने अधिकार के लिए नियमानुसार कार्यवाही कि जावेगी। इसके उपरांत समस्या का निराकरण नहीं होने की दशा में सभी कर्मचारी न्यायालय की शरण में जाने हेतु स्वतंत्र होगें।

पोषण प्रदर्शनी के माध्यम से दिया स्वस्थ रहने का संदेश

बैतूल। महिला बाल विकास बैतूल शहरी के कृष्णा वार्ड भाग 8 में आंगनवाड़ी केंद्र पर तिलक, कृष्णा और मोती वार्ड की कार्यकर्ता और सहायिका द्वारा एक पोषण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में मुख्य रूप से मोटे अनाज और एनीमिया से बचने के उपायों पर जोर दिया गया। विभागीय पर्यवेक्षक रूपा मिश्रा, राखी ज्ञानचंदानी, और गुनता उईके ने प्रदर्शनी में उपस्थित महिलाओं को स्वस्थ और पौष्टिक आहार के महत्व पर जानकारी दी। उन्होंने समझाया कि किस प्रकार दैनिक भोजन में पोषण की मात्रा बढ़ाकर शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। इस अवसर पर प्रदर्शनी में विभिन्न प्रकार की पौष्टिक रेसिपी तैयार की गई, जो महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी हो सकती हैं। वार्ड की कई महिलाएं इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं और उन्होंने प्रदर्शनी के दौरान साझा की गई जानकारियों का लाभ उठाया।

तवा टू कोयला खदान परिसर में झाड़ियों के बीच कामगारों को दिखा तेंदुआ, वीडियो वायरल

बैतूल। सारणी पाथाखेड़ा कोयला खदान तवा टू के परिसर में सीडीएस एवं बिल सेक्सन आफिस के बीच झाड़ियों में बीती रात लगभग साढे ग्यारह बजे कोयला कामगारों को तेंदुआ दिखाई देने से हड़कंप है। तेंदुआ झाड़ियों में घात लगाए बैठा हुआ था। कामगारों के शोर मचाने और टार्च की रौशनी देख तेंदुआ वहां से भाग निकला। जिसका वीडियो कामगारों द्वारा बनाया गया। तेंदुए के देखे जाने से कामगारों के बीच दहशत का माहौल है। गनीमत रही की कामगारों की नजर तेंदुए पर पड़ गई और समय रहते वे सतर्क हो गए।

विद्युत कटौती शेड्यूल जारी

बैतूल। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल शहर जोन-1 के द्वारा 25 सितंबर को 11 केवी कालापाठा फीडर का मेंटेनेंस कार्य किया जाना है। कंपनी के प्रबंधक ने बताया कि मेंटेनेंस कार्य के चलते बुधवार को प्रातः 10 से दोपहर 3 बजे तक कालापाठा फीडर के लोहिया वार्ड, चुन्नी ढाना, राजेंद्र वार्ड, सिविल लाइंस, संजय कॉलोनी, मुर्गी चौक, शिवाजी वार्ड, स्वीपर कॉलोनी, जेएच कॉलेज रोड, धुनी वाले दादाजी के आसपास के क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेंगी।

वनभूमि पर अतिक्रमण का प्रयास नाकाम, आरोपी को 13 दिन की जेल

वन्य जीवों के आश्रयस्थल को नुकसान पहुंचाने पर आरोपी को 13 दिन की सजा

बैतूल। वन वृत्त के दक्षिण बैतूल (सामान्य) वनमंडल अंतर्गत तासी परिक्षेत्र के रातामाटी बीट में वनभूमि पर अतिक्रमण का प्रयास करने वाले एक व्यक्ति को वन विभाग ने गिरफ्तार कर लिया है। कुछ ग्रामवासियों द्वारा कैम्पा वृक्षारोपण क्षेत्र में अवैध रूप से जुताई करके अतिक्रमण का प्रयास किया जा रहा था, जिससे वहां रोपित पौधों को भी नुकसान पहुंच रहा था।

वनसंरक्षक बैतूल, पी.एन. मिश्रा डीएफओ विजयानन्तम टी.आर. के मार्गदर्शन में वन विभाग की टीम ने सूझबूझ के साथ अतिक्रमणकारियों का विरोध किया और एक व्यक्ति को मौके से गिरफ्तार कर लिया। घटना स्थल पर निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि वृक्षारोपण क्षेत्र में कोबरा और मोर का प्राकृतिक आश्रय है। वन विभाग की टीम ने सांप की केंचुल और मोर के टूटे अंडों को वैज्ञानिक तरीके से सबूत के रूप में एकत्र किया और उन्हें सील किया गया।

वन विभाग ने इस मामले में वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 9 (वन्यजीवों का शिकार) और भारतीय वन अधिनियम 1927 की धारा 33 (1) (च) एवं 33 (1) (छ) के तहत प्रकरण दर्ज किया। आरोपी को 24 घंटे के भीतर न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, भैंसदेही के सामने पेश किया गया, जहां माननीय न्यायालय ने मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी को 13 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। इस कार्रवाई में तासी परिक्षेत्र की टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस टीम में परिक्षेत्र अधिकारी तासी (सामान्य) श्यामलता मरावी, परिक्षेत्र सहायक खेड़ी ओमकारनाथ मालवीय, परिक्षेत्र सहायक केरपानी शिवनाथ वाघमारे, कार्यवाहक वनपाल महेश सोनी, कार्यवाहक वनपाल संतोष कुमरे, वनरक्षक प्रदीप सिंह परिहार, वनरक्षक देवकरण भारती, वनरक्षक कृष्णकुमार डंडोलिया और उडनदस्ता वाहन चालक सुनील विश्वकर्मा शामिल रहे।

क्रिटिकल केयर यूनिट का 50 फीसदी से अधिक काम पूरा

बैतूल। जिला अस्पताल परिसर में क्रिटिकल केयर यूनिट का काम किया जा रहा है। अब तक इस यूनिट का काम आधे से अधिक पूरा हो चुका है। सब कुछ ठीक ठाक रहा तो अगले वर्ष में क्रिटिकल केयर यूनिट की सौगात मिल सकती हैं। यूनिट के बन जाने से गंभीर मरीजों को भी इलाज मिल पाएगा। जानकारी के मुताबिक जिला अस्पताल परिसर में करोड़ों की लागत से 50 बिस्तरीय क्रिटिकल केयर यूनिट का निर्माण किया जा रहा है। अब इस यूनिट का निर्माण कार्य 50 फीसदी से अधिक पूर्ण हो चुका है। यूनिट के बन जाने से गंभीर मरीजों को भी इलाज मिल पाएगा। सबसे पहले जो भी गंभीर मरीज आएंगे, उन्हें क्रिटिकल केयर यूनिट में भर्ती किया जाएगा।

इस यूनिट में कई अत्याधुनिक मशीनें भी लगाई जाएगी, जिसके कारण कई गंभीर मरीजों को उपचार मिल सकेगा। मेडिकल के क्षेत्र में जिले को कई तरह की सौगातें मिल रही है, लेकिन डॉक्टरों और अन्य स्टाफ की कमी के कारण परेशानियों से जूझना पड़ता है। बड़े-बड़े अस्पताल का निर्माण हो गया, लेनिक डॉक्टर और स्टाफ की कमी बनी हुई है। अब अस्पताल की व्यवस्था सुधारने के लिए अस्पताल को पीपीपी मोड पर संचालित कर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की कवायद चल रही है। पीपीपी मोड के संचालन में क्रिटिकल केयर यूनिट की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

नहीं करना पड़ेगा गंभीर मरीजों को रैफर- अस्पताल परिसर में क्रिटिकल केयर यूनिट बन जाने के बाद इस यूनिट में गंभीर मरीजों को उपचार मिलेगा। वर्तमान में कई गंभीर मरीजों का भोपाल, नागपुर रैफर किया जाता है। इस यूनिट के बन जाने से रेफर की संख्या में भी कमी आएगी। संसाधन अच्छे होने के कारण गंभीर मरीजों को भी उपचार मिल सकेगा। खासकर गंभीर मरीजों के लिए ही यूनिट का निर्माण किया जा रहा है। जिस गति से निर्माण कार्य चल रहा है, उससे संभावना यह जताई जा रही है कि 2025 के शुरुआत के कुछ महीनों में ही यूनिट की शुरुआत हो जाएगी।

आमला में दिव्यांगों को निःशुल्क सहायक उपकरण वितरण के लिए शिविर संपन्न

बैतूल। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग और एलिम्को के द्वारा 23 सितंबर को जनपद पंचायत आमला में दिव्यांगजनों के लिए निशुल्क सहायक उपकरण वितरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे एवं जनपद पंचायत आमला अध्यक्ष गणेश यादव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, संजीत श्रीवास्तव, सुश्री रोशनी वर्मा, उप संचालक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग बैतूल ब्लाक के प्रभारी अधिकारी उमेश मासोदकर, एलिम्को जबलपुर के प्रभारी, डॉ.कमल नयन, विवके गुप्ता उपस्थित थे।

विधायक डॉ.पंडाग्रे ने सभी लाभार्थी दिव्यांगजनों को उपकरण देते हुए उनका पुष्पहार से स्वागत किया। इस दौरान विधायक ने मोटराइज्ड ट्राई साइकिल के लाभार्थी दिव्यांगजनों को हेलमेट भी पहनाया। इसके अलावा उन्होंने लाभार्थी दिव्यांगजनों से मोटराइज ट्राई साइकिल को समय-समय पर आवश्यकता अनुसार बैटरी चार्ज कर सावधानीपूर्वक चलने की समझाइश दी। जनपद पंचायत क्षेत्र में कुल 5 मोटराईज ट्राईसाईकिल, सामान्य ट्राईसाईकिल 17, कान की मशीन-13, सुगम्य केन-01 (लाभार्थी आशाराम रहड़वे), अस्थिबाधित- 12 वालकिन स्ट्रीक एवं 7 बैसाखी का वितरण किया गया। इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय सांकेतिक भाषा दिवस भी मनाया गया।

गंज एवं पटेल वार्ड सदर के प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्र में मिलेगी सस्ती दवाइयां

बैतूल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उइके ने बताया कि गंज मस्जिद परिसर एवं पटेल वार्ड सदर में प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र से सस्ते दामों में दवाइयां मिलेगी। उन्होंने बताया कि मरीजों को सस्ती दरों पर दवाइयां उपलब्ध कराये जाने हेतु प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्र जिला चिकित्सालय बैतूल परिसर में प्रारंभ किया गया है। इसके अतिरिक्त बैतूल में मस्जिद काम्पलेक्स यूनियन बैंक के सामने गंज बैतूल एवं अड़लक मेडिकल के पीछे पटेल वार्ड सदर बैतूल में भी प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्र खुले हुये है, जिनमें भी जेनरिक दवाइयां 50 से 90 प्रतिशत तक कम दामों पर उपलब्ध होगी।

बरसते पानी में कर्मचारियों का आक्रोश

मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ ने 25 मांगों के समर्थन में दिया ज्ञापन, आंदोलन की चेतावनी

बैतूल। मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश व्यापी आह्वान पर 24 सितंबर 2024 को जिले के अधिकारी और कर्मचारी जिला मुख्यालय पर एकत्रित हुए। कर्मचारियों के हितों को लेकर 25 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन जिला अध्यक्ष सचिन राय के नेतृत्व में सौंपा गया। बरसते पानी के बीच यह ज्ञापन कर्मचारियों ने अपनी न्यायोचित मांगों के समर्थन में सौंपा, जिसमें प्रमुख मांगें वेतन में सुधार, प्रमोशन प्रक्रिया में तेजी और अन्य लाभों को लेकर थीं।

ज्ञापन देने वालों में प्रमुख रूप से राजेंद्र कटारे, संजय व्यास, हीरासिंह कुमरे, नितेश राठौर, प्रवीण नरवरे, अतुल आर्य, रवि सरनेकर, नीरज गलफट, भारतीय मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष पंजाब गायकवाड, अनिल गोस्वामी, प्रकाश देवड़े, संदीप राठौर, मुकेश सरयाम, सुरेंद्र आर्य, सुरेंद्र यादव, शंकर कहार, अरविंद तायवाड़े, बाली सरोने, ज्ञानेंद्र शुक्ला, प्रवीण शर्मा, राजेंद्र मालवीय, सीरीज वर्मा, प्रीतम मरकाम, रीना इवने, राजेंद्र साहू, सनीलू पुष्पा, जयसवाल उर्मिला, मनी गिरी मैडम, तेजीलाल सुखचंद, प्रकाश देवल धुर्वे, भोजराज गुजरे, राजू आठनेरे, राजू मालवी, कैलाश चौहान शामिल थे।

जिला अध्यक्ष राज्य कर्मचारी संघ बैतूल, सचिन राय ने कहा कि यदि कर्मचारियों की न्यायसंगत मांगों पर शासन द्वारा कोई सकारात्मक कार्रवाई नहीं की जाती है, तो प्रदेश स्तर पर प्राप्त निर्देशों के अनुसार उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। ज्ञापन में यह भी कहा गया कि कर्मचारियों की मांगों को लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है, और इस बार कर्मचारी अपने अधिकारों की लड़ाई में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इस प्रदर्शन में शामिल अन्य कर्मचारियों ने भी अपने विचार प्रकट किए और मांग की कि कर्मचारियों के वेतन, प्रमोशन और सेवा शर्तों में सुधार के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर त्वरित निर्णय लिया जाए। यह प्रदर्शन मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ की प्रदेश इकाई के आह्वान पर आयोजित किया गया था, जिसमें बड़ी संख्या में कर्मचारी एकत्रित हुए और अपनी मांगों के समर्थन में आवाज बुलंद की।

राहुल गांधी की पार्टी और परिवार आरक्षण विरोधी : डॉ. पंडाग्रे

पत्रकार वार्ता में आमला विधायक ने कांग्रेस को बताया अंबेडकर विरोधी

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे ने पिछले दिनों राहुल गांधी के आरक्षण पर दिए गए बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि आरक्षण हटा देने की धुन गांधी परिवार और कांग्रेस वाले जवाहरलाल नेहरू के समय से दोहरा रहे है। विदेश में जाकर अपने देश की बुराई करना इनका स्वभाव रहा है। नेहरू सरकार का उदाहरण देते हुए बताया कि 1956 में काका कालेलकर की रिपोर्ट खारिज कर दी गई जो पिछड़ा वर्ग की वकालत करती थी। 1661 में नेहरू ने आरक्षण से अक्षमता को बढ़ावा माना था। वहीं भारत रत्न डॉ.भीमराव अंबेडकर को लोकसभा उपचुनाव में हराने का काम भी नेहरू ने ही किया था। इंदिरा गांधी ने भी आपातकाल लगाकर मंडल आयोग की बात को दरकिनार किया। डॉ. पंडाग्रे ने पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि 1966 से 1977 तक संविधान

मे 25 बार संशोधन हुआ जबकि 2014 के बाद केवल 8 बार संशोधन हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछडा वर्ग के हितों को ध्यान में रखकर कार्य कर रहे है। वहीं कांग्रेस के राजीव गांधी ने 1990 की लोकसभा में आरक्षण का विरोध कर धर्म के आधार पर आरक्षण की वकालत की जो बाबा साहेब के संविधान के खिलाफ था। लोकसभा चुनावों में राहुल गांधी जिस संविधान की किताब को चुनाव प्रचार में इस्तेमाल कर रहे थे उसी संविधान के खिलाफ कांग्रेस का लंबा इतिहास है। आज मोदी जी के नेतृत्व में बाबा साहेब के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण स्थानों के पंचतीर्थ के रूप में शामिल किया गया है। कांग्रेस संविधान को राजनीति के रूप में इस्तेमाल करती है जबकि भाजपा के लिए यह श्रृद्धा और आस्था का केंद्र रहा है। विदेश में देश की छवि खराब किए जाने वाले राहुल गांधी के बयान की भत्सना हम करते है। इस दौरान जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, जनपद पंचायत बैतूल अध्यक्ष ईमलाबाई जावलकर, नपाध्यक्ष बैतूल पार्वती बारस्कर, जिला मीडिया प्रभारी सूर्यदीप त्रिवेदी विशेष रूप से मौजूद रहे।

मां नर्मदा नदी के तट रेवा बनखेड़ी में सफाई अभियान

सुबह सवेरे सोहागपुर

मप्र जन अभियान परिषद के तत्वावधान में सोहागपुर के समीपवर्ती ग्राम रेवा बनखेड़ी में मां नर्मदा नदी के तट सफाई अभियान चलाया गया। विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले ने बताया कि गणेशोत्सव के उपरांत गणेश विसर्जन के बाद

मूर्तियों के अवशेष या वहां पढ़े हुए थे। उल्लेखनीय है कि रेवा बनखेड़ी नर्मदा नदी तट पर ही सोहागपुर एवं आस-पास के नागरिक प्रतिमाओं को विसर्जित करते हैं। विर्सजित मलवे ग्राम सचिव साहब पटैल,सभी मेंटर सचिन, श्याम मीना, गजेन्द्र ठाकुर, मंजू पवार, नवांकुर संस्था से नरेन्द्र सिंह, संदेश मिश्रा, कमलसिंह, छात्रा शिवानी,वर्षा,मेघा, छात्र सौरभ ,सुजल, सतीश, दीपक,श्रवण आदि उपस्थित होकर श्रमदान किया। इस श्रमदान से करीबन 2 ट्रेक्टर मलवा एकत्रित करके एक गड्ढे में डाला गया। एवं वहां की साफ सफाई की गई। इसी क्रम में छात्र छात्राओं ने 5,5 पोंधे मंदिर परिसर में लगाएं। इसी संदर्भ में एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

दुष्कर्म का इनामी अपराधी बैतूल से सोहागपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया

सुबह सवेरे सोहागपुर

सोहागपुर पुलिस ने दुष्कर्म,अपहरण के इनामी अपराधी को बैतूल से गिरफ्तार किया है। घटना का मुख्य आरोपी 11मई 24 से फरार चल रहा था। पुलिस अधीक्षक ने इस आरोपी शंकर पटैल पर तीन हजार रुपए का इनाम घोषित किया था। नगर निरीक्षक कंचनसिंह ने बताया कि अपराध क्रमांक 269/24 धारा 363,366 ए 376, 506 आईपीसी 16,17 ,3,4 पाक्सो एक्ट इजाफा धारा 3(1), डब्ल्यू (आई)3(2)(वी)3(2) वीए एससी एसटी एक्ट के फरार आरोपी शंकर पटेल पिता प्रकाश पटेल उम्र 23 वर्ष निवासी ग्राम रेवामुहारी को बैतूल से गिरफ्तार किया गया। उल्लेखनीय है कि उक्त अपराध में पूर्व में 06 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। आरोपी शंकर पटेल को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया। जेल वारंट बनने के उपरांत आरोपी को जेल में दाखिल किया गया।

मुख्य भूमिका- इस फरार आरोपी को सफलतापूर्वक पकड़ने में एसडीओ पुलिस संजू चौहान, नगर निरीक्षक कंचनसिंह, उप निरीक्षक आकाशदीप पचाया, प्रधान आरक्षक प्रकाश सिंह चौहान, आरक्षक मनीष कपाले, आरक्षक गुरु प्रसाद आदि की मुख्य भूमिका रही।

पटैल को दी जान से मारने की धमकी

सोहागपुर। समीपवर्ती ग्राम नगतरा निवासी लक्ष्मीनारायण पटैल उर्फ लाखन पटैल को उसी ग्राम के नीलेश ने डंडे से मारपीट करके गंदे गंदे अपशब्द कहे। अपशब्दों से लक्ष्मीनारायण पटैल को बहुत आघात पहुंचा है। मारपीट से लक्ष्मीनारायण को हाथ में चोट लग गई। वहीं आरोपी ने फरियादी को जान से मारने की धमकी दी। सोहागपुर पुलिस ने मामला पंजीबद्ध कर लिया है।

म.प्र. की अर्थव्यवस्था को प्रतियोगी बनाने एशियाई विकास बैंक देगा पूरा सहयोग : एडीबी कंट्री डायरेक्टर सुश्री मियो ओका

एडीबी पिछले ढाई दशकों में प्रदेश के शानदार प्रदर्शन को देखते नये क्षेत्रों में साझेदारी को बढ़ायेगा आगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था को प्रभावी और प्रतियोगी बनाने के लिये एशियाई विकास बैंक (एडीबी) पूरा सहयोग करेगा। इंडिया रेसीडेंट मिशन का नेतृत्व कर रही एडीबी की कंट्री डायरेक्टर सुश्री मियो ओका ने कहा कि पिछले ढाई दशकों में मध्यप्रदेश के शानदार प्रदर्शन और बढ़ती अर्थव्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए विकास के नये क्षेत्रों में प्रदेश के साथ भागीदारी को और आगे ले जायेंगे। सुश्री ओका एशियाई विकास बैंक और मध्यप्रदेश विकास के क्षेत्र में परस्पर सहयोग की 25 साल की साझेदारी की वर्षगांठ पर भोपाल में आयोजित कार्यशाला को संबोधित कर रही थी। उल्लेखनीय है कि एडीबी के वित्तीय सहयोग से विकास परियोजनाओं को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करते हुए मध्यप्रदेश और एशियाई विकास बैंक की 25 सालों की सहभागिता पूरी हुई है। इस अवसर पर पिछले 25 वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में एडीबी के निवेश पर केन्द्रित पुस्तिका भी लॉन्च की गई।

एडीबी और मध्यप्रदेश ने विकास के लिये परस्पर सहयोग को रेखांकित करने और भविष्य की रणनीति तय करने एक दिवसीय कार्यशाला में एडीबी और राज्य सरकार की विभिन्न परियोजनाओं के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। एडीबी की सुश्री ओका ने कहा कि मध्यप्रदेश ने एडीबी के वित्तीय सहयोग का विकास परियोजनाओं को क्रियान्वयन में लोकहित के लिये सकारात्मक उपयोग किया। भविष्य में इस सहयोग को जारी रखा जायेगा। सहयोग के नये क्षेत्र सामने आये हैं। एग्री-बिजनेस, स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता सुधार, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, मानव संसाधन को कौशल सम्पन्न बनाने और सामाजिक अधो-संरचना एवं प्रबंधन को मजबूत करने जैसे नये क्षेत्रों में सहयोग की आवश्यकता होगी।

मां ज्यादा मत रोना, तबीयत खराब हो जाएगी

पत्नी की प्रताड़ना से परेशान होकर किया सुसाइड; लिखा- मेरी बच्ची को मुझसे दूर किया

जबलपुर (नप्र)। सब कुछ छीन लिया है, पूजा मौर्य के घर वालों ने, मेरा प्यारा सा बच्चा भी छीन लिया है, मेरे से तुम लोग कभी खुश नहीं रह पाओगे। मैं जा रहा हूं,अपनी मर्जी से और अपनी खुशी से। खुश रहना... पूजा के घर वालों अपनी लड़की को विधवा बनाने का सपना पूरा हो गया। ये उस सुसाइड नोट के कुछ अंश हैं जो जबलपुर के बहना मोहल्ले में रहने वाले आनंद पटेल ने आत्महत्या करने से पहले लिखा।

कॉलेज के समय के दोस्त हैं आनंद-पूजा- दरअसल, आनंद अपनी पत्नी और ससुराल वालों से परेशान चल रहा था। रामपुर मांडवा बस्ती में रहने वाली पूजा मौर्य और आनंद पटेल स्कूल समय के दोस्त थे। कॉलेज में आने के बाद दोनों का अफेयर हुआ।

2017 में आनंद की शादी के लिए उसकी मां लड़की देख रही थी। जब पूजा को इसकी जानकारी लगी तो उसने आनंद के घर में आकर जमकर हंगामा किया और फिर रामपुर पुलिस चौकी और गोरखपुर थाने में जाकर आनंद, उसकी मां, छोटे भाई और दो बहनों के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई।

शादी के बाद ही अलग रहने की जिद करने लगी पूजा- आनंद ने पुलिस को लिखकर दिया कि पहले वह अपनी बहन की शादी करेगा, उसके बाद पूजा से शादी करेगा। तब जाकर विवाद शांत हुआ। 2020 में आनंद ने अपनी बड़ी बहन की शादी की और 2021 में पूजा के साथ शादी कर ली। शादी के दो माह बाद ही पूजा सास और देवर से अलग रहने की जिद करने लगी, जिसके बाद आनंद की मां ने नीचे वाला घर आनंद और उसकी पत्नी को दे दी, ऊपर अपने छोटे बेटे हर्षित और बहू के साथ रहने लगी। आनंद जिला अस्पताल की एक डॉक्टर की कार चलाया करता था, इसके साथ ही खाली समय में आयुष्मान कार्ड सेंटर में काम किया करता था। पूजा एक अस्पताल में प्राइवेट जॉब करती है। कुछ माह पहले आनंद का काम छूट गया, जिसके चलते वह घर पर ही रहने लगा। पति का काम छूट जाने के बाद पूजा ने उसे बेइज्जत करना शुरू कर दिया था।

मां अपना ख्याल रखना, ज्यादा मत रोना वर्ना तबीयत खराब हो जाएगी- आनंद ने छोड़े गए नोट में लिखा है... मैं बहुत ज्यादा परेशान हो चुका हूं, अपनी जिंदगी से हर जगह से समस्या खड़ी हो जाती है, मैं सोचता हूं कि मेरे परिवार वाले हमसे खुश रहें, हमेशा साथ में रहे पर ऐसा होता नहीं है। सबको अपने हिसाब से चलना है। पूजा उर्फ आरती जो मेरी पत्नी है, वह बोलती है तुमने और तुम्हारे घर वालों ने मेरे लिए क्या किया है। मैं अपनी कमाई से घर चलाती हूं और अपने बच्चे को पूरा करती हूं, तुमने और तुम्हारे घर वालों ने क्या किया है, मेरे लिए। जब देखो इस बात का ताना मारती है, मुझसे बोलती है कि बच्चे को तुमने पैदा नहीं किया है मैंने पैदा किया है, तुम्हारा इसमें अधिकार नहीं है। बच्चे पर सिर्फ मेरे परिवार का अधिकार है। जब देखो मुझसे ऊटपटांग बात करती है।

सब कुछ छीन लिया है, पूजा मौर्य के घर वालों ने, मेरा प्यारा सा बच्चा भी छीन लिया है, मेरे से तुम लोग कभी खुश नहीं रह पाओगे। मैं जा रहा हूं,अपनी मर्जी से और अपनी खुशी से। खुश रहना... पूजा के घर वालों अपनी लड़की को विधवा बनाने का सपना पूरा हो गया। अब कुछ भी नहीं बचा मेरी जिंदगी में मेरे पास ना ही मेरी पत्नी है और ना ही मेरा बच्चा ना मेरा परिवार...मैं बहुत ज्यादा परेशान हो चुका हूं। हार गया हूं, अब मुझे नहीं जीना है। मेरे मरने से बहुत से लोगों की समस्या का निवारण होता है, तो मुझे मर जाना ही चाहिए जिसे सब लोग खुश हो जाएंगे। मैं अपनी मर्जी से मर रहा हूं इसमें किसी भी व्यक्ति का हाथ नहीं है, मेरे मर जाने के बाद मम्मी-कूकू नाम पर कुछ कर देना। इस घर पर सिर्फ मेरी बेटी का हक है, उसकी मां पूजा मौर्य उर्फ आरती का नहीं। जो भी है सिर्फ मेरी बेटी का रहेगा। मैं जा रहा हूं, मां अपना ख्याल रखना और अच्छे से रहना, और मां ज्यादा मत रोना वर्ना तबीयत खराब हो जाएगी...

विवाद के बाद लगाई फांसी- शुक्रवार की रात को पूजा और आनंद का जमकर विवाद हुआ। जानकारी लगते ही पूजा की बड़ी बहन और भाई भी उसके घर पहुंच गए, जहां पर कि बीच-बचाव किया गया। शनिवार की सुबह फिर से लड़ाई हुई, जिसके बाद पड़ोसियों ने हंगामे को शांत करवाया।

बेटी को छू भी नहीं सकता था आनंद

मृतक आनंद के छोटे भाई हर्षित पटेल ने बताया कि भाभी इस कदर परेशान करती थी, कि वह अपनी बेटी को भी उससे बिना पूछे छू नहीं सकता था। काम छूट जाने के बाद भाभी भैया को बहुत ज्यादा प्रताड़ित करती थी। हर्षित का कहना था कि भैया-भाभी के बीच प्रॉपर्टी को लेकर विवाद होता था। भाभी चाहती थी कि मकान मेरे उनके नाम किया जाए। हर्षित ने बताया कि जरा सा विवाद होता था तो भाभी के मायके वाले घर आकर हंगामा करते थे।

श्मशान घाट पर भी हंगामा

आनंद की मौत के बाद सोमवार को जब अंतिम संस्कार के लिए ग्वारीघाट मुक्तिधाम ले गए तब भी वहां पर पूजा मौर्य उर्फ आरती ने जमकर हंगामा किया। आनंद के भाई हर्षित के मुताबिक तीन घंटे तक भाभी भैया की बॉडी के पास बैठी रही, परिवार और रिश्तेदार सभी उसे मनाते रहें पर वह नहीं हटी। हर्षित ने बताया कि हिंदू धर्म में छोटा भाई बड़े भाई को मुखाग्नि देता है, पर वह जिद पर अड़ी रही कि वह क्रिया-कर्म करेगी। तीन घंटे तक चले हंगामे के बीच ग्वारीघाट थाना पुलिस मौके पर पहुंची, तब जाकर विवाद शांत हुआ।

पुलिस ने शुरू की जांच

गोरखपुर थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। सीएसपी एचआर पांडे का कहना है कि आनंद की मौत की जांच की जा रही है। उसके पास सुसाइड नोट मिला है, जिसमें पत्नी के द्वारा काम न करने पर टॉर्चर करने की बात लिखी गई है। सुसाइड नोट में यह भी लिखा है कि उसके नाम जो भी प्रॉपर्टी है वो सिर्फ उसकी बेटू कूकू को होगी, ना कि उसकी पत्नी पूजा की। सभी के बयान दर्ज किए जा रहे हैं। प्रथमद्रष्टया पत्नी पूजा उर्फ आरती मौर्य से प्रताड़ित होकर आत्महत्या करने की बात सामने आई है, जांच की जा रही है।

शक्ति केंद्र और बूथ केंद्र के पदाधिकारी होंगे एडजस्ट

ढाई हजार जल उपभोक्ता संथाओं के चुनाव की तैयारी तेज

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में बीजेपी के शक्ति केंद्र और बूथों के पदाधिकारियों को अगले दो माह में जल उपभोक्ता संथाओं में एडजस्ट किया जाएगा। ये कार्यकर्ता जल संसाधन विभाग की करीब ढाई हजार जल उपभोक्ता संथाओं में एडजस्ट होंगे। जल संसाधन विभाग ने इन संथाओं के चुनाव के लिए तैयारी शुरू कर दी है और इसके लिए सभी जिलों के कार्यपालन यंत्रियों से जानकारी मांगी जा रही है। जल संसाधन विभाग द्वारा प्रदेश में विधानसभा चुनाव के पहले से पेंडिंग जल उपभोक्ता संथाओं के अध्यक्ष व सदस्यों के निर्वाचन की तैयारी शुरू कर दी है। इन संथाओं के लिए मतदाता सूची तैयार कराने का काम फरवरी 2024 में किया है। इसके बाद विभाग ने कार्यपालन यंत्रियों और मुख्य अभियंताओं के माध्यम से जिलों में बनने वाली जल उपभोक्ता संथा और कार्यक्षेत्र बदलने वाली उपभोक्ता संथाओं के प्रस्ताव मांगे हैं। अभी यह प्रस्ताव सरकार तक नहीं पहुंचे हैं। इसलिए जल

संसाधन विभाग ने अक्टूबर तक नई जल उपभोक्ता संथा गठन की प्रक्रिया फाइनल करना तय किया है।

2400 संथाएं पहले से, 68 के प्रस्ताव एक बार आ चुके- जल संसाधन विभाग के अफसरों के अनुसार प्रदेश में 2400 जल संथाएं पहले से काम कर रही हैं। नई संथाओं के गठन को लेकर बुलाए गए प्रस्तावों के दौरान पिछले साल 68 नई संथा के प्रस्ताव शासन फरवरी 2023 तक मिले थे। इसके साथ ही 25 संथाओं के कार्यक्षेत्र में बदलाव के प्रस्ताव भी आए थे जिसका नोटिफिकेशन 17 मार्च 2023 को हो गया था लेकिन तब नवंबर में होने वाले विधानसभा चुनावों के मद्देनजर सरकार ने जल उपभोक्ता संथा के चुनाव टाल दिए थे। इन संथाओं के माध्यम से जल स्त्रोतों से नहरों के जरिये खेतों तक पहुंचाए जाने वाली पानी की निगरानी, जल कर वसूली और अन्य व्यवस्थाओं का काम किया जाता है।

इधर एक साल से फिर मांग रहे प्रस्ताव, जवाब नहीं- इधर जल उपभोक्ता संथाओं के चुनाव को लेकर विभाग के मैदानी इंजीनियरों की लापरवाही भी सामने आई है। 2023 में चुनाव टलने के बाद जल संसाधन विभाग के अफसरों ने पिछले एक साल में छह से अधिक बार पत्र लिखकर मुख्य अभियंताओं और जल संसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्रियों से प्रस्ताव मांगने का सिलसिला जारी रखा है कि अगर कोई नई संथा बनाई जानी है तो उसकी जानकारी दें ताकि उसे निर्वाचन में शामिल किया जा सके लेकिन कोई जानकारी नहीं दी जा रही है।

बीजेपी विधायक ऊषा बोलीं-

बेटियों के रेपिस्ट का अंतिम संस्कार ना हो

भोपाल (नप्र)। मप्र में लगातार बच्चियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं सामने आ रही हैं। नाबालिग बेटियों के साथ लगातार बढ़ती रेप की घटनाओं को लेकर पूर्व मंत्री और बीजेपी विधायक ऊषा ठाकुर कहा-मेरी प्रार्थना है कि ऐसी छोटी बेटियों के रेपिस्टों को सार्वजनिक चौराहा पर फांसी पर लटकाया जाए और उनका अंतिम संस्कार भी नहीं किया जाए। चील-कौवे उन्हें नोच- नोच कर खाएं। जब ऐसी सजा पाते हुए दूसरे लोग देखेंगें तो छोटी बेटियों की तरफ यह हाथ बढ़ाने की हिम्मत भी नहीं कर पाएंगे।

रेप की घटनाओं से मनुष्यता तार-तार हो रही- भोपाल में अपने आवास पर मीडिया से चर्चा में विधायक उषा ठाकुर ने कहा जो छोटी बच्चियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं बढ़ गई है। इसको समाज का नैतिक उत्थान ही रोक सकता है। जब तक संस्कार का दृढ़ीकरण नहीं होगा, व्यक्ति में नैतिकता और सात्विकता नहीं होगी। तब तक इन बुराइयों से वह बच नहीं सकता। और कहीं ना कहीं समझ में भौतिकता के आधिक्य के कारण जो अध्यात्म की साधना की कमी आई है उसी की वजह से लोगों में यह दुष्वृत्तियां और दुश्चिचार बहुत प्रबल होकर सामने दिखाई दे रहे हैं। इससे सामाजिक ताना-बाना मनुष्यता सब तार - तार हो रही है।

जहाँ अधिक डेंगू मरीज मिले हैं शहर की उन बस्तियों में संयुक्त टीम के साथ पहुँचे प्रभारी कलेक्टर विवेक कुमार

डेंगू रोकथाम की मुहिम को और तेज करने के दिए निर्देश

ग्वालियर (निप्र)। शहर की जिन बस्तियों में डेंगू के अधिक मरीज सामने आए हैं, उन बस्तियों में मलेरिया, स्वास्थ्य एवं नगर निगम की संयुक्त टीम के साथ प्रभारी कलेक्टर एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार पहुँचे। उन्होंने शहर के वार्ड-18 के अंतर्गत दीनदयालनगर व वार्ड-19 की विभिन्न बस्तियों तथा अशोक कॉलोनी का जायजा लिया। साथ ही संयुक्त टीम को निर्देश दिए कि डेंगू, मलेरिया एवं मच्छरजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए चलाई जा रही मुहिम को और तेज करें। प्रभारी कलेक्टर श्री विवेक कुमार ने कहा कि जिन बस्तियों में डेंगू के अधिक प्रकरण पाए गए हैं, उनमें घर-घर सर्वे का लार्वा नष्ट कराएँ। साथ ही जिन घरों में लार्वा पाया जाए उनसे जुर्माना भी वसूलें। साथ ही इन बस्तियों में भरे हुए पानी की निकासी की व्यवस्था कराएँ और जहाँ पानी की निकासी संभव नहीं हैं उसमें गम्बूशिया मछली सहित लार्वा नष्ट करने में कारगर अन्य दवाएँ डलवाई जाएँ। लार्वा नष्ट करने और मच्छरों से बचाव के संबंध में जनजागरण कार्यक्रम चलाने के निर्देश भी उन्होंने दिए। जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. विनोद कुमार दोनेरिया ने बताया कि जिले में सितम्बर माह तक इस साल डेंगू के 545 मरीज सामने आ चुके हैं, इनमें से 470 मरीज ग्वालियर नगर निगम की विभिन्न बस्तियों में चिन्हित हुए हैं, जिनें वार्ड-18 के अंतर्गत दीनदयालनगर में सबसे अधिक 57 डेंगू मरीज मिले हैं। इसके अलावा वार्ड-20 में 37, वार्ड-26 में 57, वार्ड-24 व 28 में 10 - 10 व वार्ड-29 में डेंगू के 11 मरीज चिन्हित हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्र में बरई विकासखंड में 23, डबरा में 20, हस्तिनापुर में 11 व भितरवार में 14 मरीज पाए गए हैं। भ्रमण के दौरान अपर आयुक्त नगर निगम श्री मुनीष सिकरवार व जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. विनोद कुमार दोनेरिया सहित अन्य संबंधित अधिकारी उनके साथ थे।

गौवंश के अवैध परिवहन के मामले में तीन ट्रक एवं एक मिनी ट्रक को किया गया राजसात

गुना (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट डॉ. सतेन्द्र सिंह द्वारा गौवंश के अवैध परिवहन के अलग-अलग प्रकरणों में 03 ट्रक एवं 01 मिनी ट्रक को शासन पक्ष में राजसात करने के आदेश जारी किये गये हैं। पुलिस अधीक्षक द्वारा प्राप्त प्रतिवेदन अनुसार वाहन ट्रक क्रमांक आरजे 14 जीजे 5224 में अवैध रूप से 21 नग गौवंश, वाहन ट्रक क्रमांक एमएच 48 टी 9814 में अवैध रूप से 17 नग गौवंश, वाहन अशोक लीलेण्ड ट्रक क्रमांक डीडी 01 जे 9593 में अवैध रूप से 26 नग गौवंश तथा वाहन मिनी ट्रक क्रमांक एचआर 38 व्ही 8295 में अवैध रूप से 22 नग गौवंश को अवैध रूप से परिवहन करते हुए पाया गया। प्रकरण में वाहन मालिक सोहेब खान पुत्र चांद खान आयु 28 वर्ष निवासी ग्राम मेजमपुर बालसमद तहसील कसराबद जिला खरगौन (म.प्र.), जमशेद पुत्र दीनू निवासी 25-खो नागोरियां जगतपुरा जयपुर (राजस्थान), करन पुत्र अंतरसिंह भिलाला निवासी सिंदबाड़ी थाना झिरनया जिला खरगौन (म.प्र.) तथा रहीस पुत्र जमील निवासी-1021 करीमुल्लवांस कोसीकलां-281403 जिला मथुरा (उ.प्र.) के विरूद्ध कारण बताओ सूचना पत्र जारी किये गये। प्रकरण में अनावेदक सूचना उपरांत उपस्थित नही हुए, साथ ही अनावेदक/वाहन मालिकों द्वारा अपने बचाव में साक्ष्य स्वरूप कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत नही किये।

भारत के भविष्य की स्वच्छता की पाठशाला

अशोक नगर (निप्र)। कलेक्टर श्री सुभाष कुमार द्विवेदी मार्गदर्शन में विगत 17 सितम्बर 2024 से सतत चल रहे स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के तहत मध्यप्रदेश जल निगम मर्यादित पी आई यू गुना के तहत संचालित राजघाट बांध समूह जल प्रदाय योजना जनपद पंचायत ईसागढ़ की क्रियान्वयन सहायक संस्था कम्युनिटी एक्शन थ्रू मोटीवेशन प्रोग्राम कैम्प द्वारा 139 ग्रामों में स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता की थीम को जन जन तक पहुंचाने हेतु जारी अभियान के तहत आज ग्राम अंघौरा दीवान, भैरोगढ़, चंदन बेहटा, सेमरखेड़ी, रुहाना, भौंरा ग्रामों में स्कूल मे अध्यनरत भारत के भविष्य नौनिहालों के साथ उपस्थित जनसमुदाय के साथ स्वच्छता संगोष्ठी, सामुदायिक रैली व जल, स्वच्छता एवं पर्यावरण प्रबंधन की शपथ दिलाकर लोगों को प्रेरित व जागरूक किया ।

स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के तहत हुआ सार्थक संवाद

सरपंच व सचिव बोले सूखा- गीला कचरा अलग-अलग करने के लिए ग्रामीणों को करेंगे जागरूक

ग्वालियर (निप्र)। जनपद पंचायत मुरार के सभागार में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत एक सार्थक संवाद कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता जनपद पंचायत मुरार के अध्यक्ष श्री दिलराज किरार ने की। इस अवसर पर विभिन्न ग्राम पंचायतों के सरपंचों, सचिवों और ग्राम रोजगार सहायकों ने अपने-अपने क्षेत्र में सूखा और गीला कचरा अलग-अलग करने और कचरे के बेहतर प्रबंधन के लिए जन जागरण अभियान चलाने की बात कही। सभी उपस्थित सदस्यों ने मिलकर स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने और ग्राम पंचायतों में स्वच्छता को बढ़ावा देने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में जनपद पंचायत मुरार के सदस्य, मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। सभी ने मिलकर स्वच्छता के महत्व और इसके सकारात्मक प्रभावों पर चर्चा की। इस संवाद कार्यक्रम का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करना और सामुदायिक प्रयासों को प्रोत्साहित करना था।

स्वभाव में स्वच्छता-संस्कर में स्वच्छता के बारे में सहारन के सहरिया परिवारों को किया जागरूक

भितरवार जनपद पंचायत क्षेत्र के गाँवों में स्वच्छता पखवाड़ा के तहत विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ के आयोजन में जन अभियान परिषद का भी सहयोग मिल रहा है। जन अभियान परिषद की नवांकुर संस्थाओं, ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों तथा मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के छात्रों व परामर्शदाताओं द्वारा गाँव गाँव में स्वभाव में स्वच्छता, संस्कार में स्वच्छता का संदेश दिया जा रहा है। इस कड़ी में सोमवार को विकास खण्ड भितरवार की ग्राम पंचायत सहारन की आदिवासी कॉलोनी पर महिलाओं को स्वभाव में स्वच्छता व संस्कार में स्वच्छता के बारे में जागरूक किया गया।

शासकीय महाविद्यालय जौरा में झाड़ू लगाकर स्वच्छता का दिया संदेश

मुरैना (निप्र)। शासकीय महाविद्यालय जौरा में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत जौरा श्री कुलदीप श्रीवास्तव के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद् जौरा के ब्लॉक समन्वयक श्री बीडी शर्मा के मार्गदर्शन में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें परामर्शदाता शिवानी शर्मा ने स्वच्छता की शपथ दिलाई। श्री बीडी शर्मा ने कहा कि हम सबको अपने क्षेत्र में स्वच्छता का संदेश जन-जन तक पहुंचना है। हम जहां पर निवास करते हैं, उस गांव, शहर की

प्रत्येक गलियों में स्वच्छता का अलख जगाना है। अपने स्कूल, महाविद्यालय और सरकारी विभागों, खेल मैदानो में साफ-सफाई कर स्वच्छता का संदेश देना है। स्वच्छता को अपनाना है और बीमारियों को दूर भगाना है। शासकीय महाविद्यालय के प्रांगण में साफ-सफाई करते हुए सभी छात्र-छात्राओं एवं परामर्शदाताओं नवांकुर संस्थाओं के प्रतिनिधियों प्रस्फुटन समिति के सदस्यों ने झाड़ू लगाकर स्वच्छता का संदेश देने की पहल की। इस अवसर पर परामर्शदाता श्री विनोद शर्मा, श्री कुमार शर्मा, कुमारी शिवानी शर्मा, नवांकुर प्रतिनिधि कैलाश शर्मा, अल्केश राठौर, बीएसडब्ल्यू, एमएसडब्ल्यू के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। सभी ने अपने-अपने क्षेत्र को स्वच्छ रखने का संकल्प लिया और कहा कि स्वच्छता को अपनाना है, समाज में खुशहाली लाना है।

राइट क्लिक

दबंगई की नई परिभाषा और अंतरजातीय संघर्ष के डरावने आयाम

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

इन दिनों जाति जनगणना, आरक्षण की अधिकतम सीमा 50 फीसदी को खत्म कर इसे, बढ़ाने, एससी/वर्ग में भी क्रीमी लेयर लागू करने के सुप्रीम के हालिया फैसले के विरोध और समर्थन, 2011 की जनगणना में जाति गणना के आंकड़े तत्कालीन यूपीए 2 सरकार और बाद में मोदी सरकार द्वारा जारी करने से कन्नी काटने तथा बिहार के नवादा में दलितों द्वारा महादलितों के घरों में आग लगाने के घटनाक्रमों को आपस में जोड़ कर देखें तो पता चलेगा कि देश अब जातियों के अंतर्संघर्ष के नए और डरावने दौर में प्रवेश कर गया है। इसका अंजाम कितना भयंकर होगा, इसे राजनीतिक दल समझ कर भी अनदेखा कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें केवल सत्ता हासिल करने से मतलब है। फिर चाहे वो किसी भी कीमत पर मिले।

पहले नवादा के अग्निकांड को समझें। अमूमन बिहार और अन्य राज्यों में दलित उत्पीड़न के लिए ऊंची और दंबग पिछड़ी जातियों को ही दोषी माना जाता रहा है। क्योंकि ज्यादातर संसाधनों पर इन्हीं जातियों का कब्जा रहा है। लेकिन बिहार के नवादा जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के महादलित टोला में हाल में दिनों महादलितों की जमीनों पर कब्जा करने के लिए उनके घर फूंकने के मामले में जो नया एंगल सामने आया है, वह जातीय संघर्ष के नए दौर और दबंगई की नई परिभाषा की ओर गंभीर इशारा करता है। इस घटना के बाद हो रहे राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप को दरकिनार कर इसका का विश्लेषण करें तो इस दबंगई का मुख्य आरोपी नंदू पासवान है। जो स्वयं दलित समुदाय से है और पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस रिपोर्ट के मुताबिक में अन्य 28 लोगों पर एफआईआर दर्ज की और 15 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। दूसरा मुख्य आरोपी यादव समुदाय से है। जिन लोगों के घर फूंके गए, वह रविदास और मुसहर महादलित समुदाय से आते हैं। संक्षेप में यह दबंग दलित द्वारा महादलितों पर अत्याचार का मामला है। बीजेपी ने इस अग्निकांड को 'अंतर दलित संघर्ष' की संज्ञा दी है। जबकि बाकी दल दलित अत्याचार से जोड़कर इसे बिहार में कानून व्यवस्था ध्वस्त होना बता रहे हैं। लेकिन जो घटा है, उसका सीधा अर्थ यही है कि जिसके पास जमीन है, अब वही दबंग है, यहां वह किस जाति का है, यह गौण है। यह पारंपरिक जातिगत दबंगई से अलग है। इसमें यह संकेत भी निहित है कि जैसे-जैसे वंचित समाज के पास जमीन और अन्य संसाधन आते जाएंगे, वह अपने ही वर्ग की दूसरी वंचित जातियों पर अत्याचार करने में संकोच नहीं करेगा। यह तो अभी शुरूआत है।

दूसरा संदर्भ सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल के अपने फैसले में आरक्षित वर्ग की अनुसूचित जाति और जनजातियों में ओबीसी की तरह क्रीमी लेयर लागू करने का फैसला है। मोदी सरकार ने इस फैसले के व्यापक विरोध के चलते उसे 'सुझाव' बताकर ठंडे बस्ते में डाल दिया है। लेकिन इसे कितने दिन दबाया जा सकेगा, यह देखने की बात है। इस संदर्भ में हमे यह भी देखना होगा कि यह विरोध किस वर्ग से हो रहा है। फैसले का विरोध मुख्यतः उन दलित और आदिवासी समुदायों की तरफ से हो रहा है, जो बीते 75 सालों में आरक्षण के चलते सबसे ज्यादा फायदे में रहे हैं। आरक्षण अब उनका जन्मगत हक बन चुका है। लिहाजा सुप्रीम कोर्ट का फैसला उन्हें अपने लाभ में खलल की तरह महसूस हो रहा है। दूसरी तरफ इस फैसले के पक्ष में भी आवाज उठने लगी हैं, हालांकि यह अभी बहुत मुखर नहीं है। पंजाब में मजहबी सिखों और वाल्मीकि समुदाय सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत किया है, जबकि रविदासिया दलित इसके विरोध में है। इसका सीधा मतलब है कि आरक्षण से लाभान्वित दलितों और अपेक्षाकृत न्यूनतम लाभ पाने वाले दलित एवं लाभ से लगभग वंचित रहे महादलितों के बीच क्रीमी लेयर के विरोध और समर्थन को लेकर संघर्ष और तेज होगा।

अब जाति जनगणना, उसके आंकड़े जारी करने और तदनुसार आरक्षण की सीमा को बढ़ाने की बात। जाति जनगणना और आरक्षण की अधिकतम सीमा इन दिनों कांग्रेस व अन्य विपक्षी पार्टियों के हॉट इश्यु है। माना जा रहा है कि अगले चुनावों में भाजपा को पटखनी देने का यह रामबाण नुस्खा साबित हो सकता है। हालांकि खुद भाजपा भी अब जाति जनगणना कराने के पक्ष में दिख रही है। लेकिन असली सवाल यह है कि जाति जनगणना कराने के बाद सामाजिक न्याय का संघर्ष क्या मोड़ लेगा? क्योंकि यह महज डेटा एकत्रित कर उसे जारी करने भर का मामला नहीं है। हाल में छपी एक मीडिया रिपोर्ट चौंकाने वाली है। अगर यह सत्य है तो अत्यंत विचारणीय है। इस रिपोर्ट के मुताबिक यूपीए- 2 में तत्कालीन मनमोहन सरकार ने 2011 में जाति जनगणना कराई थी। लेकिन इसमे देश भर की जातियों के जो आंकड़े सामने आए, वो देखकर सरकार के होश उड़ गए और उसने आंकड़े जारी न करने में भी भलाई समझी। यही काम मोदी सरकार ने भी किया। वजह ये थी कि 1931 की जनगणना में पहली बार जाति जनगणना में भारत में सभी धर्मों और समुदायों की कुल 4147 दर्ज की गई थीं। यह जनगणना भारत भर में फैली जातियों का एक बहुत मोटा वर्गीकरण रहा होगा। इन्हीं आंकड़ों के आधार पर मंडल आयोग ने पिछड़ी जातियों को आरक्षण की सिफारिश की थी। लेकिन 2011 की जाति जनगणना में जातियों, उप जातियों और उप जातियों की उप-उप जातियों उनके भी अलग-अलग समूहों आदि की कुल संख्या 46.80 लाख दर्ज की गई। अकेले महाराष्ट्र की 10.3 करोड़ आबादी में 4.28 लाख जातियां पाई गईं। इनमें से भी 1.17 करोड़ लोगों ने कहा कि उनकी कोई जाति नहीं है। अब अगर मोदी सरकार अगली जनगणना में जाति गणना भी शामिल करती है तो संभव है कि देश में जातियों की कुल संख्या 46.80 लाख को भी पार कर जाए। क्योंकि भारत में जातियों का मकड़जाल उनका अति सूक्ष्म विभाजन और उसकी गहराई कल्पनातीत है। अब सवाल यह है कि यदि देश में केवल जातियों को ध्यान में रखकर 100 फीसदी आरक्षण भी लागू कर दिया जाए तो करीब 47 लाख जातियों में से किसके हिस्से में कितनी नौकरियां और शिक्षा संस्थानों में सीटें आएंगी? जो आएंगी, उसका व्यावहारिक अर्थ क्या होगा? अगर इन जातियों को समूहो में बांट कर आरक्षण दिया जाता है तो भी सभी को सामाजिक न्याय दे पाने में सैंकड़ों साल भी कम पड़ेंगे। इसके अलावा किसी को कम किसी को ज्यादा लाभ के चलते जातीय विवाद और राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता जानलेवा संघर्ष में भी बदल सकती है। जाहिर है कि जाति जनगणना और तदनुसार आरक्षण में हिस्सेदारी की मांग ऐसी आग से खेलना है, जिसका कोई अग्निशामक किसी के पास नहीं होगा। दूसरे, अगर सभी जातियों को आरक्षण देना है तो कोई न कोई फिल्टर तो लागू करना ही होगा। तीसरे, राजनीतिक स्वार्थों के चलते आरक्षण और अपनी अपनी जाति और समुदायों की संख्या के अनुपात में ही तमाम सुविधा और अवसरों की छीना झपटी देश को एक नई और अकल्पनीय अराजकता में झोंक सकती है, जिसके बारे में हमारे राजनेता सोचना भी नहीं चाहते।

5 और 9 साल की बच्चियों से रेप

हरदा में कुरकुरे दिलाने के बहाने ले गया आरोपी; मुरैना में खून से लथपथ मिली मासूम

हरदा (नप्र)। मध्यप्रदेश में मंगलवार को मासूम बच्चियों से दुष्कर्म के दो मामले सामने आए। हरदा के सिराली में 5 साल की बच्ची नदी किनारे बेहोश मिली। परिजन उसे अस्पताल ले गए। यहां बच्ची से रेप का खुलासा हुआ। आरोपी उसे कुरकुरे दिलाने का कहकर ले गया था। इधर, मुरैना के अंबाह में 9 साल की बच्ची खून से लथपथ हालत में घर पहुंची। परिजन उसे गंभीर हालत में बाइक से अस्पताल लेकर पहुंचे।

हरदा में बच्ची से रेप, अस्पताल के सामने हंगामा, हाईवे पर चक्काजाम- हरदा के छीपाबड़ में 5 साल की बच्ची से रेप के बाद नाराज लोगों ने सोमवार देर रात सिराली के सरकारी अस्पताल का घेराव कर दिया। आरोपी की गिरफ्तारी और घर पर बुलडोजर चलाने

की मांग को लेकर मंगलवार सुबह भी अस्पताल के सामने हंगामा किया। वहीं सेन समाज के लोगों ने नर्मदापुरम-खंडवा स्टेट हाईवे पर चक्काजाम कर दिया। दो घंटे से ज्यादा समय से प्रदर्शन चल रहा है। वे एसपी को बुलाने की मांग पर अड़े हुए हैं। घटना से नाराज लोगों ने देर रात अस्पताल को घेराव किया। मंगलवार को भी प्रदर्शन किया।

बच्ची नहीं दिखी तो पिता ने तलाश की- परिजनों ने बताया कि गांव का सुनील बच्ची को कुरकुरे दिलाने का कहकर अपने साथ ले गया। पिता दुकान से लौटे तो बेटी नजर नहीं आई। उन्होंने आसपास तलाश की। देर शाम बच्ची गांव में नदी किनारे बेहोश मिली। ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस बच्ची को खिरकिया अस्पताल लेकर पहुंची। यहां महिला डॉक्टर नहीं होने के चलते सिराली अस्पताल ले जाया गया। जहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

पुलिस ने आरोपी पर 10 हजार का इनाम किया घोषित- छीपाबड़ थाना टीआई मुकेश गौड़ ने बताया कि एसपी अभिनव चौकसे पूरे मामले को देख रहे हैं। आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। पुलिस की पांच टीमें आरोपी की तलाश में जुटी है। जल्द उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा। आरोपी एक महीने पहले ही जेल से छूटकर आया है। पुलिस ने आरोपी पर 10 हजार का इनाम घोषित किया है।

धीरेंद्र शास्त्री बोले-

वक्फ बोर्ड की तरह हिन्दू बोर्ड बने

बालाजी प्रसाद मामले में फिर दिया बयान; कल तुम्हारे घरों में भी पहुंचेगा मछली का तेल

खजुराहो (नप्र)। तिरुपति बालाजी के मंदिर में बांटे जाने वाले प्रसाद को बनाने में जानवरों की चर्बी और मछली के तेल का इस्तेमाल करने पर बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने फिर मंगलवार को एक बार बयान दिया है। साथ ही हिंदू बोर्ड बनाने की मांग की है। शास्त्री ने कहा कि यदि धर्म विरोधियों के खिलाफ आज आवाज नहीं उठाई गई तो आने वाले समय में आप सबके घरों में मछली का तेल परोसने से कोई नहीं रोक पाएगा। उन्होंने कहा कि जिन हिंदुओं ने तिरुपति बालाजी का प्रसाद लिया है। वह 9 दिन का प्रायश्चित करें ताकि शुद्धिकरण की प्रक्रिया हो सके।

पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने कहा कि यदि कल अपने घर में जानवरों की चर्बी और मछली का तेल पहुंचने से खुद को बचाना है, तो रील चलाने और वीडियो बनाने से बाहर आना पड़ेगा। जब हम घर से बाहर निकल कर सनातन धर्म के खिलाफ चलाए जा रहे षड्यंत्र और प्रपंच का डटकर मुकाबला नहीं करेंगे, तब तक हम धर्म विरोधियों के षड्यंत्र का शिकार होते रहेंगे। उन्होंने कहा कि आज देश धर्म विरोधियों और राष्ट्र विरोधी ताकतों से जूझ रहा है। हम सबको एकजुट होकर इसी का मुंहतोड़ जवाब देना है। उन्होंने कहा कि हिंदुओं के खिलाफ एक संयोजित षड्यंत्र चल रहा है।

धर्म विरोधी ताकत से लोगों का धर्म भ्रष्ट करने में लगी है। लेकिन ऐसी ताकतों को हम सब मिलकर कामयाब नहीं होने देंगे। जिन लोगों ने तिरुपति का प्रसाद लिया है वह नौ दिनों तक प्रायश्चित करें तो बेहतर होगा ताकि उनका भाव पवित्र हो सके।

सनातन हिंदू बोर्ड की हो स्थापना- धीरेंद्र शास्त्री बोले- हमने सुना हैं कि हमारे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री जैन बोर्ड बनाने की चर्चा कर रहे हैं तो हम भारत सरकार से निवेदन करते हैं कि जब वक्फ बोर्ड हो सकता है तो सनातन हिंदू बोर्ड क्यों नहीं हो सकता है। मंदिरों को उनके अधीन करके षड्यंत्र रचने वालों के ऊपर लगाम लगाई लगाई जाए। हम हिंदू बोर्ड की मांग करते हैं।

ट्रक ने ऑटो को रौंदा, 7 की मौत

5 लोग एक ही परिवार के, 3 घायल जबलपुर रेफर; नशे में था ट्रक ड्राइवर

दमोह (नप्र)। दमोह के देहात थाना क्षेत्र के समन्ना गांव के आगे बांदकपुर रोड पर ट्रक ने आगे जा रहे ऑटो को टक्कर मार दी। हादसे में मृतकों की संख्या 4 से बढ़कर 7 हो गई है। घटना में तीन लोग घायल हैं, जिन्हें गंभीर हालत में जबलपुर रेफर किया गया है। बताया जा रहा है कि ऑटो में कुल 10 लोग सवार थे।

दमोह कलेक्टर सुधीर कोचर, एसपी श्रुतकीर्ति सोमवंशी प्रशासनिक अमले के साथ मौके पर पहुंचे। ट्रक में फंसे ऑटो से शव और घायलों और को जेसीबी की मदद से बाहर निकाला गया। इस हादसे में ऑटो चालक आलोक गुप्ता समेत 7 लोगों की जान चली गई। मृतकों में पांच लोग एक ही परिवार के हैं।

ट्रक ड्राइवर नशे में, उसे पता ही नहीं क्या हुआ

पुलिस ने ट्रक ड्राइवर को पकड़ लिया है और उससे पूछताछ कर रही है। छतरपुर के बक्सवाहा का रहने वाला ड्राइवर नीरज सिंह लोधी (22) शराब के नशे में है। पुलिस मेडिकल जांच के लिए उसे जिला अस्पताल लेकर पहुंची है। वह इतने नशे में है कि कुछ भी बोलने की हालत में नहीं है। उसे तो ये भी होश नहीं कि क्या हुआ है।

मरने वालों में 5 लोग एक ही परिवार के

हादसे में मरने वाले 5 लोग राकेश गुप्ता के परिवार के हैं। इसमें राकेश की भी मौत हुई है। सभी लोग दमोह शहर के शोभा नगर के रहने वाले हैं और बांदकपुर दर्शन करने जा रहे थे।

सीएम ने मृतकों के परिजन को 2-2 लाख का मुआवजे की घोषणा की, जताया गहरा दुख

सीएम मोहन यादव ने दमोह में हुए हादसे पर दुख जताते हुए मुआवजे की घोषणा की है। उन्होंने मृतकों के परिवारों को 2-2 लाख रुपए और घायलों को 50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा- हादसे में लापरवाही करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

बिजली गिरने से दो की मौत, टीचर समेत 5 घायल

इंदौर-जबलपुर समेत 11 जिलों में बारिश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में विदाई से पहले मानसून फिर बरसने लगा है। सितंबर में चौथी बार स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव हो गया। लो प्रेशर एरिया की एक्टिविटी होने से मंगलवार को फिर तेज बारिश का दौर शुरू हो गया। इंदौर, जबलपुर समेत 11 जिलों में बारिश हुई।

इधर, मंडला में घुघुरी जनपद पंचायत में एक स्कूल में बिजली गिरने से दो टीचर और 5 बच्चे घायल हो गए। डिंडौरी में दो नाबालिगों आकाशीय बिजली की चपेट में आ गए। दोनों की मौत हो गई।

सिवनी में 9 घंटे के अंदर ढाई इंच पानी गिरा। वहीं, मंडला में पौने 2 इंच बारिश हो गई। उमरिया, छिंदवाड़ा, बैतूल, खंडवा में भी तेज बारिश हुई। भोपाल में हल्की बारिश हुई। धार, जबलपुर, रीवा और इंदौर में भी हल्की बारिश का दौर चलता रहा।

मौसम विभाग के अनुसार, अगले 24 घंटे के दौरान झाबुआ, धार, बड़वानी, इंदौर, खरगोन, बैतूल, पांढुर्णा, बालाघाट में तेज बारिश का अलर्ट है। ग्वालियर, मुरैना, श्योपुर, भिंड, दतिया, शिवपुरी, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, गुना, नीमच और मंदसौर में तेज धूप खिली रहेगी। वहीं, भोपाल, उज्जैन, जबलपुर समेत बाकी के जिलों में हल्की बारिश और गरज-चमक की स्थिति बनेगी।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राजभवन में सौजन्य भेंट की।

ज्वेलर को गोली मारी, 17 लाख के जेवर-कैश लूटे

ग्वालियर में पुलिस ने घेरा तो फायरिंग की, एनकाउंटर में तीन आरोपी गिरफ्तार

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में सर्राफा कारोबारी से 17 लाख की लूट हो गई। बाइक सवार तीन बदमाशों ने कारोबारी पर फायरिंग की और बैग छीनकर भाग गए। कारोबारी के पैर में गोली लगी है। घटना सोमवार रात की है। पुलिस ने आज सुबह करीब 7 बजे बदमाशों को एनकाउंटर में पकड़ लिया। एक आरोपी के घुटने में गोली लगी है।

सोमवार रात करीब 10 बजे सर्राफा कारोबारी चाहत सोनी महाराजपुरा कुशवाह मार्केट में अपनी श्री रामराजा ज्वेलर्स शॉप पर ताला लगा रहा था। पिता पुष्पेन्द्र सोनी डिवाइडर के उस पार बेटे का इंतजार कर रहे थे। चाहत के पास पिट्ठू बैग था, जिसमें 200 ग्राम सोना और एक लाख रुपए कैश था। चाहत ताला लगाकर जैसे ही निकला, बाइक पर तीन बदमाश आए। एक ने फायरिंग की। पैर में गोली लगने से भाग नहीं पाया और वहीं गिर गया। बदमाश ने बैग छीना और बाइक पर बैठकर भाग निकले। आईजी ग्वालियर अरविंद सक्सेना ने सर्राफा कारोबारी से लूट के बाद आरोपियों पर 10 हजार रुपए का इनाम घोषित कर दिया था।

पुलिस को देखते ही बदमाशों ने फायरिंग कर दी- रोड की दूसरी तरफ खड़े पिता ने बेटे के पास पहुंचने का प्रयास किया, लेकिन जब तक वह पहुंचे बदमाश भाग चुके थे। जिसके बाद पुलिस ने शहर में नाकाबंदी कर लुटेरों की तलाश शुरू कर दी। आईजी ग्वालियर अरविंद सक्सेना, डीआईजी अमित सांघी और एसपी राकेश कुमार सगर तत्काल स्पॉट पर पहुंच गए। सर्राफा कारोबारी के पड़ोस की दुकान पर लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाले। इसमें लूट की वारदात कैद हो गई थी।

पुलिस ने मंगलवार सुबह बदमाशों को खेरिया मोदी गांव के पास घेर लिया। पुलिस को देखते ही अरुण चौहान ने फायरिंग की। पुलिस ने जवाबी फायरिंग की तो अरुण के दो साथी प्रमोद तोमर और राधास्वामी जाटव भाग गए। मुठभेड़ में मुरैना का शातिर बदमाश अरुण चौहान घुटने पर गोली लगी और वह गिर पड़ा। पुलिस ने उसे दबोच लिया। प्रमोद और राधास्वामी को कुछ दूरी पर पकड़ा। इनके पास से लूटा हुआ माल बरामद कर लिया गया।

डीडी नगर की ओर से आए थे- पुलिस का कहना है कि तीनों आरोपी कई दिन से यहां रेकी कर रहे थे। बदमाशों को पता था कि सर्राफा कारोबारी रोज दुकान बंद करने के बाद सोना और कैश लेकर शताब्दीपुरम की ओर जाता है। बदमाश डीडी नगर पुलिस चौकी की ओर से आए और लूट कर शहर की तरफ भागे। जिस रूट की तरफ बदमाश भागे थे, वो मुरैना की तरफ जाता है।

आर्म्स एक्ट, लूट, डकैती और हत्या के 19 मामले दर्ज- पकड़े गए लुटेरों का पूरा रिकॉर्ड पुलिस के पास आ गया है। तीनों पर आर्म्स एक्ट, लूट, डकैती, हत्या का प्रयास व हत्या के 19 मामले दर्ज हैं। अकेले गिरोह के सरगना अरुण पर 11 मामले दर्ज हैं। प्रमोद तोमर पर तीन औ राधास्वामी पर 5 आपराधिक मामले दर्ज हैं। तीनों मुरैना के पोरसा और अंबाह थाना के हिस्ट्रीशीटर हैं।

बच्चियों से दुष्कर्म करने वालों को चौराहे पर जलाना चाहिए

छत्तीसगढ़ में प्रदीप मिश्रा बोले- बेटी को तलवार-भाला चलाना सिखाइए, उन्हें आत्म बल दीजिए

धमतरी (नप्र)। छोटी बच्चियों के साथ दुष्कर्म करने वालों को चौराहे पर लाकर जला देना चाहिए। मां-बाप अपनी बेटियों को तलवार चलाना सिखाएं। ये बात मध्यप्रदेश के कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा ने छत्तीसगढ़ के धमतरी में कही।

जिले के कुकरेल में 20 सितंबर से कथा चल रही है। अंतिम दिन उन्होंने कहा- घर की स्त्री और बेटी की रक्षा स्वयं करनी होगी। अपनी बेटी को तलवार चलाना सिखाइए, भाला, डंडा चलाना सिखाइए, कराते सिखाइए। बेटी को आत्म बल दीजिए।

दरअसल, मध्यप्रदेश में हाल ही में छोटी बच्चियों के साथ रेप की कई वारदात सामने आई हैं। इसी संदर्भ में पंडित प्रदीप मिश्रा ने ये बात कही। इसी तरह का बयान एमपी की पूर्व मंत्री उषा ठाकुर ने भी दिया है।

आने वाले समय भी फिर महाभारत जैसे हालात- पंडित प्रदीप मिश्रा ने अपनी बात की शुरुआत यह कहते हुए की, कि नीयत-नजर और नीति के खराब होने की वजह से समाज बर्बाद हो रहा है। स्त्री का सम्मान नहीं हो पाया इसलिए रामायण हो गई, महाभारत हो गई। आने वाले समय में भी महाभारत और रामायण जैसे हालात बनेंगे।

कथा में उन्होंने कहा- आज छोटी-छोटी बेटियों के साथ में गलत कृत्य हो रहा है। इसका कारण है केवल गलत चीज मोबाइल पर देखी जा रही है। गलत विचार रखे जा रहे हैं। जो बेटियां अपने कंधों पर स्कूल बैग ठीक तरीके से धारण करके नहीं जा सकतीं, उनके साथ गलत हो रहा है। सीएम साय की पत्नी कौशल्या साय भी प्रदीप मिश्रा से कथा सुनने पहुंचीं।

रावण को छोड़ो, दुष्कर्मियों को जलाओ- पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा- रावण ने मां जानकी को छुआ और लंका लेकर गया। आज तक दशहरे पर पूरे भारत में रावण का पुतला जलाया जाता है। इस व्यास पीठ के माध्यम से मेरा इतना सा निवेदन है कि अब रावण को छोड़ो और जिस मोहल्ले, नगर, गांव में छोटी बेटियों के साथ गलत कृत्य हो रहा है, उनको लाकर चौराहे पर जला दिया जाए।

क्रिश्चियन की वजह से हुआ तिरुपति कांड- तिरुपति मंदिर के प्रसाद मामले पर पंडित मिश्रा ने कहा कि, तिरुपति बालाजी को धरती का बैकुंठ माना जाता है। उस मंदिर में अधिपति बनाकर एक क्रिश्चियन को बैठा दिया गया और उसने क्या किया। लड्डू जो प्रसाद मिलता है उस प्रसाद में देखा जाए तो उसमें कहीं मछली का तेल और न जाने क्या-क्या डाल दिया गया।

क्या होगा ज्यादा से ज्यादा उसे कुर्सी से उतार देगे, सजा दे देगे। आज पूरे सनातन धर्म का व्यक्ति, भारत का व्यक्ति तिरुपति दर्शन करने जाता है तो लड्डू लाता है। घर के लोगों को देता है, बच्चा-बच्चा खाता है।

भूपेश के बयान पर बोले- पहले एक लोटा जल चढ़ाकर तो देखें

बालोद में एक सभा में पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा था कि, एक लोटा जल चढ़ा दो और जीवन में कुछ काम मत करो। बच्चों को मत पढ़ाओ, खेत में काम मत करो, बस एक लोटा जल चढ़ा दो सब ठीक होगा। हम इसे आस्था नहीं कह सकते। यह आस्था नहीं, बल्कि भाजपा का फैलाया अंधविश्वास है। भूपेश के बयान पर पंडित मिश्रा ने कहा कि, पहले एक लोटा जल चढ़ा कर तो देखें। तब पता चलेगा की विश्वास है या अंधविश्वास है। जिनको सनातन धर्म नहीं सुहाता, वो अलग विषय है।

पितृ पक्ष अशुभ नहीं शुभ होता है

प्रदीप मिश्रा ने श्राद्ध या पितृ पक्ष को लेकर भी कहा कि पितृ आपका बुरा करेंगे, ये श्राद्ध का मतलब नहीं है। पितृ आपको श्राप देंगे यह श्राद्ध का मतलब नहीं है। पितृपक्ष में कह दिया जाता है कि कुछ नया काम या शुभ काम न करो। पितृपक्ष चल रहा है, ये कहकर लोगों में भय पैदा किया जाता है।